Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi ● Saturday, 23 March 2024 ● Year : 02 ● Issue : 66 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : ₹3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार
माता के समान सुख देने वाली कौन है? उत्तम विद्या। देने से क्या बढ़ती है? उत्तम विद्या।
शंकराचार्य

12
मंदिर हो या मस्जिद सब में मेरी...

SHARE

संसेक्स	:	72,831.94
निफ्टी	:	22,096.75

SARAFA

सोना	:	6,295
चांदी	:	79.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

इफ्तार (शनिवार) : 06.06
सेहरी (रविवार) : 04.36

BRIEF NEWS

हेमंत ने सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की याचिका

RANCHI : झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल को है। इस याचिका के माध्यम से उन्होंने झारखंड हाईकोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी है, जिसमें उन्हें विधानसभा सत्र में शामिल होने की अनुमति नहीं दो गई थी। अपनी याचिका में उन्होंने यह मांग की है कि आने वाले दिनों में आहूत होने वाले विधानसभा के सत्र में उन्हें शामिल होने की अनुमति दी जाये। दरअसल, हेमंत सोरेन मनी लाउंड्रिंग के आरोप में न्यायिक हिरासत में हैं। पिछले महीने हुए विधानसभा के बजट सत्र में शामिल होने के लिए उन्होंने पीएमएलए कोर्ट और हाईकोर्ट से अनुमति मांगी थी लेकिन दोनों ही अदालतों ने उन्हें सत्र में शामिल होने की अनुमति देने से इनकार करते हुए उनकी याचिका खारिज कर दी थी।

चाउमीन फैक्ट्री में लगी आग, संपति जलकर राख

RANCHI : रांची के विद्यानगर बड़ी मोहल्ले स्थित लोकेश कुमार की चाउमीन फैक्ट्री में गुरुवार की देर रात आग लग गई। लोकेश कुमार ने बताया कि देर रात लगभग दो से तीन बजे के लिए आग लगी। शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगने की आशंका है। अगलगी की जानकारी मिलने के बाद आसपास के लोगों की मदद से आग पर काबू पाने का प्रयास किया गया। मगर तबतक फैक्ट्री लगभग जल चुकी थी। भोर चार बजे के करीब दमकल की मदद से आग पर काबू पा लिया गया। अगलगी की इस घटना में लोकेश कुमार को भारी नुकसान हुआ है। लोकेश की मानें तो 10 लाख से ज्यादा की क्षति हुई है।

गिरिडीह में सीओ की टीम पर पथराव, ड्राइवर घायल

GIRIDIH : झारखंड के गिरिडीह जिले के सरिया थाना क्षेत्र के केशवारी बरसोती नदी घाट से बालू के अवैध खनन की सूचना पर सीओ संतोष कुमार के नेतृत्व में टीम शुक्रवार को छापेमारी करने पहुंची। टीम में सरिया पुलिस भी शामिल थी। इसी बीच टीम की नजर बरसोती नदी की ओर से तीन बालू लदे ट्रैक्टर पर पड़ी। जैसे ही टीम ने बालू लदे ट्रैक्टर को रोकने का प्रयास किया, अचानक काफी संख्या में ग्रामीण पहुंचे और अधिकारियों से उलझ गये। देखते-देखते केशवारी चौक के पास लगभग 100-150 लोग एकत्रित हुए और प्रशासनिक अधिकारियों के विरोध में नारेबाजी करने लगे।

सीएसके का जीत से आगाज, आरसीबी को हराया

6 विकेट से दी शिकस्त, दुबे-जडेजा की फिफ्टी पार्टनरशिप, मुस्तफिजुर ने लिया 4 विकेट

AGENCY NEW DELHI : पांच बार की चैंपियन चेन्नई सुपरकिंग्स ने आईपीएल-2024 का आगाज जीत के साथ किया है। नए कप्तान ऋतुराज गायकवाड की अगुवाई में उतरी सीएसके ने सीजन के ओपनिंग मैच में आरसीबी को 6 विकेट से हरा दिया। चेन्नई के चेपॉक स्टेडियम में टॉस जीतकर आरसीबी ने 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 173 रन बनाए। अनुज रावत ने सबसे ज्यादा 48 रन बनाए। विराट कोहली 20 बॉल पर 21 रन ही बना सके। मुस्तफिजुर रहमान ने 4 विकेट लिए। जवाब में चेन्नई ने 18.4 ओवर में 4 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। शिवम दुबे (34) और रवींद्र जडेजा (25) ने पांचवें विकेट के लिए नाबाद 66 रन जोड़े। रवींद्र जडेजा और शिवम दुबे के बीच अर्धशतकीय साझेदारी हुई। इस साझेदारी ने सीएसके को ओपनिंग मैच जिता दिया। चेन्नई को जीत दिलाने में शिवम दुबे और रवींद्र जडेजा ने अहम भूमिका निभाई। दोनों के बीच 37 गेंदों में 66 रन की नाबाद साझेदारी हुई। इंपैक्ट प्लेयर के तौर पर उतरे दुबे ने चार चौकों और एक छक्के की मदद से 34 रन बनाए। वहीं, स्टार ऑलराउंडर ने 17 गेंदों में 25 रन बनाए। इस मैच में दोनों बल्लेबाज नाबाद रहे। आरसीबी के लिए कैमरन ग्रीन ने दो विकेट लिए जबकि यश दयाल और कर्ण शर्मा को एक-एक सफलता मिली।

पहले मुकाबले में चेन्नई की धमाकेदार जीत

आरसीबी द्वारा दिए गए 174 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी चेन्नई ने दमदार शुरूआत की। ऋतुराज गायकवाड और रचिन रवींद्र के बीच पहले विकेट के लिए 38 रन की साझेदारी हुई जिसे यश दयाल ने तोड़ा। कप्तान इस मैच में 15 रन बनाने में कामयाब हुए। तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए अजिंक्य रहाणे उतरे। दूसरे विकेट के लिए रहाणे और रचिन रवींद्र के बीच 33 रन की पार्टनरशिप हुई। न्यूजीलैंड के स्टार खिलाड़ी तीन चौकों और तीन छक्कों की मदद से 37 रन बनाने में कामयाब हुए। टीम को तीसरा झटका रहाणे के रूप में लगा जो 27 रन बना सके। वहीं, चौथे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए डेरिल मिचेल दो छक्कों की मदद से 22 रन बनाने में कामयाब हुए।

दिल्ली के सीएम को ईडी ने कोर्ट में किया पेश, मांगी रिमांड

शराब नीति केस में केजरीवाल से 28 मार्च तक होगी पूछताछ

AGENCY NEW DELHI : दिल्ली शराब नीति केस में पीएमएलए कोर्ट ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 6 दिन (28 मार्च) तक ईडी की रिमांड पर भेज दिया। इससे पहले 3 घंटे सुनवाई के बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रखा लिया था। केजरीवाल को शुक्रवार दोपहर 2 बजे कोर्ट में पेश किया गया था। सुनवाई दोपहर 2.15 बजे शुरू होकर शाम 5.15 बजे तक चली थी। इसके कोर्ट ने 3 घंटे बाद रात 8.34 बजे फैसला सुनाया। ईडी ने केजरीवाल की 10 दिन की रिमांड मांगी थी। बता दें कि ईडी ने शुक्रवार को दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को पीएमएलए कोर्ट में पेश किया। इसके बाद दोनों पक्षों की ओर से इस मामले पर अपनी-अपनी दलील रखी गई है।

घोटाला केवल 100 करोड़ का नहीं है, बल्कि उससे ज्यादा का : एएसजी

चुनाव आयोग से मिले विपक्षी नेता, कहा- गिरफ्तारी असवैधानिक

विपक्ष के नेताओं ने चुनाव आयोग से मुलाकात की। इसके बाद कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने मीडिया से बात की। उन्होंने बताया कि उन्होंने चुनाव आयोग से कहा- केजरीवाल की गिरफ्तारी गंभीर और व्यापक मुद्दा है। यह भारत के संविधान के मूल ढांचे से सीधा संबंध रखता है। संविधान कहता है कि कोई संविधानिक संशोधन मूल ढांचे के खिलाफ होता है तो वह असंवैधानिक होता है। एडवोकेट विक्रम चौधरी ने कहा- कल तक हाईकोर्ट में ईडी का रुख था कि केजरीवाल आरोपी नहीं हैं। हम उन्हें व्यक्तिगत हैसियत के अलावा नहीं बुला रहे हैं। अगर हम अपना कर्तव्य पूरी लगन से नहीं निभाएंगे तो इतिहास हमारी खराब जांच करेगा और मैं केवल अपना कर्तव्य निभा रहा हूं।

ईडी ने केजरीवाल की गिरफ्तारी का आधार 28 पन्नों में बताया

कोर्ट के सामने प्रवर्तन निदेशालय का प्रतिनिधित्व कर रहे एएसजी एसवी राजू ने कहा है कि यह पूरा घोटाला केवल 100 करोड़ का नहीं है, बल्कि उससे ज्यादा का है। साथ ही उन्होंने कोर्ट के सामने यह जानकारी दी है कि 45 करोड़ रुपए के हवाला कारोबार का पता चला है जिसका इस्तेमाल गोवा चुनाव में किया गया था। एएसजी ने यह भी कहा है कि के कविता ने इस मामले में आप को रिश्वत दी थी। जानकारी हो कि ईडी ने अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी का आधार कुल 28 पन्नों में बताया है। वहीं, कोर्ट में केजरीवाल की तरफ से अभिषेक मनु सिंघवी अपनी दलीलें रखी और ईडी पर कई आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि अभी ईडी के पास गिरफ्तारी करने के लिए कोई पुख्ता सबूत नहीं है। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के चार और वरिष्ठ नेताओं को गिरफ्तार किया गया है, (चुनाव के लिए) गैर बराबरी का माहौल पैदा करने का प्रयास किया जा रहा है।

केजरीवाल की गिरफ्तारी तानाशाही रवैया : चम्पाई

हेमंत सोरेन की पत्नी ने भी उठाया सवाल

PHOTON NEWS RANCHI : दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को ईडी ने शराब घोटाला मामले में 21 मार्च को गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन सहित पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने भी सवाल उठाया है। साथ ही इसे तानाशाही रवैया बताया है। चम्पाई सोरेन ने शुक्रवार सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि राजनीतिक दलों को तोड़ने, विधायकों को डराने-धमकाने व लालच देकर सरकारें गिराने, मीडिया पर कब्जे तथा कंपनियों से वसूली के बाद अब विपक्ष के मुख्यमंत्रियों की गिरफ्तारी आम बात हो गई है। जरा सोचिए कि एक मेयर का चुनाव जीतने के लिए सारे नियमों को ताक पर रखने वाले ये लोग लोकसभा का चुनाव जीतने के लिए किस हद तक जायेंगे? आजादी के सात दशकों बाद यह देश लोकतंत्र से चलेगा या तानाशाही से यह फैसला आपको करना है। चम्पाई ने कांग्रेस के बैंक अकाउंट को फ्रिज करने पर भी सवाल किया है। उन्होंने कहा है कि इनकम टैक्स द्वारा चुनावों के ठीक पहले कांग्रेस के बैंक अकाउंट को फ्रीज करना वास्तव में भारत के लोकतंत्र को फ्रीज करने की कोशिश है।

कल्पना ने कहा- शासन का मतलब तानाशाही हो गया

हेमंत सोरेन के एक्स पर उनकी ओर से उनकी पत्नी कल्पना सोरेन ने पोस्ट किया है। उन्होंने कहा है कि शासन का मतलब तानाशाही हो गया है। देश का हर एक कोना इनके जुल्म की गवाही हो गया है। इन्हें लगता है कि करोड़ों लोगों का नेतृत्व कर रहे जन नेताओं को गिरफ्तार कर ये फिर से गद्दी पर बैठ जाएंगे। देश की स्वाभिमानी-निडर जनता इनके भ्रम और अहंकार का मुंहतोड़ जवाब देगी। इंडिया झुकेगा नहीं।

बीजेपी की चौथी लिस्ट, तमिलनाडु के 14 कैंडिडेट्स के नामों का ऐलान

एक सीट पर राज्य के गृहमंत्री लड़ेंगे चुनाव

AGENCY NEW DELHI : भारतीय जनता पार्टी ने शुक्रवार को लोकसभा उम्मीदवारों की चौथी सूची जारी की। तमिलनाडु की 14 सीटों पर कैंडिडेट्स के नामों का ऐलान किया है। वहीं पुडुचेरी की एक सीट पर राज्य के गृहमंत्री नमस्सिवायम को मौका दिया गया है। इससे पहले तीसरी लिस्ट में तमिलनाडु के 9 उम्मीदवारों के नाम का ऐलान हुआ है। तेलंगाना की राज्यपाल रहीं तमिलिसाई सुंदरराजन को चेन्नई साउथ से टिकट दिया गया है। राज्य के भाजपा प्रमुख के. अन्नामलाई को कोयंबटूर और केंद्रीय मंत्री एल मुरुगन को नीलगिरि से उतारा गया है। तमिलनाडु में लोकसभा की कुल 39 सीटें हैं, इनमें से भाजपा ने 10 पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) को दी हैं। इस तरह राज्य में 6 सीटों पर कैंडिडेट्स का ऐलान बाकी है।

डीजीसीए ने एअर इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुर्माना लगाया

NEW DELHI : एअर इंडिया पर डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) ने 80 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है। ये जुमार्ना फ्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिटेशन्स (एफडीटीएल) और फटीग मैनेजमेंट सिस्टम (एफएमएस) से संबंधित नियमों के उल्लंघन के लिए लगाया गया है। डीजीसीए ने हाई लेवल की सेफ्टी सुनिश्चित करने के लिए, एफडीटीएल और एफएमएस नियमों के अनुपालन को लेकर जनवरी महीने में एअर इंडिया का स्पॉट ऑडिट किया था। ऑडिट के दौरान डीजीसीए ने पाया कि कंपनी ने नियमों का उल्लंघन करते हुए उड़ानें संचालित कीं।

हाईकोर्ट ने पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव को नोटिस जारी करने का दिया निर्देश

शिक्षक भर्ती घोटाला : टीएमसी मंत्री के घर ईडी का छापा

AGENCY KOLKATA : पश्चिम बंगाल के 2014 के शिक्षक भर्ती घोटाले में शुक्रवार को ईडी ने राज्य के मंत्री चंद्रनाथ सिन्हा के बीरभूम और कोलकाता के ठिकानों पर छापा मारा। उधर, कलकत्ता हाईकोर्ट ने इस मामले में राज्य के चीफ सेक्रेटरी को नोटिस जारी कर इसी मामले से जुड़े कुछ लोगों के खिलाफ मुकदमा चलाने की अनुमति देने को कहा है। इस मामले में पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी सहित कई लोग हिरासत में हैं। अदालत ने मुख्य सचिव को 3 अप्रैल तक एक रिपोर्ट पेश करने का निर्देश दिया है। राज्य के पूर्व शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी, पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग के पूर्व सचिव अशोक साहा, पश्चिम बंगाल सेकंडरी शिक्षा बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष कल्याणमय गांगुली और एसएससी के पूर्व अध्यक्ष सुबीर भट्टाचार्य की जमानत याचिकाओं पर कोर्ट में सुनवाई हुई।

- शिक्षक भर्ती घोटाले में करोड़ों रुपये का लेनदेन
- पूर्व शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी समेत शिक्षा विभाग से जुड़े अन्य लोगों को किया गया था गिरफ्तार

पूर्व मंत्री के खिलाफ मुकदमा चलाया जाए

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल अशोक चक्रवर्ती ने सुनवाई के दौरान बताया गया कि सरकार की मंजूरी नहीं मिलने से मुकदमा रुका हुआ है। इसलिए अदालत ने पहले सीबीआई निदेशक को मंजूरी देने का निर्देश दिया था। चक्रवर्ती ने कोर्ट को सूचित किया कि पश्चिम बंगाल के राज्यपाल ने पूर्व मंत्री पार्थ चटर्जी के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी दे दी है। हालांकि, बार-बार अनुरोध के बावजूद, राज्य के मुख्य सचिव ने अभी तक अशोक साहा, सुबीरेश भट्टाचार्य और कल्याणमय गांगुली के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी देने पर फैसला नहीं किया है। शिक्षक भर्ती घोटाले के सिलसिले में शुक्रवार की सुबह ईडी ने पश्चिम बंगाल के मंत्री चंद्रनाथ सिन्हा के घर पर छापा मारा। मीडिया रेपोर्ट्स के मुताबिक ईडी का कहना है कि शिक्षक भर्ती घोटाले में करोड़ों रुपए का लेनदेन किया गया था। हालांकि रुपए अभी बरामद नहीं हुए हैं। 8 मार्च 2024 को भी ईडी की टीम ने राज्य के उत्तर 24 परगना जिले के दमदम शहर समेत कई जगहों पर छापे मारे थे। इससे पहले घोटाला मामले में पश्चिम बंगाल के पूर्व शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी समेत शिक्षा विभाग से जुड़े अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया था।

इसरो के रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल 'पुष्पक' की सफल लैंडिंग

अब स्पेस मिशन की लागत 10 गुना होगी कम

AGENCY NEW DELHI : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का शुक्रवार को सुबह रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल 'पुष्पक' का परीक्षण पूरी तरह कामयाब रहा। पुष्पक को भारतीय वायु सेना के चिनूक हेलीकॉप्टर ने 4.5 किमी. की ऊंचाई से हवा में छोड़ा। इसरो का यह शटल बार-बार अंतरिक्ष में जाकर सुरक्षित धरती पर लौट सकता है। कर्नाटक के चित्रदुर्ग स्थित एयरोनॉटिकल टेस्ट रेंज (एटीआर) में रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ने खुद ही आधा घंटे बाद जमीन पर लैंड किया।

इसरो ने एक बयान में बताया कि इस रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ऑटोनॉमस लैंडिंग मिशन को आज सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर कर्नाटक के चित्रदुर्ग के एटीआर से संचालित किया गया। आरएलवी लेक्स-2 को भारतीय वायुसेना के चिनूक हेलीकॉप्टर से 4.5 किलोमीटर की ऊंचाई पर ले जाकर 4.6 किलोमीटर की ऊंचाई पर छोड़ा गया। इसके बाद रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल ने धीमी गति से उड़ान भरी। इसके कुछ देर बाद उसने लैंडिंग गियर के साथ खुद ही एटीआर में 7.40 बजे लैंड किया। यह परीक्षण सफल होने के बाद रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल के सहारे रॉकेट को दोबारा लॉन्च किया जा सकता है।

इस परीक्षण में इसरो के साथ भारतीय वायु सेना, सेंटर फॉर मिलिट्री एयरवर्थनेस एंड सर्टिफिकेशन, वैमानिकी विकास प्रतिष्ठान और एरियल डिलीवरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट ने योगदान दिया।

- चिनूक हेलीकॉप्टर से 4.6 किमी. की ऊंचाई पर हवा में छोड़ा गया रीयूजेबल लॉन्च व्हीकल
- व्हीकल ने धीमी गति से उड़ान भरने के बाद लैंडिंग गियर के साथ एटीआर में लैंड किया

एक के बाद एक कामयाबी की इबारत लिख रहा इसरो

कुछ सालों में लगातार एक के बाद एक कामयाबी की इबारत लिख रहा है। इसी क्रम में यह परीक्षण भी एक और बड़ा कदम माना जा रहा है। इसरो इस पर काफी लंबे समय से काम कर रहा है कि कम लागत में कैसे अच्छी तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसरो ने पिछले साल 02 अप्रैल को आरएलवी लेक्स-1 का सफलतापूर्वक संचालन किया था। इस दूसरे मिशन के साथ इसरो ने अंतरिक्ष में लौटने वाले वाहन की उच्च गति स्वायत्त लैंडिंग करने के लिए स्वदेशी रूप से विकसित प्रौद्योगिकियों को फिर से मान्य किया है। आरएलवी लेक्स-1 में उपयोग किए गए वाहन को उचित मंजूरी के बाद आरएलवी लेक्स-2 मिशन में पुनः उपयोग किया गया था। इसलिए इस मिशन में उड़ान हार्डवेयर और उड़ान प्रणालियों की पुनः उपयोग क्षमता का भी प्रदर्शन किया गया है।

भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

NEW DELHI : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शुक्रवार को भूटान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो से सम्मानित हुए। उन्होंने सम्मान के प्रति आभार प्रगट करते हुए इसे 140 करोड़ भारतीयों को समर्पित किया। दो दिवसीय यात्रा पर शुक्रवार को भूटान पहुंचे प्रधानमंत्री ने सम्मान के बाद उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। प्रधानमंत्री ने कहा, ये सम्मान मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, ये भारत और 140 करोड़ भारतीयों का सम्मान है। भूटान की इस महान भूमि पर मैं सभी भारतवासियों की ओर से ये सम्मान नम्रता से स्वीकार करता हूं। इस सम्मान के लिए आप सभी का हृदय से कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत-भूटान की साझेदारी केवल जमीन और पानी तक ही सीमित नहीं रही है।

छापेमारी के बाद एसएसपी ने तुपुदाना प्रभारी को हटाया

CRIME REPORTER RANCHI : तुपुदाना ओपी प्रभारी मीरा सिंह के खिलाफ ईडी की कार्रवाई के बाद एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने उन्हें पद से हटा दिया है और उन्हें लाइन हाजिर कर दिया है। बता दें कि ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने गुरुवार को तुपुदाना ओपी प्रभारी मीरा सिंह और उनके सहयोगी लाल मोहित नाथ शाहदेव के ठिकानों पर छापेमारी की थी। इस दौरान ईडी की टीम को मीरा सिंह के यहां से एक डायरी मिली थी। इसमें बालू के अवैध कारोबार की डिटेल्स मिली थी। आठ मोबाइल भी बरामद किया गया था। लाल मोहित नाथ शाहदेव के घर से 15 लाख से अधिक कैश और जमीन के कारोबार से जुड़े दस्तावेज मिले थे। प्रवर्तन निदेशालय ने जब 21 मार्च को तुपुदाना ओपी स्थित मीरा सिंह के कार्यालय में छापेमारी की, तो एक डायरी मिली थी। इसमें अवैध बालू के कारोबार में शामिल लोग, ट्रकों एवं लेन-देन का ब्योरा दर्ज है। इस दौरान उनके आवास से आठ मोबाइल भी जब्त किए गए थे। इतना ही नहीं, अधिकारियों के अलावा अवैध धंधों में लिप्त लोगों के साथ व्हाट्सएप चैट की भी डिटेल्स ईडी को मिली है।

BRIEF NEWS

लोहरदगा में ट्रक ने बाइक सवार को रौंदा, मौत

LOHARDAGA : जोबांग थाना क्षेत्र के देवदरिया के समीप ट्रक ने सवार युवक को रौंद दिया, जिससे उसकी मौत हो गई। मृतक की पहचान जोबांग थाना क्षेत्र के सीरम पंचायत के सरजू पावा निवासी ललित उरांव के रूप में की गई। जानकारी के अनुसार युवक लोहरदगा रिचुघुटा मुख्य सड़क से पुत्र से मिलने घाघरा जा रहा था। इस बीच देवदरिया के समीप ट्रक संख्या 2041 ने उसे रौंद दिया। पुलिस के सहयोग से उसे सदर अस्पताल पहुंचाया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस घटना की जांच-पड़ताल कर रही है।

प्रखंड सह अंचल कार्यालय स्थित सभागार में हुई शांति समिति की बैठक

RANCHI : प्रखंड सह अंचल कार्यालय परिसर स्थित सभागार में गुरुवार को होली, सरहुल, रामनवमी, ईद व लोकसभा चुनाव को लेकर शांति समिति की बैठक हुई। जिसमें क्षेत्र के सभी प्रमुख राजनीतिक दल के कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि व पत्रकार शामिल हुए। बैठक में सीओ जय कुमार राम व बीडीओ विजय कुमार ने अगामी पर्व आपसी सौहार्द व शांतिपूर्ण ढंग से मनाने की अपील की। वहीं लोकसभा चुनाव को देखते हुए विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं से आदर्श आचार संहिता का पालन करने की अपील की गई। बैठक के उपरांत रंगो का पर्व होली के मौके पर एक दूसरे को गुलाल लगाकर बधाई दी। मौके पर प्रखंड उपप्रमुख अजय बैठा, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष जावेद अख्तर, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष संजर खान, आजसू प्रखंड अध्यक्ष अमन शाहदेव, सबीबुल रहमान, बिरेंद्र तिवारी, लालचंद सोनी, सीआइ चितरंजन टुडु, रविंद्र प्रसाद, इम्तियाज अहमद अंचलकर्मी सहित दर्जनों उपस्थित थे।

पुलिस ने लूट की योजना बना रहे छह अपराधियों को दबोचा

चार देसी बंदूक सहित अन्य आपत्तिजनक सामान भी बरामद

PHOTON NEWS LATEHAR : लातेहार पुलिस ने गुप्त सूचना पर कार्रवाई कर बरवाडीह थाना क्षेत्र में लूट की योजना बना रहे छह अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अपराधियों में विशाल कुमार वर्मा ,डब्लू कुमार सिंह, शशिकांत कुमार और सत्य प्रकाश सिंह पलामू का निवासी है। जबकि बुद्धेश्वर उरांव और विष्णु उरांव गुमला के रहने वाले हैं। इनके पास से पुलिस ने चार देसी बंदूक समेत अन्य आपत्तिजनक सामान भी बरामद किए।

एसपी अंजनी अंजन ने शुक्रवार को प्रेसवार्ता करते हुए बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि बरवाडीह थाना क्षेत्र के केचकी जंगल के पास कुछ अपराधी किसी घटना को अंजाम देने के लिए एकत्रित हुए हैं। सूचना के बाद प्रशिक्षु आईपीएस अधिकारी ललित मीणा के नेतृत्व में पुलिस की टीम ने अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापामारी की। पुलिस को देखकर अपराधी भागने लगे परंतु पुलिस ने अपराधियों को चारों ओर से घेर कर धर दबोचा। छानबीन के क्रम में अपराधियों के पास से चार देसी पिस्टल, गोलियों समेत अन्य सामान बरामद हुई। एसपी ने बताया कि गिरफ्तार अपराधियों के द्वारा एक गिरोह बनाकर लातेहार के अलावे आसपास के जिलों में लूट की घटना को अंजाम दिया जाता था। इन्हीं अपराधियों के द्वारा कुछ दिन पूर्व लातेहार जिले में एक ट्रक के साथ लूटपाट की गई थी। एसपी ने बताया कि अपराधियों के गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने लूटे गए ट्रक को भी बरामद कर लिया है।

मीडिया को जानकारी देते एसपी अंजनी अंजन। ● फोटोन न्यूज

एसपी ने बताया कि अपराधियों के खिलाफ छापामारी दल में प्रशिक्षु आईपीएस अधिकारी ललित मीणा के अलावे मनिका थाना प्रभारी जयप्रकाश शर्मा, सब इंस्पेक्टर राधेश्याम कुमार, अनूप कुमार, अनुराग सत्येंद्र कुमार, उपेंद्र कुमार समेत अन्य पुलिस अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

पलामू, में 73 वर्षीय वृद्ध से 50 हजार की छिनतई

PALAMU : बैंक से पैसे की निकासी कर घर लौट रहे एक वृद्ध से उचक्कों ने 50 हजार रुपए छीन लिये और भाग निकले। इसे लेकर पीड़ित ने पलामू जिले के लेस्लीगंज थाना में शिकायत दर्ज करायी है। पीड़ित लेस्लीगंज थाना क्षेत्र के गोराडीह गांव निवासी मुनेश्वर पांडे (73) ने बताया कि वह भारतीय स्टेट बैंक की लेस्लीगंज शाखा से 50,000 रुपए निकाल कर आटोरिक्शा से अपने घर जाने के लिए जगतपुरवा मोड़ पर उतरे थे। पैदल अपने घर जा रहे थे। इसी बीच बैंक से ही रैकी कर रहे पल्सर बाइक पर सवार दो उचक्कों ने जबरदस्ती वृद्ध के हाथ से रूपए से भरा थैला छीन लिया और भाग निकले। जब तक पीड़ित शोर मचाते तब तक बाइक सवार उचक्के फरार हो चुके थे। बताते चलें कि पीड़ित के इकलौते पुत्र की करोना से मौत हो गई है। बेटे की चार बच्चियों का पालन-पोषण वृद्ध द्वारा किया जाता है। पीड़ित अपनी जमीन बेचकर बैंक में पैसे रखे थे। खर्च चलाने के लिए निकाले थे। वृद्ध के परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

पलामू के ग्रामीण बैंक से छह लाख रुपये की लूट

तीन लोगों ने पिस्तौल दिखाकर दिया घटना को अंजाम

PHOTON NEWS PALAMU : पलामू में तीन अपराधियों ने मिलकर एक बड़ी घटना को अंजाम दिया है। जिले के पड़वा इलाके में स्थित ग्रामीण बैंक में 6 लाख रुपये की लूट हुई है। ये घटना शुक्रवार सुबह 10:20 बजे की है। सभी अपराधी ग्राहक के रूप में बैंक पहुंचे और पिस्तौल का भय दिखाकर वारदात को अंजाम दिया।

जानकारी के मुताबिक पलामू के पड़वा थाना क्षेत्र में ग्रामीण बैंक की लामी पतरा शाखा का संचालन होता है। शुक्रवार सुबह 10 बजकर 20 मिनट पर सभी अपराधी ग्राहक बनकर पहुंचे। इसके बाद वे सीधे बैंक अधिकारियों के चैंबर में घुसकर उनके सर पर पिस्तौल तान दिया। उसके बाद सभी को बाथरूम में बंद कर दिया और कैश काउंटर पर मौजूद 6 लाख रुपये लेकर फरार हो गये। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सभी अपराधी बैंक खुलने के थोड़ी देर बाद ही अंदर घुसे थे। उस वक्त बैंक पर लोगों की भीड़ कम थी। जबकि बाहर खड़े तीन अन्य साथी उनका इंतजार कर रहे थे। फिलहाल पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की छानबीन कर रही है।

हथियार से लैस थे सभी अपराधी : बताया जाता है कि सभी अपराधी हथियार से लैस थे। घटना को अंजाम देने के बाद सभी लोग बाइक से भाग निकले। पुलिस बैंक और आसपास में लगी सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि लंबे समय बाद पलामू में बैंक डकैती की घटना हुई है। हालांकि, पुलिस ने अपराधियों की धर-पकड़ छानबीन तेज कर दी है। सभी नेशनल हाईवे और स्टेट हाईवे पर जवानों की संख्या बढ़ा दी गयी है।

मास्टर ट्रेनरों व सेक्टर दंडाधिकरियों को दिया गया चुनाव संबंधी प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित लोग। ● फोटोन न्यूज

KHUNTI : लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर गठित प्रशिक्षण कोषांग द्वारा शुक्रवार को जिले के मास्टर ट्रेनरों, जोनल एवं सेक्टर दंडाधिकरियों के लिए अउन्हें मतदान से पूर्व, मतदान के दिन और मतदान के बाद की सभी प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया। साथ ही उन्हें कार्य और दायित्वों की जानकारी दी गई।

मौके पर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कहा कि प्रशिक्षण को चुनाव की रीढ़ माना जाता है। आप सभी अपने कार्य में पारंगत होकर अन्य मतदान कर्मियों को कार्य निष्पादन में निपुण बनाएं। उन्होंने कहा कि लोकसभा निर्वाचन 2024 के कार्यों को सफलता के साथ निष्पादित करने के लिए सभी पोलिंग पार्टी को प्रशिक्षित करने का दायित्व मास्टर ट्रेनरों का है। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को सीयू, बीयू एवं वीवीपैट के संयोजन एवं कार्यप्रणाली की व्यावहारिक जानकारी दी गई। साथ ही प्रशिक्षणार्थियों को निर्वाचन के दौरान उपयोग किये जाने वाले विभिन्न प्रपत्रों के संधारण, पैकेटिंग आदि के संबंध में विस्तार से बताया गया।

गिरिडीह में ट्यूशन पढ़ने जा रहे दो छात्रों को ट्रक ने रौंदा, मौत

GIRIDIH : गिरिडीह-बेंगाबाद मुख्य मार्ग स्थित महुआर के पास तेज रफ्तार ट्रक ने शुक्रवार को बाइक सवार दो छात्रों को रौंद दिया, जिससे दोनों की मौत हो गई। दोनों छात्र बाइक पर सवार होकर ट्यूशन पढ़ने जा रहे थे। बताया जाता है कि बेंगाबाद थाना क्षेत्र के रहने वाले पंकज पंडित और सुभाष पंडित बाइक पर सवार होकर ट्यूशन पढ़ने के लिए जा रहे थे। तभी महुआर के पास उनकी बाइक एक तेज रफ्तार मालवाहक ट्रक ने उन्हें रौंद दिया। स्थानीय लोगों ने दोनों छात्रों को आनन-फानन में अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टर ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही जिप अध्यक्ष मुनिया देवी सदर अस्पताल पहुंचीं और परिजनों को सांत्वना दी।

धनबाद में उत्पाद विभाग ने की छापेमारी नकली मिनी शराब फैक्ट्री का उद्भेदन

PHOTON NEWS DHANBAD : होली और लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर शुक्रवार को एक बार फिर धनबाद उत्पाद विभाग ने दो अलग-अलग जगहों पर छापेमारी कर भारी मात्रा में नकली अंग्रेजी शराब सहित नकली शराब निर्माण में प्रयुक्त होने वाले कई सामान बरामद किया है। इस दौरान गोविन्दपुर थाना क्षेत्र में एक मिनी शराब फैक्ट्री का भी उद्भेदन किया गया।

इस संबंध में जानकारी देते हुए धनबाद उत्पाद विभाग के सहायक आयुक्त संजय मेहता ने बताया कि शुक्रवार अहले सुबह करीब तीन बजे गोविंदपुर थाना क्षेत्र के जोधाडीह ग्राम में विकास सैनी के आवास पर छापेमारी कर नकली अंग्रेजी शराब की मिनी फैक्ट्री का उदभेदन किया गया। इस मिनी शराब फैक्ट्री के संचालक विकास सैनी के खिलाफ पहले से उत्पाद विभाग में तीन मामले दर्ज है। जिसमे यह फरार चल रहा है। इसके पूर्व के अपराधों और लगातार इस तरह के अपराध से जुड़े रहने के कारण विकास सैनी के खिलाफ उत्पाद विभाग सरकार से सीसीए लगाने की सिफारिश करेगी।

जानकारी देते उत्पाद विभाग के सहायक आयुक्त संजय मेहता। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने बताया कि इस मिनी शराब फैक्ट्री से कुल 180 लीटर नकली शराब जब्त की गई। जिसकी बाजार मूल्य लगभग 82 हजार 8 सौ रुपये बताई जा रही है। बरामद नकली शराब अलग अलग अंग्रेजी शराब कंपनियों की बोतलों में भर कर रखा गया था। इसके अलावा यहाँ से एक गैलेन कच्चा स्प्रिट, विभिन्न ब्रांडों के लेबल, कॉर्क, 15 बोरी शराब की खाली बोतले इत्यादि बरामद की गई।

उन्होंने बताया कि विकास साहनी यहां नकली अंग्रेजी शराब का निर्माण करता था, जबकि इसका भतीजा कार्तिक साहनी इन नकली शराब की बोतलों को अलग अलग जगहों पर खपाने का काम करता था। इन दोनों को इस मामले का अभियुक्त बना इनके खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र समर्पित किया जा रहा है।

वहीं एक दूसरी सूचना पर आज ही सुबह करीब आठ बजे उत्पाद विभाग की टीम ने पुटकी स्थित अजय पासवान के यहां छापेमारी कर दो पेटी नकली अंग्रेजी शराब बरामद किया है। जबकि आरोपी मौके से फरार होने में सफल रहा।

पुलिस अवैध नशा कारोबारियों के खिलाफ चलाया अभियान

RANCHI : पिठोरिया पुलिस लगातर अवैध नशा कारोबारियों के खिलाफ अभियान चलाते हुवे शुक्रवार को भी थाना क्षेत्र के इचापीड़ी में छापेमारी की। इस दौरान लगभग डेढ़ किविंटल जावा महुआ, महुआ शराब व भट्ठियों को ध्वस्त किया। मौके पर पुलिस को देख अवैध कारोबारी भागने में सफल रहे। थाना प्रभारी गौतम कुमार राय ने बताया कि अवैध नशा कारोबारियों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है और आगे भी चलता रहेगा। अभियान में एएसआई अमृत कुमार मेहता सहित पिठौरिया पुलिस के जवान मौजूद थे।

नक्सलियों के गढ़ बूढ़ापहाड़ में लोस चुनाव के लिए प्रशासन ने कसी कमर

PHOTON NEWS LATEHAR : झारखंड पुलिस लोकसभा चुनाव को लेकर कमर कस चुकी है। झारखंड पुलिस लोकसभा चुनाव को लेकर दोहरे अभियान पर है। एक तरफ नक्सलियों के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया जा रहा है तो दूसरी तरफ नक्सल इलाके में रहने वाले ग्रामीणों को वोट की ताकत क्या होता है, यह भी समझाया जा रहा है।

नक्सलियों के गढ़ बूढ़ापहाड़ इलाके में लोकसभा चुनाव की तैयारी तेजी से चल रही है। बूढ़ापहाड़ जहां से पहले माओवादी वोट बहिष्कार का फरमान जारी करते थे और फरमान का असर चुनाव में नजर आता था। 2019 के लोकसभा चुनाव में माओवादियों ने इसी इलाके से वोट बहिष्कार का फरमान जारी किया था लेकिन 2022 के बाद इलाके में हालात बदल गए हैं। बूढ़ापहाड़ से माओवादियों के पांव उखड़ गए हैं। बूढ़ापहाड़ के इलाके में सुरक्षाबलों का कब्जा हो गया है। 2019 के बाद 2024 का लोकसभा चुनाव बदले हालात में होने जा रहा है।

2019 के लोकसभा चुनाव में बूढ़ापहाड़ के सभी मतदान केंद्रों पर हेलीकॉप्टर मतदान कर्मियों को भेजा जाता था लेकिन इस बार हालात बदले हुए हैं। सिर्फ दो इलाके में ही हेलीकॉप्टर से मतदान कर्मियों को भेजने का प्रस्ताव है। बूढ़ापहाड़ का इलाका दो हिस्सों में बंटा हुआ है, जिसमें बड़ा हिस्सा पलामू लोकसभा क्षेत्र जबकि एक हिस्सा चतरा लोकसभा क्षेत्र में है।

बूढ़ापहाड़ के इलाके में मतगड़ी और टेहरी पंचायत के इलाके में मतदान केंद्र बनाए जाते हैं। इलाके के ग्रामीण वोट देने के लिए 15 से 20 किलोमीटर का सफर तय करते हैं। पूरा इलाका जंगलों और पहाड़ों से घिरा हुआ है। ग्रामीण पैदल सफर तय करते हुए वोट देने के लिए मतदान केंद्र जाते हैं।

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट में होली बैश का हुआ आयोजन

RANCHI : इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी की रांची शाखा में होली बैश का आयोजन किया गया। आईआईएफटी के फैशन और इंटीरियर डिजाइनिंग के छात्रों ने सफेद टी-शर्ट पर तरह तरह के स्टैंसिल एवं ब्लॉक प्रिंटिंग के डिजाइन को बनाया। होली के रंगों को ध्यान में रखते हुए टी-शर्ट को पेंट किया गया, जिससे छात्रों ने आने वाले गरमी के मौसम में तरह तरह के प्रिंट्स की फोरकास्टिंग भी की। इस कार्यक्रम में फैब्रिक कलर्स का उपयोग किया गया। छात्रों ने एक दूसरे को गुलाल एवं रंग लगाकर होली की बधाइयाँ भी दी। कार्यक्रम में अमीषा, अन्नू, लक्ष्मी, शिबानी, अंजलि, पूनम, गीता, जन्नत, रीमा, किरण, प्रतिक, सृस्टि, सेलेना, राज, नंदिता ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। आई.आई.एफ.टी

डीईओ ने वोटर अवेयरनेस के लिए वीएएफ के प्रतिनिधियों को दिए टिप्स

PHOTON NEWS PALAMU : जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त शशि रंजन ने शुक्रवार को समाहरणालय के सभागार में जिले के सभी ब्लॉक, अन्य सरकारी और निजी संस्थानों में गठित वोटर अवेरनेस फोरम के प्रतिनिधियों के साथ बैठक कर उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने सभी से कहा कि वे लोकसभा चुनावों को लेकर अधिकाधिक लोगों को आगामी 13 मई और 20 मई को मतदान करवाना सुनिश्चित करें।

उन्होंने इस अभियान को शहरी क्षेत्रों में विशेष रूप से अभियान चलाकर वोटर अवेयरनेस फोरम के माध्यम से मतदाताओं को अपने मताधिकार के प्रयोग एवं नैतिक मतदान के प्रति जागरूक करने की बात कही। यह भी कहा कि मतदान के दिन को छुट्टी का दिन नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का दिन मानते हुए वोट जरूर करें।

अधिकारियों संग बैठक करते उपायुक्त शशि रंजन। ● फोटोन न्यूज

कहा कि मतदाता अपना वोट सुलभता के साथ डाल सकें इसी उदेश्य से लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 की धारा 135 बी के तहत सभी सरकारी, गैर सरकारी, व्यवसायिक संस्थानों के कर्मियों के लिए सवैतनिक अवकाश का प्रावधान किया गया है। ऐसे में मतदान के दिन को छुट्टी का दिन नहीं बल्कि जिम्मेवारी भरा दिन मानते हुए वोट डालने जरूर जाएं।

उन्होंने कहा कि वोट देकर आपको गर्व होगा कि सरकार बनाने में आपकी भी सहभागिता है। भारत के लिए मतदान करने जायेंगे। इसी बात को अपने मन में लिये वोट जरूर करें। इसके अलावे स्वीप के नोडल पदाधिकारी रवि कुमार ने वीएएफ के प्रतिनिधियों को उनके कार्यों से भी अवगत कराया।

जिला स्कूल के सभागार में सेक्टर पदाधिकारी व पुलिस पदाधिकारियों को द्वितीय चरण का दिया गया प्रशिक्षण

मतदान प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण कड़ी सेक्टर पदाधिकारी, चूक अस्वीकार्य : डीडीसी

PHOTON NEWS PALAMU : डालटनगंज के जिला स्कूल के सभागार में सेक्टर पदाधिकारी व पुलिस पदाधिकारियों को द्वितीय चरण का प्रशिक्षण शुक्रवार को दिया गया। मौके पर प्रशिक्षण कोषांग के नोडल पदाधिकारी सह उप विकास आयुक्त रवि आनंद ने कहा कि सेक्टर पदाधिकारी व पुलिस पदाधिकारी सम्पूर्ण मतदान प्रक्रिया के महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इसलिए उन्हें पूरा प्रशिक्षण लेने के साथ सजग, सचेष्ट व क्रियाशील होना आवश्यक है। डीडीसी ने सेक्टर पदाधिकारी व पुलिस पदाधिकारियों से संवाद कर तैयारी का जायजा लिया। कहा कि कोई भी चूक अस्वीकार्य है।

छत्तरपुर एलआरडीसी विजय कुमार केरकेट्टा ने सेक्टर पदाधिकारियों के दायित्वों के साथ रिजर्व ईवीएम का उपयोग, बुथ विजिट, माकपोल व रिपोर्टिंग के बारे में विस्तार से बताया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल डीडीसी व अन्य अधिकारी। ● फोटोन न्यूज

एलआरडीसी प्यारेलाल ने कहा कि सही जानकारी ही आप सबको संकट से उबारेगी तथा समुचित कार्य निष्पादन में सहायक होगी। कहा कि अगर आप प्रशिक्षण में पसीना बहाते हैं तो कार्य के समय परेशानी नहीं होगी।

पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी शहर थाना श्री देवव्रत पोद्दार ने पुलिस पदाधिकारी एवं सेक्टर पदाधिकारी के साथ समन्वय कर कार्य करने तथा मतदान के पहले, मतदान के दौरान व मतदान के पश्चात की विधि व्यवस्था व सुरक्षा सुनिश्चित करने के कौशल की जानकारी दी।

जिला प्रशिक्षक परशुराम तिवारी ने उपयोग के अनुसार ईवीएम के केटेगरी व विजिट के दौरान आब्जर्वेशन की बारीकियों से अवगत कराया। रामानुज प्रसाद, अशोक सिंह व अमरेन्द्र कुमार पाठक ने ईवीएम के संचालन व बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी दी। प्रधान लिपिक रामलखन राम ने प्रशिक्षण के संयोजन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

उप विकास आयुक्त सादात अनवर ने त्रुटि रहित डाटाबेस तैयार करने का दिया निर्देश

DHANBAD : उप विकास आयुक्त सादात अनवर ने शुक्रवार को कार्मिक कोषांग की समीक्षा की। इसमें उन्होंने विगत दिनों डाटा एंट्री में मिली गलतियां में किए गए सुधार के प्रगति की समीक्षा की। वैसे कर्मी जिन्हें प्रीसाइडिंग में जाना था परंतु वे पोलिंग ऑफिसर 1 वन या पोलिंग ऑफिसर 2 हो गए थे, उसमें सुधार किया गया। साथ ही वैसे कर्मी जिनके फोन नंबर डाटा एंट्री में नहीं थे उनके अपडेट की समीक्षा की।

उप विकास आयुक्त ने कहा कि लोकसभा चुनाव 2024 को अच्छे से संपन्न कराने के लिए सभी कर्मियों का त्रुटि रहित डाटाबेस तैयार करना है। साथ ही कहा कि जिन विभागों ने अब तक अपने कर्मियों का पूरा डेटाबेस कार्मिक कोषांग को उपलब्ध नहीं कराया है वे आज संध्या 5:00 बजे तक उपलब्ध करा दे। अन्यथा विभाग के कंट्रोलिंग पदाधिकारी पर रिप्रेजेंटेशन ऑफ दी पीपल एक्ट 1951 के तहत कार्रवाई की जाएगी।

समीक्षा बैठक में उपस्थित उप विकास आयुक्त व अन्य। ● फोटोन न्यूज

उप विकास आयुक्त ने बताया कि शनिवार को दोपहर तीन बजे न्यू टाउन हॉल में उपायुक्त एवं वरीय पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में सभी सेक्टर मजिस्ट्रेट, सेक्टर पुलिस पदाधिकारी की ब्रीफिंग की जाएगी। बैठक की सूचना सभी सेक्टर पदाधिकारी, सेक्टर पुलिस पदाधिकारी तथा रिजर्व सेक्टर पदाधिकारी को फोन से देने का निर्देश दिया।

लोकसभा चुनाव को लेकर रूट चार्ट एवं हेलीपैड पर हुई चर्चा

बैठक में शामिल उपायुक्त व अन्य। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS LOHARDAGA : जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में शुक्रवार को लोकसभा आम निर्वाचन, 2024 के निमित्त इंटरमीडिएट स्ट्रॉंग रूम, हैलीपैड, रूटचार्ट एवं अन्य विषयों की समीक्षा की गई बैठक में सभी थाना प्रभारियों के साथ क्लस्टर से बूथ तक की स्थिति, बूथ में मतदाता के लिए सुविधाएं, मतदान केंद्रों तक पहुंच पथ, कनेक्टिविटी, सुरक्षा, क्लस्टर में मतदान कर्मियों के लिए सुविधाएं समेत अन्य बिंदुओं पर चर्चा की गई और आवश्यक निर्देश दिये गये।

बैठक में पुलिस अधीक्षक हारिस बिन जमां, सीआरपीएफ कमाण्डेंट राहुल कुमार, उप विकास आयुक्त दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, प्रशिक्षु आईपीएस, अनुमण्डल पदाधिकारी, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, डीएसपी हेडक्वार्टर, पेशरार एवं किस्को प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी व अंचल अधिकारी, पेशरार, जोबांग, सेरेंगदाग एवं किस्को थाना के थाना प्रभारी उपस्थित थे।

BRIEF NEWS

झारखंड सेंट्रल रेलवे के निदेशक बने प्रवीण

RANCHI : राज्य सरकार ने संयुक्त परिवहन आयुक्त प्रवीण प्रकाश को झारखंड सेंट्रल रेलवे लि. के निदेशक के रूप में नियुक्त किया है। इस संबंध में परिवहन विभाग ने आदेश जारी किया है। बता दें कि झारखंड सरकार, सीसीएल एवं इरकॉन के बीच कोयला क्षेत्रों में नयी रेल परियोजनाओं के निर्माण कार्यों के लिए क्रमश: 10: 64: 26 के अनुपात के हिस्सेदारी में जेसीआरएल कंपनी का गठन किया गया है। इस कंपनी के पास रेल परियोजनाओं का अनुश्रवण व क्रियान्वयन आदि का जिम्मा है।

सीएम उत्कृष्ट विद्यालयों में 90% आवेदकों ने दी परीक्षा

RANCHI : राज्य के 80 जिलास्तरीय मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालयों में नामांकन के लिए आज प्रवेश परीक्षा हुई। इसमें कुल आवेदक के 90 प्रतिशत से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए। प्रवेश परीक्षा के लिए कुल 36,230 विद्यार्थियों को प्रवेश पत्र जारी किया गया था। प्रवेश परीक्षा शांतिपूर्ण रही। प्रवेश परीक्षा देने आये विद्यार्थी और उनके अभिभावक दोनों उत्साहित दिखे। परीक्षा केंद्रों में सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किये गए थे। 30 मार्च को प्रवेश से संबंधित पहली मेधा सूची का प्रकाशन किया जाएगा। एक अप्रैल से सात अप्रैल तक चयनित विद्यार्थियों का नामांकन होगा। आठ अप्रैल नए शैक्षणिक सत्र की शुरूआत हो जायेगी। इस वर्ष मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालयों में नामांकन के लिए रिकॉर्ड आवेदन आये थे। आवेदन ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से प्राप्त किये गए थे। उत्कृष्ट विद्यालयों की 8,984 सीटों के विरुद्ध 36,230 आवेदन प्राप्त हुए थे।

मरांडी ने जेपीएससी परीक्षा रद्द करने की रखी मांग

RANCHI : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने शुक्रवार को सोशल मीडिया एक्स के जरिए हाल में लिए गये जेपीएससी परीक्षा (पीटी) को रद्द करने की मांग की है। उन्होंने लिखा है कि राज्य के मुख्य सचिव तत्काल मामले का संज्ञान लेकर छात्रों के हित में प्रारंभिक परीक्षा रद्द करें। बाबूलाल मरांडी ने इस परीक्षा की जांच को लेकर पूर्व में सीबीआई जांच का आग्रह भी मुख्य सचिव से किया था। मरांडी ने लिखा है कि जेपीएससी ने अधूरी तैयारी के साथ परीक्षा आयोजित कराई, जिसमें कई अनियमितता देखने को मिली। उन्होंने लिखा है कि सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में स्पष्ट दिख रहा है कि जेपीएससी के प्रश्न पत्र परीक्षा के दो घंटे पूर्व ही फेसबुक पर अपलोड कर दिए गए हैं। एक और सूचना है कि प्रथम पाली तथा द्वितीय पाली की परीक्षा में सामान्य अध्ययन के 22 प्रश्न रिपीट हो गए हैं। साथ ही चार प्रश्न भी गायब हैं। परीक्षा से दो घंटे पहले पेपर लीक होने और 22 प्रश्नों के रिपीट होने से परिणाम में बड़ा अंतर आ सकता है। इससे जेपीएससी परीक्षा में हुई गड़बड़ी प्रमाणित हो रही है।

रांची के डोरंडा थाने में शांति समिति की बैठक

RANCHI : डोरंडा थाने में शुक्रवार को होली पर्व को शांति पूर्वक संपन्न कराने को लेकर शांति समिति की बैठक हुई। बैठक में मुख्य रूप से होलिका दहन के समय विशेष सतर्कता कैसे बरती जाए उस पर चर्चा की गई। साथ ही होली के समय मस्जिदों के आसपास विशेष सुरक्षा व्यवस्था की मांग की गई। थाना प्रभारी आनंद किशोर प्रसाद ने शांति समिति की बैठक में पहुंचे सभी लोगों को आपसी भाईचारा के साथ पर्व को मनाने की बात कही। साथ ही प्रभारी ने कहा कि पुलिस आप की सेवा में 24 घंटे मौजूद रहेगी।

जेएसएससी से रिजल्ट जारी करने की मांग

RANCHI : औद्योगिक प्रशिक्षण अधिकारी परीक्षा का रिस्पॉन्स की और रिजल्ट जारी करने की मांग को लेकर अभ्यर्थी जेएसएससी कार्यालय पहुंचे। रिजल्ट के अलावा जिन 310 अभ्यर्थियों का फॉर्म रद्द किया गया था। उनपर भी विचार नहीं करने का आग्रह किया गया। दरअसल अगस्त 2023 में औद्योगिक प्रशिक्षण के लिए विज्ञापन जारी किया गया था, इसकी परीक्षा 28,29 नवंबर को हुई थी। 22 दिसंबर को आंसर की जारी हुआ था। जारी विज्ञापन में कहा गया था कि एक अभ्यर्थी एक से अधिक पोस्ट के लिए आवेदन नहीं कर सकते हैं, लेकिन कुछ अभ्यर्थियों ने एक से अधिक पोस्ट के लिए आवेदन किया था। जिसका विरोध अन्य अभ्यर्थियों ने किया और जेएसएससी को इसकी शिकायत भी की थी।

अधिवक्ता राजीव कुमार कैश कांड : झारखंड हाईकोर्ट में जमानत याचिका पर सुनवाई

अमित अग्रवाल की जमानत पर सीबीआई ने जवाब दाखिल करने के लिए मांगा समय

SPECIAL REPORTER RANCHI : अधिवक्ता राजीव कुमार कैश कांड में सीबीआई की दिल्ली शाखा की ओर से दर्ज मामले में अमित कुमार अग्रवाल की जमानत याचिका की सुनवाई शुक्रवार को झारखंड हाई कोर्ट में हुई। मामले में सीबीआई की ओर से जवाब दाखिल करने के लिए कोर्ट से समय की मांग की गई। हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद की कोर्ट में मामले की अगली सुनवाई 26 अप्रैल निर्धारित की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता रोहित रंजन सिंह एवं अधिवक्ता अभिषेक अग्रवाल ने पैरवी की। इस मामले में अमित कुमार अग्रवाल 7 दिसंबर 2023 से जेल में है।

बता दें कि मामले में सीबीआई की दिल्ली ब्रांच के द्वारा रांची की सीबीआई कोर्ट में चार्जशीट दाखिल किया जा चुका है। चार्जशीट में सीबीआई ने कैश कांड के मुख्य आरोपी कोलकाता के व्यवसायी अमित अग्रवाल के साथ अधिवक्ता राजीव कुमार को भी आरोपी बनाया है। साथ ही अमित अग्रवाल की एक कंपनी का भी नाम चार्जशीटेड किया गया है। अमित अग्रवाल वर्तमान में बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार में बंद है। राजीव कुमार को कोलकाता में 50 लाख रुपए नकद के साथ गिरफ्तार किया गया था। इसमें अमित अग्रवाल की संलिप्तता थी। एक साजिश के तहत अमित अग्रवाल ने राजीव कुमार को रांची से कोलकाता बुलाया और उन्हें गिरफ्तार करवा दिया था।

सीबीआई ने जनवरी 2023 में दर्ज की थी प्राथमिकी : सीबीआई की दिल्ली शाखा ने अमित अग्रवाल के खिलाफ 20 जनवरी 2023 को प्राथमिकी दर्ज की थी। दरअसल, झारखंड हाईकोर्ट के जस्टिस एसके द्विवेदी की अदालत ने साल 2022 में सीबीआई जांच करने का आदेश दिया था। इसके बाद सीबीआई ने 20 जनवरी 2023 को अमित अग्रवाल और उसके कंपनी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर तफ्तीश प्रांरभ की थी। वर्तमान में अमित अग्रवाल जमीन फर्जीवाड़े कर उस राशि का मनी लाउंड्रिंग करने के आरोप में भी जेल में है।

हाईकोर्ट से पूर्व मंत्री योगेंद्र साव को बड़ा झटका, याचिका खारिज

SPECIAL REPORTER RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट से पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता योगेन्द्र साव को बड़ा झटका लगा है। हाई कोर्ट की डबल बेंच ने उनकी उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें उन्होंने बड़कागांव से जुड़े एनटीपीसी भूमि अधिग्रहण केस में रांची सिविल कोर्ट द्वारा दी गई सजा को रद्द करने की मांग की थी। जस्टिस रत्नाकर भेंगरा और जस्टिस अम्बुज नाथ की कोर्ट में शुक्रवार को क्रिमिनल अपील पर सुनवाई हुई। योगेन्द्र साव की ओर से अधिवक्ता विशाल तिवारी ने बहस की। योगेन्द्र साव की ओर से हाई कोर्ट के इस आदेश को चुनौती दी जा सकती है। हाई कोर्ट के आदेश के बाद अब योगेन्द्र साव के चुनाव लड़ने पर रोक जारी रहेगी।

साहिबगंज के पत्थर कारोबारी टिंकल भगत की जमानत अर्जी पर ईडी ने जवाब के लिए मांगा समय, अगली सुनवाई 12 अप्रैल को

SPECIAL REPORTER RANCHI : साहिबगंज के पत्थर कारोबारी टिंकल भगत जमानत याचिका की सुनवाई झारखंड हाई कोर्ट में शुक्रवार को हुई। मामले में प्रार्थी और ईडी की ओर से पक्ष रखा गया। ईडी ने प्रार्थी द्वारा उठाए गए कुछ बिंदुओ पर जवाब के लिए समय मांगा। हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति एसएन प्रसाद की कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 12 अप्रैल निर्धारित की है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार ने पैरवी की। सुनवाई में प्रार्थी की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि अवैध खनन का यह मामला शेड्यूल ऑफिंस में नहीं आता है। जिस प्लॉट पर अवैध माइनिंग की बात कही जा रही है वह प्लॉट सरकार से लीज पर लिया गया था। प्रार्थी को झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से दो प्लॉट पर माइनिंग के लिए कॉन्सेंट टू ऑपरेट भी मिला है। उनकी ओर से इस संबंध में दस्तावेज भी कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। प्रार्थी को ईडी ने समन कर तीन बार बुलाया था, जिसपर वह ईडी के समक्ष उपस्थित हुए थे। मामले के एक सह आरोपी कृष्णा साहा को हाई कोर्ट से जमानत मिल चुकी है।। इसलिए प्रार्थी को भी जमानत दी जाए।

बता दें कि ईडी की विशेष अदालत ने पूर्व में टिंकल भगत जमानत याचिका खारिज कर दी थी, इसके बाद उनकी ओर से हाईकोर्ट में जमानत के लिए अर्जी दाखिल की गई है। मामले में ईडी ने टिंकल भगत के खिलाफ 2 सितंबर 2023 को अदालत में आरोप पत्र दाखिल कर दिया था। टिंकल साहिबगंज में एक हजार करोड़ के अवैध पत्थर खनन मामले से जुड़ा हैं। टिंकल भगत को ईडी ने 7 जुलाई 2023 को गिरफ्तार किया था। वह सीएम के बरहेट विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा का खास सहयोगी माना जाता है। वह खनन के पैसे पंकज मिश्रा को भी पहुंचता था।

वीरेंद्र राम के पिता व पत्नी की अग्रिम बेल पर हाईकोर्ट में फैसला सुरक्षित

SPECIAL REPORTER RANCHI : जेल में बंद ग्रामीण विकास विभाग के निलंबित चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम के पिता और पत्नी की अग्रिम जमानत याचिका पर झारखंड हाईकोर्ट में सुनवाई पूरी हो गई है। शुक्रवार की सुनवाई के दौरान ईडी और बचाव पक्ष की बहस पूरी होने के बाद अदालत ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस अनिल कुमार चौधरी की कोर्ट में इस मामले की सुनवाई हुई। गेंदा राम की ओर से अधिवक्ता सुभाशीष रसिक सोरेन ने बहस की। बीरेन्द्र राम के पिता गेंदा राम और उनकी पत्नी राजकुमारी देवी पर फिलहाल गिरफ्तारी की तलवार लटक रही है, क्योंकि रांची पीएमएलए (प्रीवेन्शन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) की विशेष कोर्ट दोनों को अग्रिम बेल देने से इनकार कर चुका है।

बता दें कि ईडी ने इसी वर्ष 22 फरवरी को आय से अधिक संपत्ति मामले में इंजीनियर वीरेंद्र राम को गिरफ्तार किया था। इससे एक दिन पहले 21 फरवरी को ईडी ने पूर्व चीफ इंजीनियर वीरेंद्र राम के 24 ठिकानों पर छापेमारी थी। छापेमारी के दौरान ईडी ने लगभग डेढ़ करोड़ के जेवरात सहित देश के कई शहरों में करोड़ों के निवेश से जुड़े दस्तावेज बरामद किये थे।

उषा मार्टिन के एमडी के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक बरकरार : हाईकोर्ट

SPECIAL REPORTER RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट में मनी लॉन्ड्रिंग मामले में आरोपित उषा मार्टिन के एमडी राजीव झवर की अग्रिम जमानत याचिका की सुनवाई शुक्रवार को हुई। मामले में याचिकाकर्ता की ओर से पीड़क कार्रवाई पर रोक को बढ़ाने के लिए हस्तक्षेप याचिका (आईए) दाखिल की गई, जिस पर ईडी की ओर से जवाब दाखिल करने के लिए समय की मांग की गई। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 19 अप्रैल निर्धारित की है। जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद की कोर्ट ने राजीव झवर के खिलाफ पीड़क कार्रवाई पर रोक 19 अप्रैल तक जारी रखी है। ईडी की ओर से अधिवक्ता एके दास एवं सौरभ कुमार ने ने पैरवी की। मामले को लेकर ईसीआईआर 2/ 2021 दर्ज किया है। उषा मार्टिन को घाटकुड़ी, पश्चिम सिंहभूम स्थित विजय टू में आयरन ओर के लिए कैपटिव माइनिंग का काम मिला था। आरोप है कि कंपनी ने कोयले का इस्तेमाल अपने लिए करने की बजाय उसे मार्केट में बेच दिया।

- ईडी की ओर से जवाब दाखिल करने के लिए मांगा गया समय
- मामले की अगली सुनवाई 19 अप्रैल को

सोने का नकली जेवरात फेंक कर लोगों के साथ ठगी करने वाले गिरोह के तीन सदस्य गिरफ्तार

फर्जी आधार कार्ड पर ठहरते थे होटल में, चोरी की बाइक का करते थे इस्तेमाल

CRIME REPORTER RANCHI : लोअर बाजार थाना की पुलिस ने सड़क पर नकली सोने का जेवरात फेंककर लोगों के साथ ठगी करने वाले गिरोह के तीन सदस्य लुकमान खान, जबीउल्लाह और आरिफ कमाल को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। एक अन्य आरोपी आसिफ की तलाश में पुलिस छापेमारी कर रही है। सभी आरोपी हजारीबाग के रहने वाले हैं। एसएसपी चंदन सिन्हा ने बताया कि पिछले एक सप्ताह से इस गिरोह के द्वारा खादगढ़ा बस स्टैंड में लोगों के साथ ठगी की जा रही थी। इस गिरोह के सदस्य सड़क पर पहले नकली सोने का कंगन फेंक देते थे। कोई व्यक्ति उस कंगन को उठाकर जाने लगता था तभी गिरोह का एक सदस्य उस व्यक्ति के पास पहुंचता था और फिर कहता था कि उसका भी आधा हिस्सा है। कुछ मामलों में तो ठगों को पैसा मिल जाता था और कई मामलों में पैसा नहीं मिलता था तो गिरोह का दूसरा सदस्य पुलिस की वर्दी में मौके पर पहुंचता था और जेल भेजने की धमकी देकर कंगन उठाने वाले व्यक्ति से पैसा ठग लेता था। कई बार ठगों ने आन लाइन पैसा भी लिया है। व्यक्ति जब कंगन लेकर घर पहुंचता था तब उसे पता चलता था कि कंगन नकली है। इस वजह से लोग पुलिस के पास नहीं आते थे। लेकिन पुलिस को इसकी सूचना मिली तो पुलिस ने योजना के तहत तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। चारों आरोपी खादगढ़ा बस स्टैंड में बाइक से पहुंचे थे। पुलिस ने चेकिंग अभियान लगा कर तीनों आरोपी को पकड़ा लेकिन एक मौके से फरार हो गया। एसएसपी चंदन सिन्हा ने बताया कि फर्जी आधार कार्ड की मदद से आरोपी होटल में ठहरते थे। पुलिस से बचने के लिए चोरी की बाइक का इस्तेमाल करते थे। ताकि पुलिस कहीं पकड़े तो वह बाइक छोड़कर आसानी से भाग निकले। पुलिस का कहना है कि इस गिरोह के द्वारा लाखों रुपये की ठगी की गई है। ठगी के पैसा से आरोपितों ने जमीन खरीदा है और घर बनाया है। पकड़े गए आरोपितों में से दो आरोपी चुटिया थाना से जेल जा चुके हैं और एक आरोपी हजारीबाग से जेल गया था।

- पुलिस ने डेढ़ लाख रुपये, दो बाइक और पुलिस की वर्दी किया जब्त
- खादगढ़ा बस स्टैंड में पिछले एक सप्ताह से लोगों को बना रहे थे निशाना

पुलिस ने बरामद किया नकली जेवरात

पुलिस का कहना है कि आरोपियों के पास से नकड़ी जेवरात बरामद किया गया है। इस गिरोह के द्वारा अकसर सुबह के वक्त में लोगों को निशाना बनाया जाता था ताकि पुलिस की नजर से बच सके। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज निकाल कर पहले ही इस गिरोह के सदस्यों का फोटो निकाल लिया था।

रांची एसएसपी ने लोअर बाजार समेत 11 थाना प्रभारियों को किया शोकॉज, मांगा स्पष्टीकरण

CRIME REPORTER RANCHI : विधि व्यवस्था से संबंधित रिपोर्ट नहीं देने पर रांची एसएसपी ने जिले के 11 थाना प्रभारी से स्पष्टीकरण मांगा है। एसएसपी द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि आदर्श आचार संहिता के दौरान वारंट, कुर्की के निष्पादन में शिथिलता बरतने वाले जिला के 11 थाना प्रभारियों पर विभागीय कार्रवाई के विरुद्ध स्पष्टीकरण की मांग की गई। जिन थाना प्रभारियों से स्पष्टीकरण मांगी गयी है, उसमें सदर, लोअर बाजार, हिंदपीढ़ी, नगड़ी, रातू, बेड़ो, कांके, नामकुम और बरियातू थाना प्रभारी शामिल हैं।

पांच दिन पहले भी 15 थाना प्रभारियों से मांगी गई थी स्पष्टीकरण : इससे पहले एसएसपी ने बीते 17 मार्च को जिले के 15 थाना प्रभारी से स्पष्टीकरण मांगा था। एसएसपी द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि लोकसभा चुनाव को लेकर जिले के सभी थाना प्रभारी प्रतिदिन विधि-व्यवस्था से संबंधित रिपोर्ट चुनाव कोषांग को भेजने का निर्देश दिया गया था। लेकिन निर्धारित समय में इन थाना प्रभारियों के द्वारा रिपोर्ट चुनाव कोषांग को उपलब्ध नहीं कराया गया है। इसी कारण विभागीय कार्यवाही के विरुद्ध 48 घंटे के अंदर अपना स्पष्टीकरण समर्पित करें।

शराब के साथ दो आरोपियों को आरपीएफ ने दबोचा

CRIME REPORTER RANCHI : होली पर्व के मद्देनजर स्टेशनों और ट्रेनों में विशेष चौकसी बरती जा रही। शुक्रवार को मिली जानकारी के अनुसार इसी क्रम में रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने रांची रेलवे स्टेशन पर जांच अभियान चलाया। इस दौरान दो लोगों को प्लेटफॉर्म संख्या एक पर बैग के साथ संदेहास्पद अवस्था में देखा गया। बैग की जांच करने पर उसमें से 12 शराब की बोतल बरामद की गई। बरामद शराब का बाजार मूल्य 8 हजार 800 रुपए बताया गया। इसके बाद दोनों आरोपितों राजेश कुमार और राजकुमार को गिरफ्तार किया गया। दोनों बिहार के नवादा के रहने वाले हैं।

पूछताछ में दोनों आरोपियों ने बताया कि ट्रेन संख्या 18624 से बिहार ले जाकर अधिक कीमत में शराब को बेचते, लेकिन पकड़े गए। आरपीएफ के रांची मंडल सुरक्षा आयुक्त पवन कुमार के निर्देश पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। सहायक उप निरीक्षक रवि शेखर ने बताया कि जब्त शराब के दोनों आरोपितों गिरफ्तार किया गया। टीम का नेतृत्व रांची के उपनिरीक्षक सूरज पांडे कर रहे थे।

वजु के पानी की थी व्यवस्था, मुल्क में अमन-शांति, भाईचारगी के लिए की गई दुआ

रमजान का दूसरा जुमा, मस्जिदों में उमड़ी भीड़

PHOTON NEWS RANCHI : पवित्र रमजान माह के दूसरे जुमे पर मस्जिदों में रोजेदारों- नमाजियों की भीड़ उमड़ पड़ी। सुबह से ही लोग जुमे की नमाज पढ़ने की तैयारी में थे। अधिकांश नमाजी सफेद कपड़े पहने हुए थे, बुजुर्ग और युवा सभी में गजब का उत्साह था। दोपहर 12 बजे के बाद से नहा धो, पाक पवित्र हो सुरमा व इत्र लगाकर मस्जिद जाने वाली सड़कों पर केवल नमाजियों की भीड़ ही दिखाई दे रही थी। नमाज के समय से पूर्व मस्जिद पहुंच कर ही अपना स्थान सुनिश्चित कर लेना चाह रहे थे। वैसे तो मस्जिद प्रबंधन की ओर से नमाज पढ़ने वालों के लिए मुकम्मल व्यवस्था की गई थी। मस्जिद की छतों व सामने की सड़क पर दरी बिछाई गई थी। मस्जिदों में वजु के लिए अलग से पानी की व्यवस्था की गई थी, मस्जिद प्रबंधन की ओर से लोगों से अपील की गई थी कि मस्जिदों के आस पास रहने वाले घरों से ही वजु बना कर आये ताकि दूर दराज से आने वाले लोगों को वजु करने में परेशानी ना हो। विभिन्न मस्जिदों में नमाज के बाद दुआ की गई। जिसमें मुल्क में अमन-शांति, भाईचारगी के लिये दुआ की गई। पुलिस बलों की तैनाती, मस्जिदों के आस पास प्रशासन की ओर से विधि व्यवस्था बनाये रखने के लिये मस्जिदों के आस पास पुलिस बल की तैनाती की गई थी।

नमाज अदा करते मुस्लिम धर्मावलंबी।

इन मस्जिदों में हुई नमाज

अपर बाजार जामा मस्जिद, मेन रोड इकरा मस्जिद, डॉ फतेउल्लाह मस्जिद, अहले हदीस मस्जिद कर्बला चौक, हव्वारी मस्जिद, पुरानी रांची मस्जिद, थड़पखना मस्जिद, बरियातु मस्जिद, हिंदपीढ़ी तस्लीम मस्जिद, बड़ी मस्जिद, छोटी मस्जिद, मक्का मस्जिद, मदीना मस्जिद, मस्जिद ए अकबरिया, मस्जिद ए उमर फारुक, इस्लामी मरकज, हरमू मस्जिद हामीम, पहाड़ी टोला मस्जिद, पुंदाग मस्जिद, कांटा टोली मस्जिद ए असरा, आजाद बस्जिद मस्जिद, पत्थलकुदवा मस्जिद, डोरंडा मस्जिद, कडरु मस्जिद, रहमत कॉलोन मस्जिद, इलाही नगर मस्जिद आदि में रमजा के दूसरे जुमे की नमाज अदा हुई। मौलाना अब्दुल माजिद ने फितरा जकात हर मालदार को देना वाजिब (जरूरी) है। लेकिन किसे दें रहे हैं, उसके बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। सही मायने में गरीब, जरुरतमंद, परेशान हो, उसे ही फितरा-जकात दें। अपने अपने दूर के रिश्तेदार, आस पास देखे, अपने मुहल्ले में देखें, आप अपने रिश्तेदार को दें लेकिन जरूरी नहीं की उन्हें बताएं की यह फितरे-जकात की रकम दिया है।

झारखंड राज्य नेत्र सोसाइटी राष्ट्रीय अवॉर्ड से सम्मानित

PHOTON NEWS RANCHI : कोलकाता में आयोजित अखिल भारतीय नेत्र सोसाइटी के 82वें वार्षिक अधिवेशन के उद्घाटन सम्मारोह में झारखंड राज्य नेत्र सोसाइटी को 100 से 500 सदस्यों की श्रेणी में एजुकेशनल एवं साइंटिफिक गतिविधियों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्टेट सोसाइटी के राष्ट्रीय अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इस सम्मान को चेयरमैन साइंटिफिक कमेटी एवं मैनेजमेंट कमेटी की सदस्य डॉ. भारती कश्यप, मैनेजमेंट कमिटी के सदस्य डॉ. बी.पी. कश्यप, सेक्रेटरी डॉ. एस.के. मित्रा एवं प्रेसिडेंट डॉ. राज मोहन ने संयुक्त रूप से ग्रहण किया। यह सम्मान रामकृष्ण मिशन अस्पताल के सेक्रेटरी स्वामी नित्याकामानंदा, आल इंडिया नेत्र सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ. हरबंश लाल एवं अमेरिका के वरिष्ट नेत्र चिकित्सक डॉ. उदय देवगन के द्वारा प्रदान किया गया डॉ. भारती कश्यप ने बताया की झारखण्ड नेत्र सोसाइटी के बैनर तहत संथाल परगना, पलामू प्रमंडल, उत्तरी छोटानागपुर, दक्षिणी छोटानागपुर, कोल्हान के दूरदराज के क्षेत्रों में नेत्रदान, ग्लूकोमा, मोतियाबिंद और डायबिटिक रेटिनोपैथी के लिए जन जागरूकता अभियान चलाया गया।

BRIEF NEWS

एमबीएनएस इंस्टीट्यूट में मचा होली का धमाल

JAMSHEDPUR : एमबीएनएस ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन में शुक्रवार को होली मिलन हुआ, जिसमें सभी छात्र-छात्राओं ने गीत, संगीत व नृत्य से धमाल मचाया। छात्रों ने फूड स्टॉल भी लगाए थे, जहां सभी ने लजीज व्यंजनों का आनंद उठाया। कार्यक्रम में इंस्टीट्यूट की डायरेक्टर अनुपा सिंह व विवेक सिंह, मार्केटिंग हेड मुकेश कुमार सिंह, उपनिदेशक प्रो. अमरेंद्र कुमार सिंह, प्रभारी प्राचार्य पिंकी सिंह, असिस्टेंट प्रो. सपना कुमारी राय, दीपिका राज, भबतारण भकत, राजेश्वर वर्मा व दीपक सिंह भी शामिल हुए।

लेफ्रीपाड़ा मे सड़क दुर्घटना में 3 की मौत

SUNDARGARH : जिले के लेफ्रीपाड़ा पुलिस स्टेशन सुरुगुड़ा के पास शुक्रवार शाम भीषण सड़क दुर्घटना में एक महिला सहित दो लोगों की मौत हो गई और एक अन्य महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। शाम एक बाइक पर 3 लोग बैठे थे। सुरुगुड़ा के पास सड़क पर खड़े हाइवा ट्रक से बाइक टकरा गई। 2 बाइक सवारों की मौके पर ही मौत हो गई और बाइक पर पीछे बैठे एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। पुलिस घटना की जांच कर रही है।

निश्शक्तों में बांटी गयी होली की खुशियां

JAMSHEDPUR : सोनारी स्थित जीविका स्कूल में शुक्रवार को सामाजिक संस्था राष्ट्रीय जनता संघ द्वारा रंगोत्सव मनाया गया, जिसमें मानसिक निश्शक्त बच्चों व वयस्कों में होली की खुशियां बांटी गई। सभी ने एक-दूसरे को गुलाल लगा कर होली के गानों पर नृत्य भी किया। इस अवसर पर श्याम शर्मा एवं संस्था के संस्थापक शंकर जोशी, आशीष कुमार प्रसाद, ओमप्रकाश, बादल, महावीर, गणेश, रिंकू आदि उपस्थित रहे।

वरिष्ठ राजनेता एवं पूर्व मंत्री डॉ दामोदर राउत का निधन

BHUBANESHWAR : वरिष्ठ राजनेता और पूर्व मंत्री डॉ दामोदर राउत का निधन हो गया। शुक्रवार सुबह 5:23 बजे एक निजी अस्पताल में 81 साल की उम्र में उनका निधन हो गया। दामोदर राउत के बेटे विधायक संवित राउतराय ने यह जानकारी दी। डॉ राउत का इलाज पिछले 18 तारीख से एक निजी अस्पताल में ईलाज चल रहा था। दिल का दौरा पड़ने से दामोदर की हालत गंभीर हो गई। तीन महीने पहले भी डॉ राउत भी बीमार पड़े थे। लीवर में तरल पदार्थ जमा होने के कारण उन्हें मेडिकल में भर्ती कराया गया था। हालांकि, ठीक होने के बाद वह घर लौट आए। दामोदर राउत ओडिशा की राजनीति में बड़े नाम थे। वह पहले जनता दल से और बाद में बीजेडी से विधायक चुने गए और नवीन सरकार में कई बार मंत्री रहे।

औद्योगिक क्षेत्र सहित आसपास के शहरी इलाकों में तेंदुआ का कहर जारी

कांड्रा से आदित्यपुर स्टेशन तक धीमी गति से चलेंगी ट्रेनें

PHOTON NEWS SARAIKELA : पिछले रविवार से आदित्यपुर औद्योगिक क्षेत्र सहित आसपास के शहरी इलाकों में एक जंगली तेंदुआ का कहर जारी है। इस संबंध में गम्हरिया वन परिक्षेत्र पदाधिकारी के मांग पर तेंदुआ की जानमाल की रक्षार्थ दक्षिण पूर्व रेलवे के स्टेशन अधीक्षक ने गम्हरिया से कांड्रा और आदित्यपुर रेलवे स्टेशन के बीच रात्रि में धीमी गति (5 किलोमीटर प्रति घंटे) की रफ्तार से रेलगाड़ी का परिचालन का आदेश दे दिया है।

तेंदुआ के संबंध में डीसी रवि शंकर शुक्ला ने प्रभावित इलाकों के लोगों से सावधानी बरतने और रात में अपने पशु पक्षियों को बंद घरों में रखने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने बताया कि वैसे 3 तीन से तेंदुआ का हलचल शांत है और कहीं से भी उसके चहलकदमी करने की खबर नहीं मिली है। बावजूद इसके जिला प्रशासन और वन विभाग सतर्क है और तेंदुआ के खोज में अलग अलग टीम बनाकर तलाश जारी रखे हुए है।

बाजार में लांच होने जा रही सुधा की सोनपापड़ी, बिस्कुट व नमकीन भी

JAMSHEDPUR : बिहार स्टेट मिल्क को-ऑपरेटिव फेडरेशन लिमिटेड की जमशेदपुर डेयरी सुधा ब्रांड के अंतर्गत दूध, दही व लस्सी के बाद बहुत जल्द सोनपापड़ी, बिस्कुट व नमकीन भी बाजार में लांच किया जाएगा। जमशेदपुर डेयरी के विपणन प्रभारी डी. कुंडू ने बताया कि जमशेदपुर डेयरी से सुधा ब्रांड का काजू कतली, बेसन के लड्डू, पतीसा या सोनपापड़ी, नमकीन, बिस्कुट, आइसक्रीम और सुधा सलिल के नाम से पानी का बोतल भी लांच किया जाएगा। इसकी बानगी बिष्टुपुर के गोपाल मैदान में लगे दस दिवसीय मेला के दौरान पेश की गई, जिसे मेला घूमने आए शहरवासियों ने काफी सराहा।

केएसएमएस के अभिभावकों ने किया प्रदर्शन, एसडीओ से लगाई गुहार

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : इन दिनों शहर के निजी स्कूलों में 11वीं के छात्रों को धड़ल्ले से फेल किया जा रहा है। टैगोर एकेडमी, राजेंद्र विद्यालय, बेल्डीह चर्च आदि के बाद गुरुवार की शाम केएसएमएस के अभिभावकों ने प्रदर्शन किया। जमशेदपुर अभिभावक संघ के अध्यक्ष डॉ उमेश कुमार ने बताया कि शहर के निजी स्कूलों में 9वीं से 11वीं तक के करीब 2000 बच्चों को फेल कर दिया गया है। इतने छात्रों का फेल होने स्कूलों की पढ़ाई पर सवालिया निशान है।

कांग्रेस नेता बबलू झा के नेतृत्व में गए अभिभावकों ने एसडीओ धालभूम पारुल सिंह से कहा कि जो बच्चे ट्यूशन नहीं पढ़ते हैं, उन्हें फेल कर दिया गया है। झा ने बताया कि केएसमएस के लगभग 100 बच्चों को फेल किया गया है। थोड़े से स्वार्थ के लिए छात्रों का भविष्य बर्बाद किया जा रहा है। एसडीओ ने हमें आश्वस्त किया है कि वे पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराएंगी। किसी भी बच्चे के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। दूसरी ओर जमशेदपुर अभिभावक संघ ने भी शुक्रवार को उपायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन किया।

पूर्वांचल के पारंपरिक लोकगीतों पर आधारित कार्यशाला का हुआ समापन

समापन समारोह में दीप प्रज्जवलन करतीं अतिथि व आयोजक।

भोजपुरी लोकगीत प्रस्तुत करतीं गायिका।

PHOTON NEWS GORAKHPUR : चंद्रकांति रमावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज, गोरखपुर में बीएड विभाग और यायावरी वाया भोजपुरी के संयुक्त तत्वावधान में 'पूर्वांचल के पारंपरिक लोकगीतों पर आधारित पांच दिवसीय कार्यशाला का समापन हो गया। समारोह की शुरूआत महाविद्यालय की प्रबंधक डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा, मुख्य अतिथि डॉ मिथिलेश तिवारी, विशिष्ट अतिथि रीना त्रिपाठी आ यायावरी क्लब की हेड श्वेता सुप्रिया ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन से की। डॉ विजयलक्ष्मी मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए उनका परिचय कराया। इस अवसर पर छात्राओं को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ मिथिलेश तिवारी (शीर्ष गायिका) ने कहा कि 'भारत की सांस्कृतिक विरासत की बहुआयामी कलात्मक ऊर्जा अपने विभिन्न रूपों में प्राचीनकाल से वर्तमान तक विद्यमान है।' विशिष्ट अतिथि रीना त्रिपाठी (वरिष्ठ समाजसेवी) ने कहा कि 'पूर्वांचल के पारंपरिक लोकगीतो में अवस्थित सहअस्तिव की भावना का हस्तांतरण अगली पीढ़ी को किन रूपों में हो, इस पर हमें विचार करना होगा तथा लोकगीतों के विकास एवं प्रसार के लिए कार्य करना होगा।'। श्वेता सुप्रिया ने यायावरी क्लब के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए भोजपुरी भाषा के प्रति सबको जाग्रत किया।

इस अवसर पर छात्राओं ने पचरा, कजरी, बारहमासा, सगुन, माटीकोड़, हल्दी, चुमावन, विवाह कन्यादान, सिंदूरदान, नकटा, सोहर, खिलौना, बधाई तथा होली गीत की बहुत सुंदर प्रस्तुति दी। अक्षिता सोलंकी तथा पिकों कुमारी ने पांच दिवसीय कार्यशाला के अनुभव साझा किए। छात्राओं को प्रमाणपत्र वितरित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन अनंत पाठक तथा ऋचा दुबे ने किया। आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ सुमन सिंह ने किया। इस अवसर पर मधु जायसवाल (प्रबंधक गंगा प्रसाद स्मारक इंटर कॉलेज, चोरीचौरा), बीएड विभागाध्यक्ष डॉ अपर्णा मिश्रा, उपप्राचार्य डॉ स्वप्निल पांडेय, मीनी, सोनू किशोर, विषय विशेषज्ञ राजनंदिनी तथा बीएड विभाग से डॉ इतेंद्र धर दूबे, डॉ विकास कुमार श्रीवास्तव, डॉ ममता तिवारी, शैलेंद्र कुमार राव, डॉ सारिका पांडेय, श्वेता सिंह आदि भी उपस्थित थीं।

जमशेदपुर : साहित्यकारों ने बताया अनुवाद विधा की बारीकियों का मर्म

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : शहर की साहित्य, सिनेमा एवं कला की संस्था ह्यसृजन संवादह्ल की 135वीं संगोष्ठी का आयोजन स्ट्रीमयार्ड तथा फेसबुक लाइव पर किया गया। वृहस्पतिवार शाम छह बजे जाने-माने अनुवादक ओमा शर्मा तथा कुशल अनुवादक अमृता बेरा प्रमुख वक्ता के रूप में आमंत्रित थीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नेहा तिवारी ने किया। परिचय का दायित्व कहानीकार गीता दूबे ने लिया तथा वैभव मणि त्रिपाठी ने स्ट्रीमयार्ड संभाला। स्वागत करते हुए ह्यसृजन संवादह्ल कार्यक्रम की संयोजिका व कुशल अनुवादक डॉ. विजय शर्मा ने अनुवादक की चुनौतियों का जिक्र करते हुए कहा कि प्रत्येक रचना की भांति प्रत्येक अनुवाद भी अपनी चुनौतियां साथ लाता है। अनुवाद के लिए दोनों भाषाओं के अलावा दोनों संस्कृतियों का ज्ञान आवश्यक है। उन्होंने वक्ताओं, श्रोताओं, दर्शकों, संचालक, परिचयकर्ता का स्वागत करते हुए कहा कि ह्यसृजन संवादह्ल के मंच से

अमृता बेरा।

ओमा शर्मा।

दोनों अनुवादक प्रश्नोत्तर शैली में अपने-अपने अनुभव और चुनौतियों को सबके साथ साझा करेंगे। गुजरात से ओमा शर्मा एवं दिल्ली से अमृता बेरा ने अपने अनुभव सुनाए।

ओमा शर्मा ने एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि वे औचक इस विधा में प्रवेश कर गए। उन्होंने स्टीफन स्वाइग की ह्यएक अनजान औरत का खतह्ल पढ़ी तो फिर स्वाइग को खोज-खोज कर पढ़ते चले गए। उन्हें लगा कि हिंदी में इस विशिष्ट रचनाकार को आना चाहिए, सो उन्होंने उसका अनुवाद प्रारंभ किया और इस प्रक्रिया में वे वियेना तथा उन स्थानों पर गए, जहां स्वाइग रहा था।

अमृता बेरा ने कहा कि वे जादुई तरीके से अचेतन रूप से इस विधा में शामिल हो गईं। वे कविताएं पढ़ती और रचती थीं। ये कविताएं दूसरी भाषा में उनके मन-मस्तिष्क में चलने लगीं। उनके अनुवाद की किताब भी औचक प्रकाशित हुई। फिर सिलसिला चल निकला। उनके अनुसार अनुवाद से आपका नजरिया, आपकी प्रतिबद्धता पता चलती है। यूरोप और अन्य कई देशों में अनुवाद को बहुत गंभीर ढंग से लिया जाता है, हमें भी इस दिशा में गंभीर होने की आवश्यकता है, ऐसा ओमा शर्मा ने बताया।

दोनों रचनाकारों ने श्रोताओं-दर्शकों के रोचक एवं महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए। वैभव मणि त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ. विजय शर्मा ने दोनों वक्ताओं के वक्तव्य पर टिप्पणी करते हुए उनके भविष्य की शुभकामना की।

कार्यक्रम में सृजन संवाद फेसबुक लाइव के माध्यम में देहरादून से सिने-समीक्षक मनमोहन चड्ढा, बनारस से जयदेव दास, गुजरात से कांजी पटेल, ईशु नानगिया, गोमिया से प्रमोद बर्नवाल, जमशेदपुर से करीम सिटी-मॉसकॉम प्रमुख डॉ. नेहा तिवारी, डॉ. क्षमा त्रिपाठी, डॉ. मीनू रावत, गीता दुबे, आभा विश्वकर्मा, रांची से तकनीकी सहयोग देने वाले ह्ययायावरी वाया भोजपुरीह्ल फेम के वैभव मणि त्रिपाठी, पत्रकार ब्रजेश मिश्रा, गोरखपुर से पत्रकार अनुराग रंजन, बेंगलुरु से पत्रकार अनघा, लखनऊ से डॉ. मंजुला मुरारी, डॉ. राकेश पांडेय, चितरंजन से डॉ. कल्पना पंत आदि उपस्थित थे। ह्यसृजन संवादह्ल की अप्रैल मास की गोष्ठी (136वीं) उपन्यासों पर होगी।

केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में सड़क पर उतरे आप कार्यकर्ता

सड़क पर प्रदर्शन करते आप कार्यकर्ता। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में आम आदमी पार्टी के कार्यकताओं ने शुक्रवार को सड़क पर प्रदर्शन किया।

जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष अभिषेक कुमार के नेतृत्व में साकची मुख्य गोलचक्कर पर आक्रोश व्यक्त किया गया, फिर रैली की शक्ल में डीसी कार्यालय तक पदयात्रा कर अपना जोरदार पक्ष रखा। इसमें प्रदेश के उपसंयोजक प्रेम कुमार व प्रदेश के संयुक्त सचिव रईस अफरीदी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल थे। कार्यकताओं ने एक-एक करके केंद्र सरकार के तानाशाही रवैये पर निशाना साधा और जल्द से जल्द आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को रिहा करने की मांग रखी।

सुंदरनगर चेशायर होम में विशेष बच्चों ने राधा व कृष्ण संग खेली होली, खूब उड़े फूल और गुलाल

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : होली नजदीक आते ही लोगों पर खुमारी छाने लगी है। शुक्रवार को सुंदरनगर स्थित चेशायर होम के विशेष बच्चों (दिव्यागों) ने राधा-कृष्ण, सुदामा और गोपियों संग फूलों और अबीर-गुलाल की होली खेली। होली के गीतों पर स्थानीय कलाकारों के साथ ही विशेष बच्चों तथा उपस्थित लोग भी खूब थिरके। फूलों की पंखुड़ियां बरसाकर और गुलाल उड़ाकर विशेष बच्चे होली के रंग में रंग गए। यह आयोजन हर साल की तरह इस साल भी सिने तारिका माधुरी दीक्षित के फैन पप्पू सरदार की ओर से किया गया। पप्पू ने अपने चिर-परिचित अंदाज जोकर के वेश में विशेष बच्चों संग होली की खुशियां बांटी। साथ ही होली के दिन नशा नहीं करने, हुड़दंग करने से परहेज तथा राधा-कृष्ण की तरह खुशियां बांटने का संदेश दिया।

सुंदरनगर स्थित चेशायर होम में होली खेलते विशेष बच्चे। ● फोटोन न्यूज

इस अवसर पर होली के गीतों पर विशेष बच्चों संग जोकर बने पप्पू सरदार ने जमकर डांस किया। राधा-कृष्ण बने कलाकारों पर फूलों की वर्षा तथा माधुरी दीक्षित की तस्वीर पर अबीर गुलाल लगाकर इस कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। इस अवसर पर चेशायर होम की हेड सिस्टर डेजी, सिस्टर रोजली, स्मिता एवं सरिता ने होली की बधाई देते हुए कहा कि होली के रंग खूब बिखरें, लेकिन भाई चारा के साथ, जोर जबरदस्ती रंग किसी को भी नहीं लगायें।

उन्होंने कहा कि चेशायर होम के विशेष बच्चों को भी पप्पू सरदार के साथ रंग खेलने के लिए इस दिन का इंतजार रहता हैं। राधा-कृष्ण बने कलाकारों ने भी होली की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि चेशायर होम में विशेष बच्चों के बीच पहली बार कार्यक्रम कर खुशियां बांट रहे हैं, जिसका सारा श्रेय समाजसेवी पप्पू सरदार को जाता हैं। पप्पू सरदार की ओर से यहां के बच्चों के बीच सुबह का सूखा नाश्ता एवं दोपहर का भोजन (लजीज व्यंजन) वितरण किया गया। तीन घंटे के इस कार्यक्रम में सभी ने जमकर लुत्फ उठाया। इस अवसर पर चेशायर होम की सभी सिस्टर एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा में स्वच्छता शपथ व सफाई अभियान का हुआ आयोजन

कार्यक्रम में उपस्थित राउरकेला संयंत्र के लोग। ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS ROURKELA : राउरकेला इस्पात संयंत्र की विभिन्न इकाइयों में शुक्रवार को स्वच्छता शपथ ग्रहण समारोह और सफाई अभियान में वरिष्ठ अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने भाग लिया।

कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) के सम्मेलन कक्ष में एक संकल्प ग्रहण किया गया, जिसमें कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन) तरुण मिश्र ने अभियान का नेतृत्व किया और ओड़िया, हिंदी एवं अंग्रेजी में शपथ दिलाई। इस अवसर पर सामान्य प्रशासन के 100 से अधिक अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

यातायात और कच्चा माल विभाग में आयोजित एक अन्य शपथ ग्रहण समारोह में महा प्रबंधक प्रभारी हीरालाल महापात्र ने समारोह की अध्यक्षता की। इसी तरह आधुनिकीकृत फायर स्टेशन पर अग्निशमन सेवा विभाग द्वारा भी स्वच्छता शपथ ली गई। संकल्प महा प्रबंधक जेबी पटनायक द्वारा दिलाई गई।

जिला पतंजलि योग परिवार की ओर से सामुदायिक केंद्र प्रांगण में मार्गदर्शन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

स्वस्थ जीवन के लिए योग, पंच यज्ञ, ध्यान जरूरी : सुधांशु

PHOTON NEWS SUNDARGARH : जिला पतंजलि योग परिवार की ओर से शुक्रवार शाम राउरकेला सेक्टर-8 सामुदायिक केंद्र प्रांगण में राज्य प्रमुख अक्रूर मार्थ की देखरेख में मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रदेश प्रभारी पदाधिकारी सुधांशू शेखर का पुष्प-चंदन से स्वागत एवं सम्मान किया गया। उन्होंने वैदिक रीति रिवाज से मंत्रोच्चारण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने मार्गदर्शन में योग, पंच यज्ञ, ध्यान, स्वाध्याय को स्वस्थ एवं स्वस्थ जीवन जीने का मार्गदर्शक बताया। योग अभ्यास से शारीरिक कल्याण, मानसिक स्थिरता, वैदिक विकास, आध्यात्मिक विकास सभी संभव हैं। उन्होंने ऊपर ईश्वर के गुणों और विशेषताओं का वर्णन किया है। जो अपने मन पर नियंत्रण कर सकता है वही सच्चा योगी बन सकता है।

मार्गदर्शन कार्यक्रम में उपस्थित पतंजलि योग परिवार के लोग। ● फोटोन न्यूज

उन्होंने कहा कि मानव जीवन का लक्ष्य विश्व कल्याण के साथ-साथ मोक्ष की प्राप्ति भी है। उन्होंने कहा कि हमेशा एक अच्छा इंसान बनने का प्रयास करके जीवन को सफल बनाने का प्रयास करें। इस कार्यक्रम में जिला महिला पर्यवेक्षक नितंबनी स्वाई, जिला बीएसटी पर्यवेक्षक नरेंद्र कुमार बेहरा, जिला पी.वाई एस प्रभारी प्रदीप्त साहू, जिला मीडिया प्रभारी गंगाधर दास, जिला सोशल मीडिया महिला प्रभारी आरती कर, जिला बीएसटी प्रमुख आरती साहू, जिला प्रमुख डी. एन पांडा मंचासीन थे। गतिविधियों की इस श्रृंखला में पदाधियारी संद्यारानी साहू, कौशल्या पुष्टि, वरिष्ठ योग शिक्षिका अनुसूया बारिक, तपस्विनी साहू, कुंतला स, रस्मिरेखा बेहरा, कंका लता जेना, उर्मिला प्रधान, रेनू तांती, सविता प्रधान, ममता राउत, लिपिना विश्वाल, सुभद्रा साहू, आशालता साहू सहित सैकड़ों साधिकाएं उपस्थित थीं। अंत में जिला मीडिया पदाधिकारी गंगाधर दास ने जिले की ओर से सभी को धन्यवाद दिया।

म्यूजिक सर्किल का 47वां बसंत महोत्सव आयोजित, गीत-संगीत की सजी महफिल

PHOTON NEWS ROURKELA : म्यूजिक सर्किल के प्रसिद्ध कला, नृत्य और सांस्कृतिक विद्यालय के 47वें वसंत महोत्सव मनाया गया। आरसीसीआई के अध्यक्ष सुनील कयाल ने मुख्य अतिथिके रूप में भाग लिया और दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। उन्होंने अभिन्न सुंदर गोटीपुआ नृत्य परिषद (रघुराजपुर, हेरिटेज विलेज, पुरी) द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम गोटीपुआ नृत्य का भी आनंद लिया। गुरु लक्ष्मण मोहराना द्वारा निर्देशित नृत्य और गुरु बसंत कुमार मोहराना का संगीत की प्रस्तुति हुई। गजेंद्र मुर्मू एंड ग्रुप के आदिवासी नृत्य प्रस्तत हुआ। कलाकारों और भाग लेने वाले बच्चों को प्रमाण पत्र भी वितरित हुए।

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथि व अन्य। ● फोटोन न्यूज

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि डॉ पीसी. महापात्रा, मुख्य वक्ता देवव्रत पटनायक प्रताप कुमार रे ,अभय कुमार दास , राकेश कुमार सिंह, आरसीसीआई आईटी सचिव प्रमोद कुमार नटतुल्य, एंकर अनिल मल्लिक, प्रिंसिपल बिबेकानंद पांडा, म्यूजिक सर्किल के आयोजन सचिव संतोष मल्लिक और सैकड़ों अभिभावकों के साथ सभी अधिकारी अतिथि के रूप में वहां मौजूद थे।

रोहिणी बोलीं-जनता के आदेश पर आई हूं छपरा से लड़ेंगी चुनाव

बिहार। लालू यादव की दो बेटियां लोकसभा चुनाव लड़ने जा रही हैं। अपनी एक किडनी डोनेट कर पिता को नई जिंदगी देने वाली रोहिणी आचार्य अब लालू की राजनीतिक विरासत संभालने के लिए तैयार हैं। सबकुछ ठीक रहा तो वह छपरा (सारण) से चुनाव मैदान में उतरेंगी। लालू की बड़ी बेटी मीसा भारती पाटलिपुत्र सीट पर फिर चुनाव लड़ेंगी। सिंगापुर में रहने वाली रोहिणी के चुनाव लड़ने के कयास कई दिनों से लगाए जा रहे थे, लेकिन अब लालू परिवार के सूत्रों ने दैनिक भास्कर से इसकी पुष्टि कर दी है। सूत्रों के मुताबिक, रोहिणी को पिछले एक महीने से छपरा,

काराकाट, पश्चिमी चंपारण, मधेपुरा और पाटलिपुत्र जैसी सीटों से चुनाव लड़ने का ऑफर आया हुआ है। खुद लालू यादव बेटी को चुनाव लड़ाने के इच्छुक हैं और इसकी जानकारी रोहिणी आचार्य को भी दे दी गई है। रोहिणी भी चुनाव लड़ना चाहती हैं, लेकिन पारिवारिक मजबूरियों की वजह से वो पशोपेश में हैं। वह खुलकर कुछ कह नहीं पा रही हैं। इसको लेकर उनके पति और लालू परिवार में कई दौर की बात भी हो चुकी है। ससुराल से चुनाव लड़ने की हरी झंडी भी मिल चुकी है। हालांकि लालू यादव ने रोहिणी के लिए सीट अभी फाइनल नहीं की है, लेकिन रोहिणी छपरा सीट से चुनाव लड़ना चाहती हैं। छपरा लालू यादव की कर्म भूमि है और रोहिणी भी अपने राजनीतिक करियर की शुरूआत वहीं से करना चाहती हैं। हालांकि, सीट का फैसला लालू यादव करेंगे, लेकिन चुनाव लड़ने का अंतिम फैसला खुद रोहिणी को ही करना है। लालू-राबड़ी और तेजस्वी भी रोहिणी को चुनाव लड़ने के लिए हौसला बढ़ा रहे हैं। रोहिणी सिंगापुर में रहती हैं, लेकिन बिहार की राजनीति में सोशल मीडिया के जरिए लगातार बयान देती रहती हैं। उन्होंने भास्कर से बातचीत में कहा कि लोग राजनीति चुनते हैं, लेकिन राजनीति ने उन्हें चुना है। रोहिणी के पति समरेश सिंह सिंगापुर में ही जॉब करते हैं। चूंकि, रोहिणी के तीनों बच्चे अब बड़े हो गए हैं, इसलिए उनका मानना है कि अब वो चुनावी राजनीति में कदम रख सकती हैं। छपरा लालू यादव की पारंपरिक सीट रही है, लालू यादव भी इसे सेफ मानते हैं। हालांकि पिछले 2 चुनावों में लालू परिवार को यहां हार का सामना करना पड़ा है। इधर, लालू यादव की सबसे बड़ी बेटी और राज्यसभा सांसद मीसा भारती ने पाटलिपुत्र सीट पर दावा ठोंक दिया है। पाटलिपुत्र सीट पर फखऊ को मिल रही लगातार हार मिल रही है। इसको देखते हुए ये कयास लगाए जा रहे थे कि इस बार लालू यादव पाटलिपुत्र से रीतलाल यादव या भाई वीरेंद्र को टिकट दे सकते हैं। दोनों ही फिलहाल फखऊ से विधायक हैं। गुरुवार को लालू यादव से मिलकर राबड़ी आवास से निकले रीतलाल यादव ने पाटलिपुत्र से चुनाव लड़ने की उनकी इच्छा के सवाल पर मीडिया से कहा- 'हम नहीं चाह रहे हैं, राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू यादव चाह रहे हैं कि हम पाटलिपुत्र क्षेत्र से चुनाव जीतें। जैसा वो सोचेंगे, उसी हिसाब से हम लोगों को चलना है।' यानी रीतलाल यादव दावा कर रहे हैं कि उन्हें लालू यादव की तरफ से पाटलिपुत्र सीट के लिए हरी झंडी मिल गई है, लेकिन इससे इतर मीसा भारती पाटलिपुत्र से अपना दावा ठोंक रही हैं। मीसा से जुड़े करीबी सूत्रों ने दैनिक भास्कर से बात करते हुए जोर देते हुए कहा कि वो चुनाव लड़ेंगी और पाटलिपुत्र सीट से ही लड़ेंगी। मीसा इससे पहले भी 2014 और 2019 में पाटलिपुत्र सीट से फखऊ के टिकट पर चुनाव लड़ चुकी हैं, लेकिन दोनों ही बार उन्हें इखढ के रामकृपाल यादव से हार का सामना करना पड़ा था।

संक्षिप्त डायरी

पवन सिंह का तलाक होगा या सुलह हो जाएगी 13 मार्च की सुनवाई में नहीं आए थे

बिहार। भोजपुरी सुपरस्टार पवन सिंह और उनकी पत्नी के तलाक मामले की सुनवाई आज कोर्ट में होनी है। 13 मार्च को कोर्ट में सुनवाई के दौरान दोनों उपस्थित नहीं हुए थे। इसके बाद कोर्ट ने 22 मार्च को अगली तारीख रखी थी। मामले में ज्योति सिंह के वकील विष्णुधर पांडेय ने बताया कि आज पवन सिंह और ज्योति सिंह तलाक मामले की सुनवाई होनी है। वकील विष्णुधर पांडेय ने बताया कि अगर वो लोग आ जाते है और मिल जाते है तो लिखा पढ़ी करके कोर्ट में डाल दिया जाएगा। अगर नहीं आते है तो केस में दोबारा डेट पड़ेगी। एंटी मेंटेनेंस ऑर्डर के लिए दोनों मिल गये। दोनों नजदीक आ गये। अभी तक हम लोग को यहीं पता चला है। ज्योति सिंह से अभी तक हमारी बात नहीं हुई है। संभावना है कि दोनों आज कोर्ट में पेश हो जाएं।

दोनों पक्षों के बीच चली जमकर लाठी डंडे

भागलपुर। के सुलतानगंज थाना क्षेत्र के मसदी पंचायत के शिवनंदनपुर गांव में देर रात हुई तेज बारिश का पानी जाने से दो पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई। घटना में एक पक्ष से तीन लोग गंभीर रूप से घायल है जिसे प्राथमिक उपचार के लिए सुल्तानगंज रेफरल अस्पताल में भर्ती कराया गया। घायल महिला की स्थिति गंभीर को देखते हुए डॉक्टरों ने उसे जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज अस्पताल(मायागंज) रेफर कर दिया। घटना के संबंध में बताया जा रहा है कि बीती रात हुई बारिश से जमा पानी दूसरे पक्ष के घर की ओर चला गया। इसके बाद दोनों के बीच कहासुनी हुई और मामला मारपीट में तब्दील हो गया। हालांकि, पूरे घटना क्रम में एक पक्ष से तीन लोग गंभीर रूप से घायल है। जबिक दूसरे पक्ष के दो लोगों को आंशिक रूप से चोट लगी है। घायल विमल यादव ने बताया कि पड़ोस के घर में बारिश का पानी चले जाने पर दूसरे पक्ष के अमित यादव, विनोद यादव, वकील यादव निर्मला देवी के द्वारा गाली गलौज करने लगा। इसके बाद हम लोगों ने इसका विरोध किया तो लाठी-डंडे से मारपीट करना शुरू कर दिया। जिसमें मां, पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गई। वहीं, दूसरे पक्ष के अमित यादव ने बताया कि बारिश के जमा पानी विमल यादव के द्वारा मेरे घर के तरफ निकल रहा था। जिससे आने-जाने में हम लोगों को परेशानियों हो रही थी, जब इसे मना किया तो यह लोग नहीं माने जबरदस्ती मेरे घर के तरफ निकाल दिया और गाली गलौज करने लगा। इधर, घटना की जानकारी स्थानीय पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने देर रात प्राथमिक की दर्ज करते हुए आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

सैकड़ों छात्र-छात्राएं और पदाधिकारी समाजसेवी हुए शामिल वोट देने के लिए किया जागरूक

बिहार। दिवस के अवसर पर आज कैमूर डीएम सावन कुमार के नेतृत्व में समाहरणालय भभुआ से जगजीवन मैदान भभुआ तक जागरूकता रैली निकाली गई। इस रैली में स्कूल के बच्चे-बच्चियों के साथ युवा समाजसेवी ग्रामीण और जिले के सभी विभागों के पदाधिकारी मौजूद थे। इस रैली में कई नारे लगाए जा रहे थे जैसे वोट हमारा है अधिकार इसको करें न बेकार, पहले मतदान फिर जलपान। सभी लोगों को शपथ भी दिलाया गया कि मतदान के दिन निर्भीक और निष्पक्ष होकर मतदान करेंगे और दूसरों को भी मतदान करने के लिए प्रेरित करेंगे। छात्रा मंजू कुमारी ने बताया कि बिहार दिवस के अवसर पर लोगों को मतदान करने के लिए प्रेरित करने के लिए रैली निकाली है। आप लोग वोट दें, किसी भी लालच में न पड़ें। निष्पक्ष मतदान करें यही संदेश हम लोग दे रहे हैं। यह रैली जिला प्रशासन की तरफ से जागरूकता रैली निकाली गई है। कैमूर डीएम सावन कुमार ने बताया कि बिहार दिवस के शुभ अवसर पर आज मतदान जागरूकता रैली निकाली गई है। सासाराम लोकसभा में एक जून को मतदान होना है, उसी को लेकर जागरूकता रैली कलेक्ट्रेट भभुआ से जग जीवन मैदान भभुआ तक निकाली है। पूरे रास्ते में मतदान को लेकर जागरूक किया गया है। इसके माध्यम से अपील की जा रही है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में हमारे जो मतदाता बंधु हैं।

आप 1 जून को मतदान केंद्र पर जाइए और अपने इस देश के नव निर्माण के लोकतंत्र में वोट डालकर अपना मतदान देकर राष्ट्र निर्माण में सहयोग करें। कैमूर जिला में 15000 से ज्यादा नए मतदाता को जोड़ा गया है, उनसे भी अपील होगा जिस तरह से आप लोग फेसबुक इंस्टाग्राम चलाने में लगातार फोटो अपलोड करने में लगे हैं, आप भी वोट डालकर अपना फोटो अपलोड करिए जो बेस्ट होंगे उनको प्राइस भी हम लोग देंगे। इसके साथ ही युवा अपने दोस्तों को प्रेरित करें।

रामनगर में मनाया गया शहादत दिवस

बगहा। के रामनगर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। यह कार्यक्रम गुरुवार की रात रामनगर संस्कृत स्कूल परिसर में क्रांतिकारी और वीर सपूतों की शहादत दिवस के उपलक्ष में शाहिद भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के नाम आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि नगर सभापति गीता देवी, उपसभापति श्वेता सिंह आदि ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम के दौरान स्कूली बच्चों द्वारा सांस्कृतिक और देश भक्ति कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। इसकी लोगों ने काफी सराहना की है। साथ ही भक्ति संगीत और देशभक्ति गीतों पर बच्चों ने नृत्य प्रस्तुत किया। वहीं, तीनों शहीदों के तेल चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें याद किया गया। डॉक्टर किरण शंकर झा ने बताया कि भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव भारत के वे सच्चे सपूत थे, जिन्होंने अपनी देशभक्ति और देशप्रेम को अपने प्राणों से भी अधिक महत्व दिया और मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर कर गए। देश के लिए लड़ते हुए अपने प्राणों को हंसते-हंसते न्यौछावर करने वाले तीन वीर सपूतों का शहीद दिवस है। यह दिवस न केवल देश के प्रति सम्मान और हिंदुस्तानी होने वा गौरव का अनुभव कराता है, बल्कि वीर सपूतों के बलिदान को भीगे मन से श्रद्धांजलि देता है। उन अमर क्रांतिकारियों के बारे में आम मनुष्य की वैचारिक टिप्पणी का कोई अर्थ नहीं है। भगत सिंह ने अपने कम उम्र में वैचारिक क्रांति की जो मशाल जलाई, उसे हमेशा याद किया जाएगा। कार्यक्रम के दौरान दिल जीत लिया। विश्वजीत सराफ आदि ने बढ़कर हिस्सा लिया।

साथ ही इस कार्यक्रम के दौरान शिक्षक दिनेश शुक्ला, डॉक्टर गौरव झा, समाजसेवी विजय कुमार गुप्ता, प्रेमा रानी सहित कई अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

सुपौल में कोसी नदी पर बने रहे पुल का गार्डर गिरा

सुपौल। में कोसी नदी पर बन रहे पुल का गार्डर गिर गया। हादसे में कई मजदूर दब गए। इनमें से एक मजदूर की मौत हो गई। घटना के बाद इलाके में हड़कंप मच गया। आसपास के लोगों की भीड़ लग गई। स्थानीय लोगों ने घायल सात मजदूरों को अस्पताल में भर्ती करवाया। इधर, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई है। बताया जा रहा है कि सुपौल के बकोर और मधुबनी जिले के बीच यह पुल बन रहा है। सुबह सात बजे अचानक पुल के पिलर

नंबर 50, 51 और 52 के गार्डर भरभरा कर गिए गए। इधर, स्थानीय लोगों का कहना है कि गार्डर के नीचे करीब 15 मजदूरों के दबने की आशंका है। इनमें से आठ लोगों को अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। घटना के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है। उनका कहना है कि हमलोगों ने कहा था कि पुल की गुणवत्ता में काफी कमी है। हमलोगों ने इसका विरोध भी किया। लेकिन, पुल निर्माण कंपनी ने ध्यान नहीं दिया। वहीं सुपौल के डीएम कौशल कुमार ने कहा कि भेजा-बकौर के बीच मरीचा के पास एक निमार्णाधीन पुल का एक हिस्सा गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई और नौ घायल हो गए। मामले की जांच चल रही है। निर्माण कार्य में लगी कंपनी से संपर्क किया जा रहा है। आगे की कार्रवाई चल रही है। केंद्र सरकार के महत्वपूर्ण भारतमाला प्रोजेक्ट के तहत देश के सबसे लंबे पुल का निर्माण हो रहा है।बाद कंपनी के अधिकारी और इंजीनियर मौके पर नहीं आए।

नकली कीटनाशक के साथ पिता-बेटा गिरफ्तार छिड़काव के बाद बंजर की गई थी शिकायत

पूर्णिया। में पिछले 6 महीने से धड़ल्ले से डुप्लीकेट कीटनाशक बनाने का कारोबार चल रहा था। एक मकान में अवैध रूप से कीटनाशक दवाई तैयार किया जाता और फिर मनमाना कीमतों पर उसे बेच दिया जाता था। इसके छिड़काव से ही खेतों के बंजर होने की शिकायत आ रही थी। सहायक निदेशक पौधा संरक्षक और मुफस्सिल थाना की पुलिस ने संयुक्त छापेमारी करते हुए एक मकान से डुप्लीकेट कीटनाशक की पैक्ड बोतल, खाली बोतल, रैपर और ढक्कन बरामद किया है। पुलिस ने

डुप्लीकेट कीटनाशक दवाई के काले कारोबार में शामिल पिता और बेटे को गिरफ्तार किया है। पूरा मामला मुफस्सिल थाना क्षेत्र की है। ज्वाइंट रेड में पुलिस के हत्थे चढ़े आरोपियों की पहचान मुफस्सिल थाना क्षेत्र के रानीपतरा बाजार स्थित स्टेशन रोड निवासी टुनटुन साह(42) और उनके बेटे किशन कुमार साह (15) के रूप में की गई है। घटना की जानकारी देते हुए सहायक निदेशक पौधा संरक्षण के जय किशन कुमार ने बताया कि उन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि पिछले 6 महीने से रानीपतरा बाजार स्टेशन रोड स्थित एक मकान में अवैध रूप से डुप्लीकेट कीटनाशक दवाई का तैयार किए जाने का कारोबार चल रहा है। मिली गुप्त सूचना पर एक विशेष टीम गठित कर छापेमारी की गई। छापेमारी के क्रम में टुनटुन साह के घर से कीटनाशक की खाली बोतल 1330, पैक्ड बयोबिटा कंपनी का डुप्लीकेट बोतल 523 पीस, पैक्ड नॉमिनी गोल्ड कंपनी का 90 पीस, डुप्लीकेट रैपर 13 हजार पीस, बोतल में लगने वाला ढक्कन 400 पीस बरामद किया। छापेमारी दल की टीम बरामद खेप को जब्त कर लिया है। बरामद डुप्लीकेट कीटनाशक के संबंध में कंपनी के शिकायत मिल रही थी। जिसके बाद जिला कृषि पदाधिकारी ने एक टीम गठित किया। टीम के सदस्य और मुफ्फसिल थाना के सहयोग से छापेमारी की गई। इस रेड में टुनटुन साह के शख्स के घर से तैयार की गई है। किशन कुमार को गिरफ्तार किया गया है।

किसान-पुलिस में हुई थी झड़प धारा 144 का उल्लंघन और फायरिंग का लगाया है आरोप

बिहार। चौसा पावर प्लांट के पास पुलिस और किसान में हुई झड़प के बाद पुलिस ताबड़तोड़ कार्रवाई कर रही है। धरना स्थल और गांव से मारते पीटते 27 लोगों को गिरफ्तार कर कोर्ट में प्रस्तुत करने का काम किया गया है। पुलिस ने इस झड़प और गांव में घुस ग्रामीणों को मारने और पीटने, घरों के सामान को तोड़फोड़ करने के बाद 50 लोगों पर नामजद और 200 लोगों पर एफआईआर कर आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है। पुलिस ने अब तक पांच महिलाओं समेत 27 लोगों को

गिरफ्तार करने की बात कही है। सभी लोगों के मेडिकल जांच के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई में जुटी है। पुलिस द्वारा जानलेवा हमला, 144 धारा का उल्लंघन फायरिंग आदि का आरोप लगाया गया है।बता दें कि बुधवार की सुबह सदर एसडीपीओ धीरज कुमार के नेतृत्व में एक पुलिस टीम विभिन्न मांगों को लेकर धरना दे रहे किसानों को आदर्श आचार संहिता के कारण हटाने के लिए पहुंचे थे। इस दौरान पुलिस और धरना दे रहे किसानों के बीच झड़प हो गई। कहा जा रहा कि किसानों के बीच बैठे कुछ असामाजिक तत्वों ने पुलिस पर पथराव और फायरिंग की। हालांकि जिला प्रशासन और किसानों के बीच इस झड़प में 20 पुलिसकर्मी तो 200 से अधिक किसान जख्मी हैं। पुलिस ने गांव में जमकर तांडव मचाया। पुलिस ने ग्रामीणों को जमकर पीटा। कई लोगों को गिरफ्तार भी किया जिसका प्रमाण के रूप में कई वीडियो भी सामने आ रहे हैं। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक राज को गिरफ्तार कर लिया।

गिरफ्तार लोग कैसे हैं और कहां हैं, इसे जानने के लिए उनके परिजन पूरी रात परेशान रहे। एक ग्रामीण ने बताया कि कई लोग पुलिस के मार से जख्मी भी हुए थे, जिन्हें पुलिस अपने साथ ले गई थी। परिजन परेशान रहे।

दूसरे दिन भी पटना का 5 डिग्री गिरा पारा वैशाली रहा सबसे गर्म

बिहार। के सभी जिलों में आज से अगले पांच दिनों तक मौसम सामान्य बना रहेगा है। राजधानी और आसपास के इलाकों में बीते तीन दिनों से हो रही रुक रुक कर हो रही वर्षा पर गुरुवार को विराम लग गया। पटना व आसपास इलाकों में गुरुवार को आंशिक बादल छाए रहे। वहीं उत्तरी भागों के कुछ स्थानों पर मेघ गर्जन के साथ हल्की वर्षा दर्ज की गई। मौसम में हुए बदलाव के कारण इसका प्रभाव प्रदेश के तापमान पर भी पड़ा है। दूसरे दिन भी पटना के अधिकतम तापमान में सामान्य से 5 डिग्री गिरावट के साथ यह 25.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

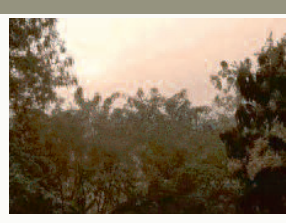

वहीं 28.9 डिग्री सेल्सियस के साथ वैशाली में सर्वाधिक अधिकतम तापमान दर्ज किया गया। मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार अगले पांच दिन तक मौसम में विशेष परिवर्तन नहीं होगा। पिछले कुछ दिनों से बिहार के अधिकतर जिलों में बारिश होने से किसानों की परेशानी बढ़ गई है। बे मौसम बारिश होने से जहां उन्हें झेलना पड़ सकता है।

तीन दोस्त बाइक से घटना को देने जा रहे थे अंजाम

भोजपुर। पुलिस ने बड़ी आपराधिक वारदात को अंजाम देने जा रहे एक बदमाश को हथियार के साथ गिरफ्तार किया है। इसके पास से एक देसी पिस्टल और एक अपाचे बाइक बरामद हुआ है। पकड़ा गया बदमाश बड़हरा थाना क्षेत्र के पड़रिया गांव निवासी अजय सिंह उर्फ छोटेलाल सिंह है। पुलिस ने इसे बड़हरा थाना क्षेत्र अंतर्गत बड़हरा तीन मुहान के पास से गिरफ्तार किया है। इधर, पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार ने बताया कि इसे लेकर आर्म्स एक्ट के तहत 3 के विरुद्ध प्राथमिक की की गई है। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि बड़हरा तीन मुहान के पास एक बाइक पर सवार तीन बदमाश अवैध हथियार लिए हुए किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने जा रहे हैं।

अपराधियों गिरफ्तारी के लिए बड़हरा थानाध्यक्ष संजय कुमार के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। छापामारी के दौरान बाइक से बार अपराधी पुलिस को देखकर भागने लगे, इसके बाद पुलिस ने खदेड़कर बदमाशों में से एक अजय सिंह को गिरफ्तार किया। जबकि दो साथी भाग निकलने में सफल हो गए हैं। जल्द ही दोनों की भी गिरफ्तारी कर ली जाएगी । एसपी प्रमोद कुमार ने बताया कि वंचित आरोपितों की गिरफ्तारी एवं शराब बरामदगी को किया गया है। पुलिस की हत्या चढ़े है ।

मिलन समारोह में प्रदेश अध्यक्ष नहीं दिखे कभी विरोध करने पर बिहार प्रभारी हटाए गए थे

बिहार। पप्पू यादव अपनी पार्टी जाप के साथ कांग्रेस में शामिल हो गए। इससे बिहार कांग्रेस में उफान दिख रहा है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह समेत कई कांग्रेसी नाराज हैं। अखिलेश की तो नाराजगी ऐसी थी कि वह दिल्ली में आयोजित विलय कार्यक्रम में शामिल ही नहीं हुए। ना ही इस पर कुछ बोलना जरूरी समझा। पटना में मीडिया से किनारा करते दिखे। पप्पू यादव को पता था कि अखिलेश नहीं चाहते कि वे कांग्रेस में आएं। इसलिए पप्पू यादव ने अखिलेश का नाम नहीं लिया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व बिहार प्रदेश अध्यक्ष अनिल शर्मा ने बुधवार और गुरुवार को दोनों दिन सोशल मीडिया पर

अपनी तीखी नाराजगी जाहिर की। पप्पू यादव एक एग्रेसिव यादव नेता हैं। उनके आने से बिहार कांग्रेस के नेताओं में डर भी है। कभी पप्पू यादव की एंट्री के सवाल पर ही कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष और बिहार प्रदेश प्रभारी हटाए गए थे।कांग्रेस में खटपट पर राजनीतिक विश्लेषक प्रवीण बागी कहते हैं कि पप्पू यादव ने लालू प्रसाद के प्रतिनिधि के तौर पर कांग्रेस जॉइन किया। कांग्रेस में शामिल होने के पहले पप्पू यादव, लालू प्रसाद और तेजस्वी यादव से मिले। लालू प्रसाद के लाइन अप के बाद ही वे कांग्रेस में गए। कांग्रेस नेतृत्व या पप्पू यादव को अखिलेश से बात करनी चाहिए थी। इसका असर चुनाव में दिखेगा और कांग्रेस में गुटबाजी होगी। हालांकि पूर्णिया के इलाके में असर होगा, पर पप्पू के खिलाफ वाले कांग्रेसी घर बैठ जाएंगे। कांग्रेस उलझन में थी। लालू प्रसाद के दबाव में आ गई पार्टी। लालू प्रसाद ने पप्पू यादव को आरजेडी में शामिल नहीं करवाया, कांग्रेस में शामिल करवा दिया। प्रवीण बागी आगे कहते हैं कि बिहार कांग्रेस के सुपर बॉस लालू प्रसाद आज से नहीं बल्कि पिछले 20 वर्षों से हैं। वही प्रदेश अध्यक्ष बनवाते हैं, सीटें तय करते हैं। एक बार सोनिया गांधी ने रिश्ता तोड़ लिया था, लेकिन कोई रास्ता नहीं दिखा तो साथ आए। सांसदों की विधायकी वाले बिल को राहुल गांधी ने फाड़ दिया था। लालू प्रसाद के प्रति ही वह गुस्सा था। मंत्रिमंडल ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को बदलने का फैसला भी ले लिया था। राहुल के नकारने की वजह से कानून सदन में नहीं बन सकता। नतीजा लालू को जैसे रांची सीबीआई कोर्ट से सजा हुई तो उनकी सांसदी चली गई। अब तो राहुल, लालू से मटन बनाने की रेसिपी सीख रहे हैं। बदला हुआ माहौल है। पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अनिल शर्मा कहते हैं कि पप्पू यादव की पहचान किस रूप में है यह सभी लोग जानते हैं। सिर्फ एक क्षेत्र से राजनीति नहीं चलती। 2010 में जब जगदीश टाइटर बिहार कांग्रेस प्रभारी थे, उस समय पप्पू यादव को कांग्रेस में वे एंट्री करवाना चाहते थे, लेकिन मैंने विरोध कर दिया। काफी विवाद हुआ। इसके बाद मुझे बिहार कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष और जगदीश टाइटलर को बिहार कांग्रेस प्रभारी के पद से हटा दिया गया था। शीर्ष नेतृत्व को कार्यकताओं सहित बिहार के वरिष्ठ नेताओं की जन भावना देखनी चाहिए थी। वे कहते हैं कि लालू प्रसाद कांग्रेस के पॉलिटिकल सहयोगी नहीं हैं, बल्कि बेसहारा रहे हैं।

आयोग की चिंता

सर्वोच्च न्यायालय ने बिल्कुल सही कहा है कि वह इस मुकाम पर चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति संबंधी कानून पर रोक नहीं लगा सकता, क्योंकि इससे अराजकता पैदा हो जाएगी। दो चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के दूसरे ही दिन चुनाव तिथियों की घोषणा हुई है और अब नियुक्ति संबंधी कोई भी विवाद चुनाव प्रक्रिया ही नहीं, पूरी राजनीति को जटिल बना सकता है। अतः अदालत ने कोई जल्दी न दिखाते हुए मामले की अगली सुनवाई 5 अगस्त को करने का फैसला किया है, तब तक नई सरकार अपना काम शुरू कर चुकी होगी। दरअसल, विवाद इस बात पर है कि नए कानून के तहत चुनाव आयुक्तों के चयन से प्रधान न्यायाधीश को अलग कर दिया गया है, उनकी जगह एक केंद्रीय मंत्री चयन समिति में शामिल किए गए हैं। चुनाव आयोग में दोनों नई नियुक्तियां प्रधान न्यायाधीश की मर्जी के बिना हुई हैं। यह उचित है या नहीं, इस पर अंतिम फैसला गौरतलब होगा। फिलहाल सर्वोच्च न्यायालय का रुख सरकार के अनुरूप ही है। आयुक्तों के चयन के संबंध में निश्चित कानून की कमी थी और अब जब सरकार ने कानून बना लिया है, तब इस कानून पर किसी भी तरह से सवाल उठाना सही नहीं है। हां, इस चयन प्रक्रिया के गुण-दोष पर न्यायालय विचार कर सकता है और यही कोशिश दिख रही है। न्यायालय को यह भी लगा है कि चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति के लिए चयन समिति को उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि को समझने के लिए उचित समय दिया जाना चाहिए था। लोग अभी भूले नहीं हैं कि चयन में जल्दबाजी को लेकर चयन समिति के एक सदस्य कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने भी कड़ी आपत्ति जताई थी। चुनाव आयुक्तों की जल्द नियुक्ति जरूरी थी, लेकिन चयन की प्रक्रिया को लेकर कम से कम किसी सदस्य में असंतोष का भाव नहीं होना चाहिए। यह कोई नहीं चाहेगा कि कोई अयोग्य अधिकारी चुनाव आयुक्त नियुक्त हो, अतः आगे सावधानी बरतने की जरूरत है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, दीपांकर दत्ता और ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने आयुक्तों की नियुक्ति को चुनौती देने वाली याचिकाओं को खारिज कर दिया है, मगर चयन में बरती गई कमियों की ओर इशारा भी कर दिया है और केंद्र सरकार से जवाब भी मांगा है। चयन में ज्यादा पारदर्शिता और चयन समिति की बैठकों को गंभीरता से लेने की जरूरत है, ताकि किसी तरह की शिकायत की गुंजाइश न रहे। अदालत ने दोहराया है कि चुनाव आयुक्तों का चयन स्वतंत्र और निष्पक्ष होना चाहिए। आयुक्तों की पहचान उनके फैसलों के कारण ही होती है। यदि आयुक्त अपने फैसलों से निष्पक्ष चुनाव के पक्षधर दिखते हैं, तो इससे लोगों को खुशी भी होती है और देश में अच्छी राजनीति को बल भी मिलता है। इधर के दिनों में चुनाव आयोग पर लगातार उंगलियां उठाई जाती रही हैं। विशेष रूप से विपक्षी नेताओं को आयोग से बड़ी उम्मीद है। जिन आयुक्तों के चयन को चुनौती दी गई है, उनके लिए भी यह खुद को साबित करने का मौका है। आयोग से फिजूल शिकायत करने वालों को भी सजग रहना चाहिए, निष्पक्ष चुनाव सबकी जिम्मेदारी है।

क्रूर मित्र

कुत्तों और समाज में उनके स्थान को लेकर भारत में जटिल दुविधाएं हैं। एक तरफ आवारा कुत्तों की समस्या है। देश भर में नागरिक अपनी आवासीय कॉलोनियों में घूमने वाले कुत्तों के हमले के बारे में शिकायत करते हैं, लेकिन इससे अभी तक इन कुत्तों की संख्या को नियंत्रित करने के लिए मौजूदा नगरपालिका कानूनों को लागू करने को लेकर कोई ठोस राजनीतिक प्रतिक्रिया नहीं मिली है। दूसरी तरफ, पालतू कुत्तों से जुड़ी बिल्कुल ही अलग श्रेणी की चिंताएं को सामने आई हैं। यही वजह है कि केंद्र सरकार के एक मंत्रालय और दो हाईकोर्टों का ध्यान उन पर गया है। जिन सवालों पर विचार-विमर्श किया जा रहा है उनमें एक यह है कि क्या कुत्तों की कुछ नस्लें स्वाभाविक रूप से दूसरों की तुलना में ज्यादा ह्लक्रूरह्व हैं। कृषि मंत्रालय के पशु कल्याण और पशुपालन विभाग द्वारा गठित एक विशेषज्ञ समिति ने सिफारिश की है कि ह्लक्रूर कुत्तोंह्व की कुछ नस्लों को पालतू जानवर के रूप में रखने पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। विभिन्न नागरिक समूहों की ओर से इन कुत्तों द्वारा लोगों पर हमले - कभी-कभी घातक भी- करने की शिकायत के बाद ऐसी समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने दिल्ली हाईकोर्ट में एक याचिका दायर कर कुछ नस्लों पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध किया था। इनमें पिट बुल टेरियर, अमेरिकन स्टैफोर्डशायर टेरियर, फिला ब्रासीलीरो, डोगो अर्जेंटीनो, अमेरिकन बुलडॉग, बोअरबोएल, कांगल, मध्य एशियाई शेफर्ड डॉग जैसे मिश्रित और संकर (क्रॉसब्रीड) नस्ल के कुत्ते शामिल हैं। इन नियमों को स्थानीय अधिकारियों द्वारा लागू किए जाने की उम्मीद है। जिन कुत्तों को पहले से ही पालतू जानवर के रूप में रखा गया है, उनका बंध्याकरण यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाना चाहिए कि आगे प्रजनन न हो। कर्नाटक हाईकोर्ट ने हाल ही में सरकार के इस आदेश पर उस समय रोक लगा दी जब कुछ याचिकाकर्ताओं ने यह आपत्ति जताई कि सरकारी विभाग का कदम एकतरफा है और इसमें विशेषज्ञ निकायों की व्यापक धारा को शामिल नहीं किया गया है। केनेल क्लब ऑफ इंडिया, जो शुद्ध नस्लों को पंजीकृत करने वाली एक संस्था है, को इस निर्णय से समस्या हो सकती है। कुत्तों के स्वभाव से संबंधित सालों के अवलोकन और अंतर्दृष्टि से यह पता चला है कि उनकी क्रूरता और आक्रामकता पर्यावरणीय व व्यवहारिक, दोनों कारकों का नतीजा है।

श्रीराम मंदिर से बढ़ती समृद्धि और समरसता

ANALYSIS

श्याम जाजू

मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने सामाजिक समरसता और सशक्तिकरण का संदेश स्वयं के जीवन से दिया। उसी भावना से मंदिर के पूजन में इस्तेमाल हुए देश भर की हजारों पवित्र नदियों के जल व पावन तीर्थों की रज (मिट्टी) ने सम्पूर्ण भारत को भावनात्मक रूप से एकाकार कर दिया। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक पवित्र नदियों और पोखरों के जल तथा हर धर्म, संस्कृति, विचारधारा स्वरूप से जुड़े स्थलों जैसे संत रविदास के काशी स्थित जन्मस्थली, सीतामढ़ी के महर्षि वाल्मीकि आश्रम, विदर्भ के कचारगड, झारखंड के रामरेखाधाम, मध्य प्रदेश के टंट्या भील की पुण्य भूमि, अमृतसर के श्री हरमंदिर साहिब, बाबासाहेब आंबेडकर के जन्मस्थान महू और दिल्ली के जैन लाल मंदिर आदि की मिट्टी मंदिर के निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा में प्रयुक्त हो देश में बढ़ती समरसता की नींव को मजबूत कर गई। राम मंदिर का निर्माण न केवल धार्मिक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह एक समरस, सहिष्णु समाज की अवधारणा का प्रतीक भी बन गया है।

पांच सौ वर्षों की प्रतीक्षा के बाद हुए श्रीराम मंदिर के पुनर्निर्माण ने न केवल भारतीय समाज की सांस्कृतिक और धार्मिक आधारशिला को मजबूत किया है बल्कि उसकी प्राण प्रतिष्ठा ने सम्पूर्ण देश में अभूतपूर्व समृद्धि और समरसता का मार्ग प्रशस्त किया है। आज पुनर्निर्मित भव्य राम मंदिर न केवल धार्मिक या ऐतिहासिक संदर्भ में महत्वपूर्ण बन गया है, बल्कि यह समृद्धि, समरसता, और एकता के प्रतीक के रूप में भी स्थापित हो गया है। राम मंदिर के निर्माण की प्रक्रिया में समाज के सभी लोगों की भागीदारी ने एकता, सहयोग और सामाजिक समरसता की उसी मूल भावना का संवर्धन किया है जो प्रभु श्रीराम ने अहिल्या उद्धार तथा शबरी व निषादराज से प्रेम और मित्रता कर जगाई थी। मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने सामाजिक समरसता और सशक्तिकरण का संदेश स्वयं के जीवन से दिया। उसी भावना से मंदिर के पूजन में इस्तेमाल हुए देश भर की हजारों पवित्र नदियों के जल व पावन तीर्थों की रज (मिट्टी) ने सम्पूर्ण भारत को भावनात्मक रूप से एकाकार कर दिया। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक पवित्र नदियों और पोखरों के जल तथा हर धर्म, संस्कृति, विचारधारा स्वरूप से जुड़े स्थलों जैसे संत रविदास के काशी स्थित जन्मस्थली, सीतामढ़ी के महर्षि वाल्मीकि आश्रम, विदर्भ के कचारगड, झारखंड के रामरेखाधाम, मध्य प्रदेश के टंट्या भील की पुण्य भूमि, अमृतसर के श्री हरमंदिर साहिब, बाबासाहेब आंबेडकर के जन्मस्थान महू और दिल्ली के जैन लाल मंदिर आदि की मिट्टी मंदिर के निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा में प्रयुक्त हो देश में बढ़ती समरसता की नींव को मजबूत कर गई। राम मंदिर का निर्माण न केवल धार्मिक स्थल के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह एक समरस, सहिष्णु समाज की अवधारणा का प्रतीक भी बन गया है। सामाजिक समरसता के साथ श्रीराम मंदिर के निर्माण ने सामूहिक वैभव और आर्थिक सशक्तिकरण का वह मार्ग भी प्रशस्त किया है जो समाज के हर वर्ग, हर धर्म, जाति और सम्प्रदाय को समान रूप से लाभ पहुंचाएगा। सदियों से आर्थिक रूप से पिछड़े पूर्वी उत्तर प्रदेश और उससे लगे क्षेत्रों का तो मानो काया पलट ही हो जायेगा जिसकी शुरूआत हो चुकी है। स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास को एक नई गति मिलती दिख रही है जो देश के विकास में एक नई इबारत लिखेगा और भारत के तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने में महत्वपूर्ण योगदान करेगा। ज्ञातव्य है कि उत्तर प्रदेश राज्य ने अपने लिए पहले से ही 2027 तक राज्य को 1 खरब (ट्रिलियन) की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखता है जो अब राम मंदिर के प्रतिष्ठापन के बाद समय पूर्व ही साकार होता दिख रहा है। राम मंदिर के कपाट खुलने के बाद से ही उत्तर प्रदेश के टूरिज्म सेक्टर (यूपी टूरिज्म) में बूम देखने को मिल रहा है। भारत के करीब 1।1 अरब हिंदुओं का प्रमुख तीर्थस्थल बना अयोध्या अब अभूतपूर्व आर्थिक उछाल देख रहा है। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के एक दिन पहले यानी रविवार 21 जनवरी स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमे उत्तर प्रदेश राज्य को अयोध्या के राम मंदिर और राज्य सरकार की अन्य पर्यटन योजनाओं के चलते भारी कमाई की सम्भावना बताई गई। रिसर्चर्स ने अनुमान जाहिर करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार को फाइनेंशियल ईयर 2025 में सिर्फ अयोध्या से 20,000 से 25,000 करोड़ रुपये की अतिरिक्त कमाई हो सकती है। विदेशी ब्रोकरेज फर्म जेफरीज ने एक रिपोर्ट में कहा कि राम मंदिर का उद्घाटन और प्राण प्रतिष्ठा के बाद देश में बड़ा आर्थिक प्रभाव देखने को मिल सकता है। राम मंदिर के साथ भारत को एक नया पर्यटन स्थल मिल रहा है, जिसकी वजह से देश में हर साल 50 मिलियन यानी 5 करोड से ज्यादा पर्यटकों की संख्या में इजाफा हो सकता है। निस्संदेह, अयोध्या में राम मंदिर से भारत में पर्यटन सेक्टर को बड़ा बूस्ट मिलेगा। इस रिपोर्ट के मुताबित भारत में पर्यटन की बड़ी संभावनाएं हैं। वित्त वर्ष 2019 में देश की जीडीपी में पर्यटन सेक्टर का योगदान 194 बिलियन डॉलर का था। वहीं वित्त वर्ष 2030 में यह बढ़कर 443 बिलियन डॉलर (करीब 36176 लाख करोड़ रुपये) पर पहुंचने का अनुमान है। पर्यटन में धार्मिक पर्यटन का बड़ा रोल है। भारत के लोकप्रिय धार्मिक केंद्रों में हर साल करोड़ों श्रद्धालु पहुंचते हैं। पर्यटन बढ़ने से अयोध्या में होटल, एयरलाइन सेक्टर, हॉस्पिटैलिटी सेक्टर, ट्रैवल, रेलवे, गाइड, पूजा सामग्री बेचने वाले दुकानदार, मूर्तियां बनाने वाले और ऐसी तमाम चीजों को बूस्ट मिलेगा। राम मंदिर के निर्माण से पर्यटकों की संख्या के साथ-साथ अयोध्या में निवेश बढ़ रहा है। निवेश बढ़ने से रोजगार के अवसर पैदा होंगे। माना जा रहा है कि अयोध्या में 20 हजार से 25 हजार नए रोजगार पैदा होंगे। रामलला के विराजमान होते ही अयोध्याम वैश्विक धार्मिक स्थवल और आध्याकत्मिक टूरिस्ट हॉटस्पॉट बन गया है। दरअसल अयोध्या निवेश के लिए एक नया हॉटस्पॉट बन ही गया है। शहर में अब एक नया हवाई अड्डा टर्मिनल है जो 6,500 वर्ग मीटर में फैला है और हर साल दस लाख यात्रियों को सेवा प्रदान करेगा। इस क्षमता को ६० लाख यात्रियों तक बढ़ाने और अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल की अपेक्षा 2025 तक है। भारत के हवाई वाहक, जैसे इंडिगो और एयर इंडिया एक्सप्रेस ने प्रमुख शहरों को अयोध्या से जोड़ने वाली कई उड़ानें शुरू की हैं। अकासा एयर और स्पाइसजेट जैसी अन्य एयरलाइंस, अयोध्या के लिए हवाई यात्रा को बढ़ाने की योजना का अनावरण कर रही हैं। नए खुले हवाई अड्डे पर चार्टर्ड उड़ानों के लिए भी व्यवस्था की गई है। अभिषेक कार्यक्रम के दिन 100 से अधिक चार्टर्ड विमान हवाई अड्डे पर पहुंचे थे। इसके अलावा, चॉपर सेवाएं अयोध्या को छह जिलों - गोरखपुर, वाराणसी, लखनऊ, प्रयागराज, मथुरा और आगरा से जोड़ेंगी। अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन को 240 करोड़ रुपये में पुनर्निर्मित कर भव्य स्वरूप दिया गया है। भारतीय रेलवे ने 22 जनवरी के बाद अयोध्या के लिए 200 आस्था स्पेशल ट्रेनें भी शुरू की हैं। देश के विभिन्न हिस्सों को अयोध्या से जोड़ने वाली नित नई ट्रेनें प्रारम्भ हो रही हैं जिसका पूरे देश से राम मंदिर आने वाले श्रद्धालु उपयोग कर सकेंगे। इसके साथ ही अंतर्देशीय जलमार्ग से भी सरयू को जोड़ने का कार्य चल रहा है। अयोध्या में 1,200 एकड़ में 2,180 करोड़ रुपये का ग्रीनफील्ड टाउन भी बनाया जा रहा है। इसमें मठों, आश्रमों, धर्मशालाओं और व्यावसायिक गतिविधियों के लिए अलग से भूखंड रखे जाएंगे। उत्तर प्रदेश सरकार ने पर्यटक वृद्धि की प्रत्याशा में भीड़भाड़ को कम करने के लिए परियोजना शुरू की। बुनियादी ढांचे के विकास में कनेक्टिंग हाई-वे, नवीनीकृत सड़कें, पानी और बिजली परियोजनाएं भी शामिल हैं। अयोध्या को विश्व स्तरीय शहर में विकसित करने के लिए 30,500 करोड़ तक की कीमत वाली लगभग 178 प्रोजेक्ट शुरू किए गए हैं। इस बीच, राज्य सरकार का उद्देश्य विदेशी पर्यटकों और भारतीय नागरिकों दोनों की क्षमता का उपयोग करना है और "मुख्य केंद्र के रूप में अयोध्या के साथ रामायण सर्किट बनाना" है। अयोध्या मास्टर प्लान 2031 के तहत, मंदिर शहर के बुनियादी ढांचे को उन्नत करने के लिए 85,000 करोड़ रुपये की परियोजनाएं पाइपलाइन में हैं। राम मंदिर भारत के संपन्न आध्यात्मिक पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देगा। सीएनबीसीटीवी 18 की रिपोर्ट के अनुसार, उद्घाटन के बाद से ही प्रतिदिन तीन से पांच लाख यात्री शहर में आ रहे हैं। न केवल होटल उद्योग, पर्यटन, रेस्तरां, निर्माण परिवहन, डेयरी और कृषि उत्पादों जैसे बड़े व्यापार क्षेत्रों को बढ़ावा दिया जाएगा बल्कि छोटे व्यापारी जो फूल, फल, पेय, अगरवुड अल्टा, कैंफर, घी आदि जैसी किस्में बेच रहे हैं उन्हें लाभ मिलेगा। अयोध्या के रूप में एक नए धार्मिक पर्यटन केंद्र का निर्माण, बेहतर संयोजकता और बुनियादी ढांचे के साथ एक अर्थपूर्ण रूप से बड़ा आर्थिक प्रभाव पैदा कर सकता है। इकोनॉमिक टाइम्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, अयोध्या के राम मंदिर ने रोजगार सृजन को बढ़ावा दिया है। राम मंदिर के उद्घाटन से पहले ही आतिथ्य, यात्रा और पर्यटन ने अयोध्या में 20,000 नौकरियां पैदा की हैं।

लेखक, भाजपा के निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।

पानी के बिना जीवन की कल्पना असंभव

प्रतिवर्ष 22 मार्च को दुनियाभर में लोगों में जल संरक्षण और रखरखाव को लेकर जागरुकता फैलाने के लिए 'विश्व जल दिवस' मनाया जाता है। यह दिवस मनाए जाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1992 में रियो द जेनेरियो में आयोजित पर्यावरण तथा विकास का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में की गई थी। संयुक्त राष्ट्र की उसी घोषणा के बाद पहला विश्व जल दिवस 22 मार्च 1993 को मनाया गया था। यह दिन जल के महत्व को जानने, समय रहते जल संरक्षण को लेकर सचेत होने तथा पानी बचाने का संकल्प लेने का दिन है। दरअसल जल धरती पर मानव जीवन की बुनियादी जरूरतों में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है और वर्तमान में पृथ्वी पर पेयजल की उपलब्धता से जुड़े आंकड़ों पर नजर डालने से स्पष्ट हो जाता है कि पानी की एक-एक बूंद बचाना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। पानी की समस्या भारत में भी लगातार गंभीर होती जा रही है, जिसका अंदाजा हाल के बेंगलुरु जल संकट से आसानी से लगाया जा सकता है। ऐसे में विश्व जल दिवस की महत्ता हमारे लिए भी कई गुना बढ़ जाती है। देश में हर साल जाने-अनजाने करोड़ों लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। इसी वजह से कुछ वर्ष पूर्व विश्व जल दिवस के अवसर पर 22 मार्च के ही दिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जल शक्ति अभियानः कैच द रेन की शुरूआत की थी और उस अभियान के तहत देश के सभी शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन के लिए नारा दिया गया था जहां भी गिरे, जब भी गिरे, वर्षा का पानी इकट्ठा करें। एक ओर जहां करोड़ों लोग विशेषकर गर्मी के मौसम में बूंद-बूंद पानी के लिए तरसते रहते हैं, वहीं बारिश के मौसम में वर्षा जल का संरक्षण-संचयन नहीं होने के अभाव में प्रतिवर्ष लाखों गैलन पानी व्यर्थ बह जाता है। यदि इस पानी का संरक्षण कर लिया जाए तो देश की बड़ी आबादी की प्यास इसी पानी से बुझाई जा सकती है लेकिन चिंता की बात है कि देश में अभी तक वर्षा जल संरक्षण को लेकर कहीं जागरुकता नहीं दिखती। पर्यावरण संरक्षण पर हिन्दी अकादमी के सहयोग से प्रकाशित पुस्तक प्रदूषण मुक्त सांसें के अनुसार भारत में जल संकट बढ़ने का एक बड़ा कारण यही है कि हम वर्षा जल का बहुत ही कम मात्रा में संरक्षण कर पाते हैं। देश में प्रतिवर्ष करीब तीन हजार अरब घन मीटर पानी की जरूरत होती है जबकि भारत में होने वाली वर्षा की मात्रा करीब चार हजार अरब घन मीटर होती है लेकिन वर्षा जल संग्रहण के पर्याप्त प्रबंध नहीं होने के कारण मामूली से वर्षा जल का ही संग्रहण संभव हो पाता है। एक ओर जहां इजराइल जैसे देश में औसतन दस सेंटीमीटर वर्षा होने के बावजूद भी वह इतने अन्न का उत्पादन कर लेता है कि उसका निर्यात करने में भी सक्षम हो जाता है, वहीं दूसरी ओर भारत में औसतन पचास सेंटीमीटर से भी ज्यादा वर्षा होने के बावजूद अन्न की कमी बनी रहती है। दरअसल नदियों-तालाबों जैसे पवित्र माने जाते रहे जलस्त्रोतों को सहेजने में लापरवाही और भूमिगत जल में प्रदूषण की बढ़ती मात्रा तथा वर्षा जल संचयन का उचित प्रबंध न होना भारत में जल संकट गहराते जाने की मुख्य वजह बन रहे हैं। देश में आज के आधुनिक युग में भी बहुत से इलाकों में लोगों को दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है या लंबी-लंबी कतारों में लगकर कामचलाऊ पानी मिल जाता है। चौंकाने वाला यह तथ्य भी सामने आ चुका है कि कुछ इलाकों में महिलाओं को पीने का पानी लाने के लिए प्रतिदिन औसतन छह किलोमीटर से भी ज्यादा का सफर पैदल तय करना पड़ता है। हालांकि सरकार द्वारा जलशक्ति अभियान के तहत हर घर को पानी मुहैया कराने का लक्ष्य रखा गया है लेकिन इस तथ्य को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि देश में 2030 तक पानी की जरूरत दोगुनी हो जाएगी और 2050 तक यह चार गुना बढ़ जाएगी तथा जल संकट का देश के सकल घरेलू उत्पाद पर छह फीसदी तक असर पड़ सकता है। भारत में पानी की कमी का संकट लगातार किस कदर गहरा रहा है, इसका अनुमान सरकार द्वारा संसद में दी गई उस जानकारी से भी लगाया जा सकता है, जिसमें बताया गया था कि वर्ष 2001 और 2011 में भारत में जल उपलब्धता प्रति व्यक्ति क्रमशः 1816 और 1545 घन मीटर थी, जो अब 1480 घन मीटर से भी कम रह जाने का अनुमान है। ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्व पुस्तक के मुताबिक भूमिगत जल का अंधाधुंध दोहन किए जाने का ही नतीजा है कि कई शहरों में भू-जलस्तर तेजी से नीचे गिर रहा है। नीति आयोग यह चेतावनी दे चुका है कि देश के 21 बड़े शहरों में भू-जल का स्तर आने वाले समय में शून्य तक पहुंच सकता है। जल संकट गहराने के पीछे नदियों तथा जलाशयों के सही रखरखाव का अभाव और उनका अतिक्रमण भी कुछ अहम कारणों में शामिल हैं। देश की अधिकांश आबादी दूषित पेयजल का सेवन करने पर विवश है। भू-जल बोर्ड की एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 1990 के बाद से भू-जल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है और यदि भू-जल स्तर इसी रफ्तार से घटता गया तो बहुत अधिक गहराई से जो पानी निकाला जाएगा, वह पीने लायक नहीं होगा क्योंकि उसमें आर्सेनिक तथा फ्लोराइड की मात्रा अधिक होने के कारण बीमारियां बढ़ेंगी। देशभर में कृषि, उद्योग तथा दैनिक क्रियाकलापों की करीबन अस्सी फीसदी जरूरतें जमीन पर तथा उसके भीतर उपलब्ध पानी से ही पूरी की जाती हैं। बहरहाल, जल संकट से निजात पाने के लिए बेहद जरूरी है कि पानी के सीमित एवं समुचित उपयोग के लिए जागरुकता बढ़ाने पर जोर देते हुए लोगों में पानी बचाने की आदतें विकसित करने के प्रयास किए जाएं, साथ ही वर्षा जल का संचय किए जाने के भी हरसंभव प्रयास हों। वर्षा जल संचय के लिए नदियों और जलाशयों की हालत सुधारकर इनकी जल संग्रह क्षमता को बढ़ाना और भू-जल स्तर को बढ़ाने वाली जगहों को ठीक करना बेहद जरूरी है।

Social Media Corner

सच के हक में...

बिहार दिवस पर राज्य के अपने सभी परिवारजनों का हार्दिक अभिनंदन! अपनी सांस्कृतिक विरासत और वैभव के लिए दुनियाभर में विशिष्ट पहचान रखने वाला हमारा यह प्यारा प्रदेश विकास के एक नए युग की ओर तेजी से अग्रसर है। मुझे विश्वास है कि विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हमारे मेहनती और प्रतिभाशाली बिहारवासियों का अमूल्य योगदान रहने वाला है।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

बिहार दिवस पर राज्य के सभी निवासियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। बिहार भारतीय संस्कृति और शिक्षा का ऐतिहासिक केंद्र रहा है। संकल्प शक्ति, कर्त्तव्यनिष्ठा और त्याग के लिए प्रसिद्ध बिहार के लोगों ने देश-विदेश में अपना स्थान बनाया है। यह राज्य प्रगति के मार्ग पर सदा अग्रसर रहे, ऐसी मेरी मंगल कामना है।

(राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का 'एक्स' पर पोस्ट)

चुनाव आयोग द्वारा जारी निर्देशों के मद्देनजर, आदर्श आचार संहिता लगे होने के कारण, फिलहाल ऑनलाइन संज्ञान की प्रक्रिया स्थगित की जाती है। इस संबंध में हुई असुविधा के लिए हमें खेद है।

(सीएम चम्पाई सोरेन का 'एक्स' पर पोस्ट)

यह सिर्फ चुनाव नहीं, राष्ट्रधर्म की स्थापना का सनातन यज्ञ भी है

लोकसभा 2024 का चुनाव वस्तुतः एक धर्मयुद्ध है। इसको बहुत संजीदगी से सभी को लड़ना ही होगा। राजनीतिक जय-पराजय अपनी जगह है किंतु देश को जीतना चाहिए। राष्ट्र विजयी हो, ऐसा संकल्प होना चाहिए। इसके लिए प्रतिज्ञा की नहीं केवल संकल्प की आवश्यकता है। प्रतिज्ञा में शक्ति नहीं होती। वह भीष्म बनाती है किंतु संकल्प शक्ति से भरी होती है। वह शिव बनाती है। शिव कल्याणकारी हैं। शिव से ही सत्य और सुंदर भी स्थापित हो पायेंगे। संकल्प और प्रतिज्ञा के बारे में श्रीमदभगवदगीता में भगवान कृष्ण ने बहुत सलीके से समझा दिया है। याद कीजिए कि जब जयद्रथ को मारने की प्रतिज्ञा अर्जुन कर लेते हैं कि सूर्यास्त तक नहीं मारा तो अग्नि समाधि ले लूंगा। आचार्य द्रोण कमलव्यूह के अंदर जयद्रथ को छुपा देते हैं जिसका आकर 32 कोस का था। जाहिर है वह उस तक कैसे पहुँचते ! जयद्रथ की सुरक्षा में बड़े बड़े वीर तैनात थे। भगवान कृष्ण बोले, अर्जुन तुम रास्ता साफ करो मैं रथ ले चलता हूँ। संध्या हो आई अब भी 12 कोस रह गया। कृष्ण रथ से उतर गये। अर्जुन ने पूछा, केशव यह क्या ? कृष्ण ने कहा अश्व थक गये हैं। आगे बोलते हुये भगवान कृष्ण जो बोले वह ध्यान देने योग्य है। अर्जुन कदाचित तुमने मेरे उपदेश पर ध्यान नहीं दिया था जो युद्ध के शुरू में मैंने दिया था ! तुम प्रतिज्ञा करने वाले होते कौन हो ? तुम तो निमित्त हो, यदि तुम प्रतिज्ञा न किये होते तो अब तक जयद्रथ को मार देते। तुम्हारा ध्यान एक तरफ सूर्य पर है दूसरी तरफ जयद्रथ पर। इसलिये तुम्हारे निशाने चूक रहें हैं। ऐसा लक्ष्य तय कर दिये कि असफल होने पर तुम्हें ही विनष्ट कर देगा.... यह डर ही तुम्हें हरा देगा।

भगवान के वचन बड़े सारगर्भित हैं। मुझे नहीं लगता आज तक किसी ने इतनी सुंदर यथार्थ बात की हो । कई संदर्भों में बात हो सकती है, लेकिन वर्तमान में देखिये सब प्रतिज्ञाबद्ध हो रहे हैं। यह क्या बात हुई कि अनुच्छेद 370 हटा दो तभी समर्थन करेंगे। पाकिस्तान पर हमला कर दो... तभी समर्थन करेंगे। राममंदिर बना दो... तभी समर्थन करेंगे। श्रीराम मंदिर बन गया। 370 हट चुका। तीन तलाक भी हट गया। सीएए भी लागू हो गया। देश के गृहमंत्री ने ताल ठोक कर डंके की चोट पर संकल्प दोहरा दिया कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर भी हमारा है। ध्यान दीजिए, भाजपा प्रतिज्ञापत्र नहीं जारी करती, वह हर चुनाव में संकल्प पत्र जारी करती है। नेतृत्व सक्षम है किसी प्रतिज्ञा की आवश्यकता क्या है ? सक्षम नेतृत्व केवल संकल्प लेता है और उसे हर हाल में पूरा भी करता है। आगे भी निश्चित ही दंडात्मक कार्य होगा और हो रहा है। यह ठीक है कि इस समय भावना प्रबल है परंतु इसी समय सुनियोजित तरीके से काम करने की आवश्यकता है। जो विरोधी हैं वह भी यही ढाल बना रहे हैं। फिलहाल उनसे न 370 से मतलब है न राम मंदिर से। गीता में भगवान ने कहा तो है

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते॥2- 31॥

अपने खुद के धर्म से तुम्हें हिलना नहीं चाहिये क्योंकि न्याय के लिये किये गये युद्ध से बढ़कर एक क्षत्रिय के लिये कुछ नहीं है। सुख दुख को, लाभ हानि को, जय और पराजय को एक सा देखते हुए ही युद्ध करो। ऐसा करते हुए तुम्हें पाप नहीं मिलेगा।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥2- 33॥

लेकिन यदि तुम यह न्याय युद्ध नहीं करोगे, तो अपने धर्म और यश की हानि करोगे और पाप प्राप्त करोगे। इसलिए बाकी सब चिंतन छोड़कर, निस्संकोच योग्य एवं सक्षम नेतृत्व को ही चुनें, यही इस धर्मयुद्ध में आप सभी का आसन्न धर्म है, तथा इसी में राष्ट्रहित एवं धर्म हित सन्निहित है।

चयन और चुनाव

भारत निर्वाचन आयोग (ईसीआई) में दो रिक्तियों को भरने में, हड़बड़ी न सही लेकिन, दिखाई गई तेजी की उचित ही आलोचना हुई है। इस बहु-सदस्यीय निकाय को चुनाव आयुक्त (ईसी) अरुण गोयल के इस्तीफे के कुछ ही दिनों के भीतर दो नए सदस्य मिल गए। खुद अरुण गोयल की नियुक्ति भी भारत में चुनावों का संचालन और उसकी निगरानी करने वाले इस आयोग के सदस्यों के चयन की सही मायने में एक स्वतंत्र प्रक्रिया की व्यवस्था से संबंधित एक संविधान पीठ में चल रही सुनवाई के बीच में ही हुई थी। आलोचकों का यह कहना गलत नहीं है कि मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) और अन्य चुनाव आयुक्तों के चयन की प्रक्रिया को निर्धारित करने वाला अधिनियम संविधान पीठ के मार्च 2023 के फैसले में परिकल्पित स्वतंत्रता की कसौटी पर खरा नहीं उतरता मालूम होता है। चुनाव आयुक्तों का चयन ऐसे समय में हुआ जब इस अधिनियम की वैधता को चुनौती देने वाली एक याचिका पर सुनवाई होने वाली थी। इन दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में, व्यक्तिगत कारणों से दिया गया श्री गोयल का इस्तीफा अस्पष्ट बन गया है। यह बेहद गंभीर चिंता का विषय है कि एक चुनाव आयुक्त, जिसका कार्यकाल पूरा होने में अभी कुछ साल बाकी थे, ने आयोग द्वारा लोकसभा चुनाव कार्यक्रम को अंतिम रूप देने से कुछ दिन पहले इस्तीफा देने का विकल्प चुना। कहने की जरूरत नहीं कि चुनाव आयुक्तों के चयन की प्रक्रिया से जुड़ी चर्चा का दो नए चुनाव आयुक्तों सर्वश्री ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू की योग्यता या उपयुक्तता से कोई लेना-देना नहीं है। असली समस्या उस कानून में निहित है जिसे संसद द्वारा पिछले साल सुप्रीम कोर्ट द्वारा यह सवाल उठाये जाने के बाद पारित किया था कि संविधान की स्थापना के बाद से अनुच्छेद 324 के प्रावधानों के तहत आवश्यक चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया को निर्धारित करने वाला कोई कानून क्यों नहीं है।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899, Editor- Fahim Akhtar. Mob - 9431311669, E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

वेंकवूर में इंटरनेशनल ऑटो शो में कस्टम व्हीकल को देखते हुए लोग।

म्युचुअल फंड में निवेश पैसे से पैसा बनाने में मिलते हैं कई फायदे!

नई दिल्ली ।

म्यूचुअल फंड कई निवेशकों के संसाधनों को संयोजित करने और पूर्व निर्धारित गाइडलाइंस के मुताबिक निवेश लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रतिभूतियों में पैसा निवेश करने का एक तरीका है। निवेश का लक्ष्य अधिकतर निवेशक की जोखिम स्वीकार करने की तैयारी से निर्धारित होता है। अधिकांश निवेशकों के लिए अपने खुद के पैसे का प्रबंधन करना काफी चुनौतीपूर्ण है और विभिन्न कंपनियों का अध्ययन और विश्लेषण करने का कार्य उनकी चुनौतियों को और बढ़ा देता है। म्यूचुअल फंड निवेश आपको मामूली शुल्क पर एक पेशेवर फंड मैनेजर प्रदान करता है। इसमें निवेश के जो फायदे मिलते हैं, वह इस प्रकार हैं-

लिक्विडिटी- कोई भी व्यक्ति अपनी वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए आसानी से म्यूचुअल फंड बेच सकता है। प्रोसेस होने पर पैसा कुछ दिनों में आपके बैंक खाते में जमा कर दिया जाता है। ओपन-एंडेड म्यूचुअल फंड्स में यूनिट खरीदना आसान है और योजना से बाहर निकलना भी उतना ही आसान है।

एक्सपर्ट द्वारा होता है मैनेज: भारत में बड़ी संख्या में निवेशकों के बीच म्यूचुअल फंड पसंदीदा निवेश विकल्प बनने का एक मुख्य कारण यह है कि उनका प्रबंधन मार्केट एक्सपर्ट द्वारा किया जाता है।

डाइवर्सिफिकेशन: बाजार की गतिविधियां म्यूचुअल फंड के प्रदर्शन और उनसे जुड़े जोखिमों को निर्धारित करती हैं। यही वजह है कि निवेश आमतौर पर कई एसेट क्लास जैसे कि इक्विटी, मनी मार्केट सिक्योरिटीज, डेट इंस्ट्रूमेंट्स आदि में किया जाता है ताकि जोखिम बंट जाए।

वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करना: निवेशकों के पास अलग-अलग प्रकार के म्यूचुअल फंडों तक पहुंच है और इसलिए, वे ऐसी स्कीम खोज सकते हैं जो उनके वित्तीय लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आदर्श हों, चाहे वह लंबी अवधि में हो या अल्पावधि में।

थोक खरीदारी के लिए कम लागत: आपके पास खरीदी गई म्यूचुअल फंड यूनिट्स की संख्या जितनी अधिक होगी, लागत उतनी ही कम होगी क्योंकि कमीशन शुल्क और प्रोसेसिंग फीस कम होगी।

एसआईपी एक बढ़िया विकल्प: म्यूचुअल फंड में एसआईपी निवेश का एक बढ़िया विकल्प है क्योंकि ज्यादातर लोगों के पास म्यूचुअल फंड में निवेश करने के लिए एकमुश्त राशि नहीं होती है।

निवेश करना है बेहद आसान: म्यूचुअल फंड में निवेश एक बहुत ही आसान प्रक्रिया है। आपको बस अपने वित्तीय लक्ष्यों की पहचान करनी है और यह तय करना है कि आप उन्हें हासिल करने के लिए कितना पैसा निवेश करना चाहते हैं।

टैक्स के मामले में भी मिलता है सपोर्ट: इक्विटी-लिंक्ड सेविंग स्कीम जैसे टैक्स सेविंग म्यूचुअल फंड में निवेश आपको 1.5 लाख रुपये की सीमा तक टैक्स लाभ हासिल करने में मदद कर सकता है।

सुरक्षा: ऐसा सुनने को मिलता है कि म्यूचुअल फंड बैंक उत्पादों की तुलना में असुरक्षित हैं। हालांकि, अगर आप फंड मैनेजर के मूल्यांकन के अलावा उस फंड हाउस का आकलन करते हैं जिससे आप म्यूचुअल फंड की यूनिट्स खरीदते हैं, तो आपकी पूंजी सुरक्षित रहेगी।

किआ की कारें 1 अप्रैल से हो जाएंगी महंगी

नई दिल्ली ।

किआ इंडिया ने बीते दिन घोषणा की है कि वह आगामी 1 अप्रैल से अपनी सभी कारों की कीमतों में 3 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी करने जा रही है। कंपनी ने दाम बढ़ाने के पीछे की वजह कमोडिटी की कीमतों और सप्लाई चेन से संबंधित इनपुट में बढ़ोतरी को जिम्मेदार ठहराया है। किआ इंडिया के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि किआ में हम लगातार अपने ग्राहकों को प्रीमियम और तकनीकी रूप से एडवांस प्रोडक्ट्स देने का प्रयास करते हैं। हालांकि, कमोडिटी की कीमतों में लगातार बढ़ोतरी, प्रतिकूल एक्सचेंज रेट और बढ़ती इनपुट लागत के चलते, हम आंशिक मूल्य वृद्धि को लागू करने के लिए मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी बढ़ोतरी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खुद वहन कर रही है, जिससे ग्राहकों को अपनी पसंदीदा किआ कारों को अपनी जेब पर कोई बड़ा बोझ डाले बिना चलाने की अनुमति मिल रही है। किआ ने अब तक भारत और वै श्विक बाजार में संयुक्त रूप से करीब 1.16 मिलियन यूनिट्स बेची हैं। इसके सबसे ज्यादा बिकने वाले इनोवेशन, सेल्टोस ने 6,13,000 यूनिट की बिक्री को पार कर लिया है। इसी तरह सोनेट की 3,95,000 से अधिक यूनिट और कैरेंस की 1,59,000 यूनिट की बिक्री हुई है। किआ इंडिया की ऑफिशियल वेबसाइट के मुताबिक किआ सेल्टोस की शुरुआती एक्सशोरूम कीमत 10,89,900 रुपये है। न्यू किआ सोनेट की शुरुआती एक्सशोरूम कीमत 7,99,000 रुपये है। इसी तरह किआ कैरेन्स की शुरुआती एक्सशोरूम कीमत 10,44,900 रुपये है। जबकि इलेक्ट्रिक कार ईवी6 की शुरुआती एक्सशोरूम कीमत 60,95,000 रुपये है।

बैंक किसी को इरादतन डिफॉल्टर घोषित करते समय रखे सावधानी: हाई कोर्ट

मुंबई ।

बैंकों को बंबई हाई कोर्ट की तरफ से सलाह दी गई है। कोर्ट ने कहा है कि बैंकों और वित्तीय संस्थानों को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के मुख्य सर्कुलर के तहत किसी संस्था या व्यक्ति को इरादतन डिफॉल्टर घोषित करने से पहले तर्कसंगत आदेश पारित करना चाहिए। न्यायमूर्ति बीपी कोलाबावाला और न्यायमूर्ति सोमशेखर सुंदरेसन की खंडपीठ ने 4 मार्च को अपने एक आदेश में यह बात कही। एक खबर के मुताबिक इस आदेश में कहा कि इरादतन चूककर्ताओं को वित्तीय सेक्टर तक एक्सेस से बाहर कर दिया जाता है और इसलिए सर्कुलर के तहत बैंकों को दिए गए विवेक का इस्तेमाल आरबीआई के नियमों के मुताबिक और सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। खबर के मुतबिक हाई कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि जो बैंक और वित्तीय संस्थान इरादतन चूक की घटना की घोषणा करने के लिए मुख्य परिपत्र लागू करना चाहते हैं, उन्हें अपनी पहचान समिति और समीक्षा समिति द्वारा पारित तर्कसंगत आदेशों को साझा करना होगा।

पीठ आईएलएंडएफएस फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड (आईएफआईएन) के पूर्व संयुक्त प्रबंध निदेशक मिलिंद पटेल द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी। इस याचिका में फरवरी, 2023 में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तरफ से पारित एक आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें कंपनी और उसके प्रमोटर्स को आरबीआई द्वारा जारी 2015 के मुख्य सर्कलुर के तहत इरादतन चूककर्ता घोषित किया गया था। आरबीआई का सर्कुलर बैंकों, वित्तीय संस्थानों को तिमाही आधार पर इरादतन चूककर्ताओं का आंकड़ा जमा करने के लिए कहता है। यह आंकड़ा भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) को भी भेजा जाता है।

जेनसोल को महाराष्ट्र में 520 करोड़ की सौर परियोजना मिली

नई दिल्ली । जेनसोल इंजीनियरिंग को महाराष्ट्र में सौर ऊर्जा परियोजना स्थापित करने के लिए 520 करोड़ रुपये का ऑर्डर हा सिल हुआ है। जेनसोल ने शुक्रवार को शेयर बाजार को बताया कि यह ऑर्डर राज्य की एक अग्रणी बिजली उत्पादन इकाई से मिला है। इस परियोजना में महाराष्ट्र में 500 एकड़ में 100 मेगावाट एसी, 135 मेगावाटपी ग्राउंड-माउंट सौर पीवी बिजली परियोजना का विकास शामिल है, जिसका कुल ऑर्डर मूल्य 520 करोड़ रुपये है। जेनसोल ने कहा कि इसके तहत सिविल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग कार्य, जरूरी मंजूरियां हासिल करना, संयंत्र की स्थापना और शुरुआत और संयंत्र के स्विचयार्ड और ट्रांसमिशन बुनियादी ढांचे के रखरखाव सहित तीन साल का परिचालन प्रबंधन शामिल है। जेनसोल इंजीनियरिंग जेनसोल समूह की कंपनियों का एक हिस्सा है जो सौर ऊर्जा संयंत्रों के विकास के लिए ईपीसी सेवाएं प्रदान करती हैं। समूह ने पुणे में एक इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) विनिर्माण संयंत्र भी स्थापित किया है।

हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड नहीं होगी विभाजित, खान मंत्रालय ने प्रस्ताव खारिज किया

नई दिल्ली । खान मंत्रालय ने वेदांता समूह की कंपनी हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा कंपनी को विभिन्न इकाइयों में विभाजित करने के प्रस्ताव को खारिज कर दिया है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। केंद्र सरकार हिंदुस्तान जिंक में सबसे बड़ी अल्पसंख्यक शेयरधारक है। सरकार के पास कंपनी में 29.54 प्रतिशत हिस्सेदारी है। खान सचिव वी एल कांता राव ने कहा, हम प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए। हिंदुस्तान जिंक ने पहले अपने बाजार पूंजीकरण को बढ़ाने के लिए जस्ता और चांदी के कारोबार को अलग-अलग इकाइयों में विभाजित करने की योजना की घोषणा की थी। प्रस्ताव खारिज होने का कारण पूछने पर सचिव ने कहा, हमारे सामने जो बात रखी गई है, उससे हम एक शेयरधारक के तौर पर आश्वस्त नहीं हैं। हिंदुस्तान जिंक ने पहले कहा था कि उसने कारोबार को विभाजित करने की अपनी योजनाओं का अध्ययन करने के लिए एक प्रमुख सलाहकार फर्म को नियुक्त किया है। इससे पहले, हिंदुस्तान जिंक ने कहा था कि कंपनी के निदेशक मंडल ने संभावित मूल्य खोलने के लिए अपने कॉरपोरेट ढांचे की व्यापक समीक्षा करने का निर्णय लिया है।

भारत 5 साल में दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था होगा: कांत

बेंगलूर । भारत के जी20 शेरपा और नीति आयोग के पूर्व मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) अमिताभ कांत ने कहा कि भारत अगले पांच साल में जापान और जर्मनी को पीछे छोड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। इसके अलावा उस समय तक भारत में दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा शेयर बाजार भी होगा। भारतीय उद्योग परिसंघ (दक्षिणी क्षेत्र) द्वारा द डैक्कन कन्वर्सेशन्स, एक्सिलेरेटिंग आवर ग्रोथ स्टोरी विषय पर आयोजित सम्मेलन को संबोधित करते हुए कांत ने कहा कि भारत की वृद्धि दर पिछली तीन तिमाहियों में 8.3 प्रतिशत से अधिक रही है और इस दौरान यह एक मजबूत ताकत के रूप में उभरा है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (आईएमएफ) का हवाला देते हुए कहा कि भारत अगले दशक में दुनिया के आर्थिक विस्तार में लगभग 20 प्रतिशत का योगदान देगा। वर्ष 2047 तक देश की अर्थव्यवस्था 35,000 अरब डॉलर की होगी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत को विनिर्माण, स्मार्ट शहरीकरण और कृषि के दम पर आगे बढ़ने की जरूरत है। भारत को सीखने के परिणामों और कौशल में सुधार करने की जरूरत है, जिससे 2047 तक भारत वैश्विक स्तर पर 30 प्रतिशत कुशल जनशक्ति प्रदान कर सकेगा। उन्होंने कहा कि भारत को बड़ी कंपनियां बनाने, सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यमों (एमएसएमई) के लिए पारिस्थतिकी तंत्र का सृजन करने की जरूरत है, जिससे शोध एवं विकास (आरएंडडी) पर खर्च को मौजूदा के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 0.7 प्रतिशत से बढ़ाकर ढाई से तीन प्रतिशत किया जा सके।

शेयर बाजार बढ़त पर बंद

सेंसेक्स 190, निफ्टी भी 84 अंक ऊपर आया

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार शुक्रवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के अंतिम कारोबारी दिन बाजार में ये उछाल दुनिया भर के बाजारों से मिले सकारात्मक संकेतों से आया है। व्यापक बाजारों में भी सकारात्मक रुख से बीएसई मिडकैप इंडेक्स 0.38 फीसदी और बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स 1.06 फीसदी ऊपर आया।

दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 190.75 अंक करीब 0.26 फीसदी बढ़कर 72,831.94 अंक पर बंद हुआ। वहीं दूसरी ओर पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 84.80 अंक तकरीबन 0.39 फीसदी बढ़कर 22,096.75 अंक पर बंद हुआ।

आज के कारोबार में सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 21 शेयर लाभ के साथ ही ऊपर आये। इस दौरान मारुति, सन फार्मा, टाइटन, आईटीसी और इंडसइंड बैंक सेंसेक्स के शीर्ष पांच लाभ वाले शेयर रहे। सबसे ज्यादा लाभ मारुति के शेयरों को हुआ। इसके शेयर 3.55 फीसदी बढ़े। इसके अलावा, एलएंडटी, टाटा मोटर्स, भारती एयरटेल, टाटा स्टील, जेएसडब्ल्यू स्टील, नेस्ले, अल्ट्राटेक सीमेंट, एशियन पेंट्स, आईसीआईसीआई बैंक और पावर ग्रिड के शेयर लाभ में रहे।

दूसरी ओर सेंसेक्स के शेयरों में 9 शेयर नुकसान के साथ ही नीचे आये। इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल टेक, टीसीएस और टेक महिंद्रा सेंसेक्स के सबसे अधिक नुकसान वाले पांच शेयरों में रहे। सबसे ज्यादा नुकसान इंफोसिस के शेयरों को हुआ। इसके शेयर 2.98 फीसदी टूटे। इसके अलावा बजाज फिनसर्व, एक्सिस बैंक, एचडीएफसी बैंक और एनटीपीसी के शेयर भी नुकसान में रहे।

अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लिए अनुमान से ज्यादा तेजी से वृद्धि की उम्मीद जताई है उससे भी बाजार को बल मिला। बीएसई में सूचीबद्ध फर्मों का कुल बाजार पूंजीकरण 5.7 लाख करोड़ रुपये ऊपर आया।

वहीं इससे पहले आज सुबह एशियाई बाजारों में कमजोरी को देखते हुए भारतीय शेयर बाजार गिरावट के साथ खुले। बीएसई सेंसेक्स 200 अंक गिरकर 72,431 पर और एनएसई निफ्टी50 54 अंक गिरकर 21,957 के स्तर पर कारोबार करते दिखे। बीएसई मिडकैप एक दायरे में कारोबार करता दिखा, जबकि स्मॉलकैप इंडेक्स 0.33 फीसदी ऊपर था। शुक्रवार के शुरुआती कारोबार में आईटी कंपनियों के शेयरों में एचसीएल टेक, एमफैसिस, पर्सिस्टेंट सिस्टम्स के शेयरों में 4 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई, जबकि विप्रो, कोफोर्ज, इंफोसिस और एलटीटीएस में भी 3 फीसदी से ज्यादा की गिरावट आई।

टाटा केमिकल पर 103.63 करोड़ का जुर्माना

नई दिल्ली । आयकर विभाग ने ब्याज की अस्वीकृति से संबंधित नियम के उल्लंघन के लिए टाटा कैमिकल्स पर 103.63 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया है। टाटा कैमिकल्स ने कहा कि उसे आयकर विभाग के नेशनल फेसलैस असेसमेंट सेंटर से एक आदेश मिला है, जिसमें धारा 36 (1) के तहत ब्याज की अस्वीकृति के लिए आयकर अधिनियम की धारा 270 ए (3) के तहत 103.63 करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया गया है। टाटा समूह की कंपनी ने कहा कि मामले के गुण-दोष, प्रचलित कानून और वकील की सलाह के आधार पर वह इस आदेश के खिलाफ नेशनल फेसलैस अपील सैंटर के समक्ष अपील करने की योजना बना रही है।

सरसों के बीज के भाव एमएसपी से गिरने पर एसईए की केंद्र से दखल की मांग

नई दिल्ली । खाद्य तेल उद्योग निकाय सॉल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) ने शुक्रवार को सरसों के बीज की थोक कीमतें 5,650 रुपये प्रति क्विंटल के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से नीचे गिरने पर सरकार से तत्काल हस्तक्षेप करने का आग्रह किया। एसईए के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि हम अधिकारियों से एमएसपी पर सरसों के बीज की खरीद की सुविधा के लिए प्रमुख मंडी क्षेत्रों में खरीद केंद्र स्थापित करने के लिए (सहकारी) नेफेड को निर्देश देने का आग्रह करते हैं, जिससे बाजार स्थिरता और किसान कल्याण का समर्थन किया जा सके। उन्होंने कहा कि एमएसपी खासकर सरसों की कटाई के मौजूदा मौसम में बड़ी चिंता बनी हुई है। सरसों के बीज की मौजूदा बाजार कीमतें 5,650 रुपये के एमएसपी से नीचे हैं, जिससे तत्काल सरकारी दखल की जरूरत है। उन्होंने कहा कि चालू सत्र के दौरान रकबा 100 लाख हेक्टेयर के शिखर पर पहुंचने के बावजूद कीमतों में गिरावट के कारण सरसों की खेती में स्थिरता का सामना करना पड़ रहा है।

बायजू की ईजीएम के विरोध में निवेशकों का एक समूह एनसीएलटी पहुंचा

- 28 मार्च को होगी मामले की सुनवाई

मुंबई ।

एजुटेक कंपनी बायजू को संचा लित करने वाली कंपनी थिंक एंड लर्न के शेयरधारकों की 29 मार्च को असाधारण आम सभा (ईजीएम) बुलाने को लेकर कुछ निवेशकों ने इसका विरोध कंपनी न्यायाधिकरण एनसीएलटी में किया है, लेकिन उन्हें राहत नहीं मिल सकी। सूत्रों ने कहा कि 29 मार्च को ईजीएम बुलाने के फैसले का कुछ निवेशकों ने विरोध करते हुए राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण (एनसीएलटी) की बेंगलुरु पीठ के समक्ष अर्जी लगाई है। लेकिन ईजीएम पर रोक लगाने की मांग पर उन्हें राहत नहीं मिली है। खबर के मुताबिक न्यायाधिकरण ने इस मामले को 28 मार्च की सुनवाई के लिए लिस्टेड कर दिया है। हाल ही में 20 करोड़ अमेरिकी डॉलर का राइट्स इश्यू लाए जाने के बाद कंपनी की अधिकृत शेयर पूंजी बढ़ाने के लिए बायजू ने 29 मार्च को ईजीएम बुलाई है। इस संबंध में बायजू और कुछ प्रमुख निवशकों को भेजे गए सवालों का कोई जवाब नहीं मिला है। बायजू के चार निवेशकों के एक समूह ने एनसीएलटी की बेंगलुरु पीठ के समक्ष कंपनी के प्रबंधन के खिलाफ उत्पीड़न और कुप्रबंधन का मुकदमा दायर किया है। मुकदमा में कंपनी के संस्थापक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) बायजू रवींद्रन और दूसरे संस्थापकों को बाहर करने और एक नया बोर्ड नियुक्त करने की मांग की गई है। इसके अलावा मुकदमे में हाल ही में खत्म हुए अधिकार मुद्दे को शून्य घोषित करने की भी मांग की गई। बता दें, पिछले महीने ही बायजू के निवेशकों ने कंपनी पर अमेरिका में एक अस्पष्ट हेज फंड में 53.3 करोड़ डॉलर की हेराफेरी करने के साथ ही 20 करोड़ डॉलर के राइट्स इश्यू पर रोक लगाने की अपील की थी।

महिंद्रा ने अडाणी टोटल एनर्जी से किया करार

नई दिल्ली । महिंद्रा एंड महिंद्रा (एमएंडएम) ने देश भर में इलैक्ट्रिक वाहन (ईवी) चार्जिंग बुनियादी ढांचा स्थापित करने के लिए अदाणी टोटल गैस की एक इकाई के साथ समझौता किया है। प्रमुख वाहन कंपनी ने बताया कि उसने अदाणी टोटल एनर्जी ई-मोबिलिटी लिमिटेड (एटीईएल) के साथ इस संबंध में समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। बयान के अनुसार एमओयू देशभर में एक विस्तृत ईवी चार्जिंग बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए एक खाका तय करता है। एमएंडएम ने कहा कि इसके अलावा साझेदारी में खोज, उपलब्धता, नेविगेशन और लेनदेन को कवर करने वाले ग्राहकों के लिए चार्जिंग नेटवर्क तक निर्बाध पहुंच प्रदान करने के लिए ई-मोबिलिटी समाधान पेश करना भी शामिल होगा। इसमें कहा गया है कि इस सहयोग से इलैक्ट्रिक वाहन एक्सयूवी400 ग्राहकों के पास अब 1,100 से अधिक चार्जर तक पहुंच होगी।

Mahindra adani

जैव उर्वकों से बढ़ती है फसल की गुणवत्ता

फसल उत्पादन में उर्वरकों की भूमिका विशेष महत्वपूर्ण है। आधुनिक सघन खेती में रासायनिक उर्वरकों तथा अन्य कृषि रसायनों के दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए असंतुलित प्रयोग से भूमि की संरचना तथा उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस बात ने हमें यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि हम प्रकृति के इस महत्वपूर्ण संसाधन भूमि की उर्वरता संरचना तथा पर्यावरण को लम्बे समय तक कैसे बचाये रखें।

दूसरी ओर विश्व व्यापार संगठन में भारत का प्रवेश होने से हमारे आगे न केवल अधिक फसल उत्पादन करने की बल्कि उत्कृष्ट गुणवत्ता बनाए रखने की भी चुनौती है। जैव उर्वरकों को पूरक के रूप में प्रयोग करने से रासायनिक उर्वरकों की क्षमता बढ़ती है साथ-साथ फसलों की उत्पादकता एवं गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है।

क्या हैं जैव उर्वरक?

पर्यावरण के संरक्षण, भूमि की संरचना तथा उर्वरता को बचाए रखते हुए अधिक उत्पादन के लिए कृषि वैज्ञानिकों ने ऐसे जीवाणुओं के उर्वरक तैयार किये हैं जो वायुमण्डल में उपलब्ध नत्रजन को पौधो को उपलब्ध कराते है तथा भूमि में पहले से मौजूद फास्फोरस आदि पोषक तत्वों को घुलनशील बनाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं।

यह जीवाणु प्राकृतिक हैं, रासायनिक नहीं इसलिए इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और पर्यावरण पर विपरीत असर नहीं पड़ता। जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरक का विकल्प नहीं है। इन्हें रासायनिक उर्वरकों के पूरक के रूप में प्रयोग करने से हम बेहतर परिणाम प्राप्त कर सकते है।

कृषक भारती कोआपरेटिव लिमिटेड (कृभकों) द्वारा उत्पादित राइजोबियम कल्चर, एजेटो वैक्टर, एसीटो वैक्टर और पी.एस.एम. उपयोगी जैव उर्वरक हैं।

राइजोबियम कल्चर

इसके जीवाणु पौधों की जड़ो में गांठ बनाकर रहते हैं तथा वायुमण्डल में उपस्थित नाइट्रोजन को शोषित कर भूमि में स्थिरीकरण कर पौधों को उपलब्ध कराते है। ये जैव उर्वरक दलहनी फसलों जैसे अरहर, मूंग, उर्द, चना, मटर, मसूर, सोयाबीन आदि फसलों में उपयोग में लाये जाते है। प्रयोग के लिए यह ध्यान रखना चाहिये कि ये फसल विशेष के लिए अलग-अलग होते हैं और फसल का नाम पैकेट पर अंकित होता है।

एजेटो बैक्टर

यह जैव उर्वरक सभी अनाज गेहूं, जौ, जई ज्वार, बाजरा, मक्का, धान, सब्जी की फसलों, फूलों तथ अन्य फसलों जैसे गन्ना, कपास, तम्बाकू एवं पटसन आदि में प्रयोग में लाया जाता है। इसके जीवाणु पौधों की जड़ क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से रहते हुए वायुमण्डल की नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर पौधो को उपलब्ध कराते हैं।

एसीटो बैक्टर

यह जैव उर्वरक गन्ने की फसल के लिए उपयुक्त पाया गया है। जो गन्ने की फसल के लिए नत्रजन वाले उर्वरकों की लगभग 25-30 प्रतिशत की बचत करने में सहायक होता है, इसके प्रयोग से गन्ने की फसल से प्राप्त होने वाली चीनी के परते में 1-2 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है।

पी.एस.एम.

भारत की 80 से 90 प्रतिशत भूमि में फास्फोरस की कमी पाई जाती है। भूमि में फास्फोरस तत्व की पूर्ति हेतु प्रयोग किये जाने वाले उर्वरकों की मात्रा का लगभग 35-40 प्रतिशत भाग ही फसल उपयोग में ला पाती है, शेष भाग अघुलनशील अवस्था में भूमि के अन्दर बेकार पड़ा रहता है। जबकि फास्फेटिक उर्वरकों पर कृषकों की सबसे ज्यादा लागत आती है। पी.एस.एम. भूमि में अघुलनशील अवस्था में उपस्थित फास्फोरस तत्व को घुलनशील अवस्था में परिवर्तित कर पौधों को उपलब्ध कराता है। यह सभी प्रकार की फसलों में उपयोग किया जा सकता है।

बीज उपचार

इस विधि द्वारा राइजोबियम, एजोटो बैक्टर एवं पीएसएम जैव उर्वरकों का प्रयोग दलहन की फसलों, गेहूं, जौं, मक्का, बाजरा, राई, सरसों, तिल, सूरजमुखी आदि फसलों में किया जाता है। इस विधि में एक पैकेट का घोल लगभग 200-500 मिली. पानी में बनाकर 10 किलो बीज के ऊपर एक साथ छिड़क कर हाथ से अच्छी तरह मिलायें ताकि जैव उर्वरक की एक पतली परत बीज के सभी दानों पर बन जायें। उपचार के तुरन्त बाद छाया में सुखाकर बीज की बुवाई कर दें।

भूमि उपचार

इस विधि द्वारा एजेटो बैक्टर, एसीटो बैक्टर एवं पीएसएम जैव उर्वरकों का प्रयोग सभी खाद्यान्नों की फसलों, गन्ना, तिलहन फसलों, सब्जी फसलों, फूलों आदि में किया जा सकता है। इस विधि में जैव उर्वरकों की लगभग 2-5 कि.ग्रा. मात्रा को 100 कि.ग्रा. अच्छी प्रकार सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट में मिलाकर खेत की तैयारी के समय अन्तिम जुताई से पूर्व खेत में एक साथ छिड़क कर मिट्टी में मिला दें।

कन्द उपचार

आलू की फसल में एजोटो बैक्टर व पीएसएम का उपयोग करने के लिये प्रति हे.2 कि.ग्रा. जैव उर्वरकों को 20-25 लीटर पानी में घोल बनाकर उसमें बीज को 5 मिनट के लिये डुबोकर बुवाई करें। गन्ने की फसल में एसीटो बैक्टर के प्रयोग में लगभग 5 किलो जैव उर्वरक प्रति.हे. की आवश्कता पड़ती है।

जड़ उपचार विधि

यह विधि रोपाई वाली फसलों में प्रयोग की जाती है। इस विधि में 1-2 किग्रा. जैव उर्वरकों को 10-20 लीटर पानी में घोल बनाकर उसमें एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिये रोपाई हेतु पौधों को रोपाई से पूर्व 10 मिनट के लिये जड़ो को डुबोकर रोपाई की जाती है।

जैव उर्वरकों के प्रयोग में सावधानियाँ

यह जीवित जीवाणुओं का मिश्रण है, इसलिए इन्हें तेज धूप, उच्च तापक्रम से सदैव बचाये रखें, अन्यथा उनके जीवाणु मरने शुरू हो जाते है। गर्मियों में भण्डारण के लिये मकान के कोने में रेत के अन्दर घड़े मे रख दें। रेत पर पानी छिड़कर कर भिगोते रहें। इस प्रकार अधिक तापक्रम के प्रभाव से जैव उर्वरकों को बचाया जा सकता है। पैकेट खरीदते समय उनकी निर्माण तिथि अवश्य देख लें और उनका उपयोग अन्तिम तिथि से पूर्व कर लें। पैकेट उपयोग के समय ही खोलें।

सदैव ध्यान रखें कि ये रासायनिक उर्वरकों के विकल्प नहीं है। फसलों की पोषक तत्वों की मांग की पूर्ति इनका रासायनिक एवं कार्बनिक खादों के साथ बेहतर समन्वय बनाकर करें। फसल के लिये निर्धारित जैव उर्वरक ही प्रयोग करें। बीज शोधन में यदि रसायन का प्रयोग करना हो तो इनकी प्रयोग की जानी वाली मात्रा को निर्धारित मात्रा से दोगुना कर देना चाहिये और पहले रसायनों को प्रयोग करें उसके उपरान्त ही जैव उर्वरकों का प्रयोग करें। रासायनिक खादों में मिलाकर इनका प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये। जैव उर्वरकों को सड़ी नमी युक्त गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट खाद के साथ मिलाकर प्रयोग करने से ही बेहतर परिणाम प्राप्त होते है। कृभको द्वारा हजीरा संयंत्र (गुजरात) वाराणसी संयंत्र (उत्तर प्रदेश) लांचा संयंत्र (महाराष्ट्र) में कुल 650 मैट्रिक टन जैव उर्वरकों का उत्पादन किया जाता है। ये जैव उर्वरक कृषक भारती सेवा केन्द्रों एवं सहकारी समितियों से प्राप्त किये जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए कृभकों के नजदीकी प्रतिनिधि से भी सम्पर्क किया जा सकता है।

ए राजा को बरी करने के खिलाफ सीबीआई की अपील पर सुनवाई करेगा कोर्ट

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले के मामले में पूर्व दूरसंचार मंत्री ए. राजा, कुछ कंपनियों और अन्य को बरी किए जाने को चुनौती देने वाली सीबीआई की अपील को शुक्रवार को स्वीकार कर लिया। न्यायमूर्ति दिनेश कुमार शर्मा ने कहा कि उपलब्ध सामग्री और विभिन्न पक्षों के वकीलों की दलीलों के आधार पर सीबीआई ने प्रथम दृष्टया एक मामला बनाया है जिसमें गहन अध्ययन की और अपीलों पर विस्तार से सुनवाई की जरूरत है। न्यायाधीश ने कहा कि अपील को मई माह में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाए। सीबीआई ने 2018 में अपील दायर की थी। इस पर न्यायाधीश ने 14 मार्च को अपना फैसला सुरक्षित रखा था। विशेष अदालत ने 21 दिसंबर, 2017 को राजा, द्रमुक सांसद कनिमोई और अन्य को 2जी घोटाले से जुड़े सीबीआई तथा ईडी के मामलों में बरी कर दिया था।

ईडी का काम केवल राजनीतिक तोड़-फोड़ करना ही रह गया : गहलोत

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी को लेकर कहा कि पहले झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन और अब दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी केन्द्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग की पराकाष्ठा है। गहलोत ने केजरीवाल की गिरफ्तारी पर सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया में यह बात कही। उन्होंने कहा कि ऐसा देश में पहली बार देखा जा रहा है कि संवैधानिक पदों पर बैठे नेताओं को गिरफ्तार किया जा रहा है। उन्होंने लिखा कि क्या ईडी का काम केवल राजनीतिक तोड़-फोड़ करना ही रह गया है। यह लोकतंत्र की हत्या है। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है कि भाजपा का हर नेता दिर रात 400 पार का शोर मचा रहा है। भाजपा को 200 सीटों का भी आत्मविश्वास नहीं इसलिए तो इस तरह के तानाशाही कदम उठाए जा रहे हैं।

नेपाल में बेचते थे दिल्ली से चुराए फोन

नई दिल्ली । दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच की टीम ने चोरी और छीने गए 473 मोबाइल फोन के साथ पांच लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें नेपाल मूल के नागरिक भी शामिल हैं। इस रैकेट के पकड़े जाने से दिल्ली एनसीआर में 91 अपराधिक मामले सुलझा लेने का दावा पुलिस ने किया गया है। पुलिस ने इनके पास से दो कारें भी जब्त की हैं।डीसीपी क्राइम ब्रांच अमित गोयल ने बताया आरोपियों की पहचान चंपावत उत्तराखंड निवासी पारस जोशी, नेपाल निवासी इंद्र बहादुर, मान सिंह, दिल्ली निवासी रविन्द्र मदान और सतीश के तौर पर हुई। आरोपियों के पास से मिले 280 चोरी के मोबाइल अलग अलग थाना में दर्ज केस से कनेक्ट भी हो गए हैं। पुलिस की तहकीकात में खुलासा हुआ आरोपी इन मोबाइल फोन को नेपाल भेजते थे। इस गैंग में शामिल कुछ सदस्य पहले ही अरेस्ट किए जा चुके हैं। पूछताछ के दौरान आरोपी पारस जोशी ने खुलासा किया वह मान सिंह के माध्यम से नेपाल निवासी उमेश के संपर्क में आया और इन चोरी किए गए मोबाइल फोन को दिल्ली से नेपाल ले जाता था, जिसके बदले उमेश उसे प्रति ट्रांसपोर्टेशन 10,000 रुपए देता था। आमतौर पर वह मान सिंह के साथ हर शनिवार को दिल्ली में इंदर चोरी किए गए मोबाइल फोन लेता था। पारस उस चोरी के फोन को अपनी कार से उत्तराखंड में भारत नेपाल सीमा पर पहुंचाता था। यहां से मान सिंह इन बैगों को किश्तों में नेपाल के महेंद्रनगर ले जाता था।

फार्मेसी कंपनी ने भाजपा को चुनावी बॉण्ड के रुप में 25 करोड़ रुपये का भुगतान किया : आप

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता और दिल्ली सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने दावा किया कि आबकारी नीति मामले में एक फार्मेसी कंपनी के निदेशक को गिरफ्तार करने के बाद कंपनी ने भाजपा को चुनावी बॉण्ड के माध्यम से 25 करोड़ रुपये का भुगतान किया था। आप नेता भारद्वाज ने दावा भी किया कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा गुरुवार रात को गिरफ्तार किए गए मुख्यमंत्री केजरीवाल की जान को खतरा है। उन्होंने कहा, बार-बार यह बात कही जा रही है कि केजरीवाल की जान को खतरा है जिन्हें बिना किसी सबूत के गिरफ्तार किया गया है। भारद्वाज ने आरोप लगाया कि हैदराबाद की एक फार्मा कंपनी ने नवंबर 2022 में भाजपा को चुनावी बॉण्ड के माध्यम से 25 करोड़ रुपये का चंदा दिया था जिसके निदेशक को ईडी ने आबकारी नीति मामले में गिरफ्तार किया था। उन्होंने कहा, ''इसकारण आबकारी मामले में धन के लेनदेन और अपराध की सुई भाजपा की ओर मुड़ रही है।'' मंत्री ने कहा कि आप और सीएम केजरीवाल के खिलाफ अपराध से आय अर्जित होने का कोई सबूत नहीं है जैसा कि केंद्रीय एजेंसी के द्वारा आरोप लगाया जा रहा है। भारद्वाज ने कहा कि जिस तरह से केजरीवाल को गिरफ्तार किया गया, वह 'अमानवीय' है।

अमेठी में रेलवे कर्मचारियों ने धक्का देकर ट्रेन को स्टेशन तक पहुंचाया, वीडियो वायरल

अमेठी । यूपी के अमेठी जिले में रेलवे के कर्मचारियों ने धक्का देकर ट्रेन को स्टेशन तक पहुंचाया है। यहां रेलवे के अधिकारियों के लिए बनी डीपीसी ट्रेन पटरियों के बीच में ही खराब हो गई। जिसके बाद रेल कर्मचारियों के द्वारा ट्रेन को धक्का मारकर मेन लाइन से लूप लाइन में लाया गया। रेलवे कर्मचारियों द्वारा ट्रेन को धक्का मारने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। यह मामला जिले के निहालगढ़ रेलवे स्टेशन का है जहां पर सुल्तानपुर की तरफ से अधिकारी डीपीसी ट्रेन से लखनऊ की तरफ जा रहे थे। तभी अचानक स्टेशन के आउटर पर ट्रेन खड़ी हो गई। मेन लाइन पर ट्रेन के खराब होने से कई अन्य ट्रेन भी प्रभावित होने लगीं। काफी कोशिश के बाद भी डीपीसी ट्रेन नहीं ठीक हो पाई। जिसके बाद रेलवे के कर्मचारियों के द्वारा डीपीसी ट्रेन को धक्का मारकर मेन लाइन से हटाकर लूप लाइन में किया गया। जिसका वीडियो बनाकर लोगों ने सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया। वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे कुछ लोग ट्रेन को धक्का मार रहे हैं। आसपास स्थानीय लोग मौजूद हैं। इस मामले पर आरपीएफ के इंस्पेक्टर आरएस शर्मा ने बताया कि यह डीपीसी ट्रेन है जिस पर अधिकारी लोग बैठकर निरीक्षण करते हैं। ये कल निहालगढ़ स्टेशन के आउटर पर खराब हो गई थी। जिसके बाद रेलवे के कर्मचारियों के द्वारा धक्का मारकर स्टेशन पर लाया गया और बाद में उसकी कमी को सुधारने के बाद आगे के लिए रवाना कर दिया गया। वीडियो में दिखाया गया कि रेलवे फाटक बंद है। दोनों साइड लोग खड़े हैं। बीच में ट्रैक पर ट्रेन को धक्का देकर आगे की ओर किया जा रहा है। वीडियो में लोगों को कहते हुए सुना जा सकता है कि बड़ी देर से लोग परेशान हैं। फाटक बंद है। ट्रेन को धक्का दिया जा रहा है। ये घटना इलाके में चर्चा का विषय बनी हुई है।

गढ़चिरौली में पुलिस ने इनामी नक्सली को किया गिरफ्तार

गढ़चिरौली (ईएमएस)। आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए राज्यों में सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद है। इस बीच गढ़चिरौली में पुलिस ने इनामी नक्सली को किया गिरफ्तार है। नक्सलियों की तरफ से किसी भी तरह की हिंसक वारदात को रोकने के लिए पुलिस और सुरक्षाबलों की टीमें पूरी तरह से मुस्तैद हैं। यह नक्सली सुरक्षाबलों के खिलाफ कई हिंसक वारदातों में सक्रिय रूप से शामिल था। जानकारी के मुताबिक भामरागढ़ सीमा में भामरागढ़ क्यूआरटी चौकी भामरागढ़ पार्टी और सीआरपीएफ के जवान चौकी क्षेत्र में नाकेबंदी कर रहे थे। इसी दौरान सब-डिवीजनल पुलिस अधिकारी भामरागढ़ को गोपनीय सूचना मिली कि नाकाबंदी की जगह के आसपास एक व्यक्ति को संदिग्ध रूप से घूमते हुए देखा गया है। पुलिस ने संदिग्ध व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ की तो उसकी पहचान पेका माडी पुंगती के रूप में हुई। आगे की जांच में ये भी सामने आय कि पुंगती नक्सली है और उस पर डेढ़ लाख का इनाम भी घोषित है। चुनाव से पहले गढ़चिरौली में हार्डकोर नक्सली की गिरफ्तारी पुलिस बल के लिए बड़ी कामयाबी मानी जा रही है। बता दें कि हाल ही में गढ़चिरौली में पुलिस की कमांडो टीम और नक्सलियों के बीच बड़ी मुठभेड़ हुई थी। इस मुठभेड़ में 4 नक्सली मारे गए थे। मुठभेड़ के बाद जंगल से 4 नक्सलियों के शव बरामद किए गए थे।

कांग्रेस ने 57 उम्मीदवारों की तीसरी सूची जारी की, बहरामपुर से अधीर तो गुलबर्गा से लड़ेंगे खरगे के दामाद

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के उम्मीदवारों को अपनी तीसरी सूची जारी कर दी है। इसमें कुल 57 नाम हैं जिसमें अधीर रंजन चौधरी को पश्चिम बंगाल की बहरामपुर से टिकट दिया गया है जबकि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के दामाद राधाकृष्ण को कर्नाटक के गुलबर्गा से मैदान में उतारा गया है। कर्नाटक के बेंगलुरू मध्य संसदीय क्षेत्र से मंसूर खान को टिकट दिया गया है जो पूर्व केंद्रीय मंत्री रहमान खान के पुत्र हैं। बता दें कि देश में 18वीं लोकसभा के लिए चुनाव 19 अप्रैल से शुरू होंगे। इसके बाद छह और चरणों में 26 अप्रैल, सात मई, 13 मई, 20 मई, 25 मई और एक जून को मतदान होगा। लोकसभा के 543 निर्वाचन क्षेत्रों में लगभग 97 करोड़ पंजीकृत मतदाता, 10.5 लाख मतदान केंद्रों पर अपने मताधिकार का इस्तेमाल कर सकेंगे।

गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष अमित चावणा को आणंद और वरिष्ठ नेता सुखराम राठवा को छोटा उदयपुर से उम्मीदवार घोषित किया गया है। कांग्रेस ने राजस्थान में गंगानगर से कुलदीप इंदौरा, पाली से संगीता बेनीवाल, झालावाड़ बारन से उर्मिला जैन भाया और जयपुर से सुनील शर्मा को उम्मीदवार बनाया है। राजस्थान की सीकर सीट माकपा के लिए छोड़ी गई है। तेलंगाना की सिकंदराबाद सीट से डी नागेंद्र और चेवेल्ला से रंजीत रेड्डी को टिकट दिया गया है।रंजीत रेड्डी पिछले दिनों भारत राष्ट्र समिति छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए थे। पूर्व गृह मंत्री सुशील कुमार शिंदे की पुत्री प्रणीति शिंदे को उम्मीदवार बनाया गया है। पश्चिम बंगाल की मालदा दक्षिण सीट से वर्तमान सांसद अबू हासिम खान चौधरी के स्थान पर उनके पुत्र ईसा खान चौधरी को टिकट दिया गया है। कांग्रेस लोकसभा चुनाव के लिए अब तक 138 उम्मीदवारों की घोषणा कर चुकी है। उसने पहली सूची में 39 और दूसरी सूची में 43 उम्मीदवार घोषित किए थे। कांग्रेस की ओर से जारी उम्मीदवारों की तीसरी सूची के अनुसार, अरणाचल प्रदेश की दो सीट, गुजरात की 11, कर्नाटक की 17, महाराष्ट्र की सात, राजस्थान की पांच, तेलंगाना की पांच, पश्चिम बंगाल की आठ और पुडुचेरी की एकमात्र सीट के लिए प्रत्याशी घोषित किए गए हैं। अरुणाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुख नबाम तुकी को अरुणाचल पश्चिम से उम्मीदवार बनाया गया है।

केजरीवाल की गिरफ्तार पर अन्ना ने कहा, उन्हें कोई दुख नहीं

नई दिल्ली । दिल्ली में शराब घोटाला मामले में ईडी ने सीएम अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार कर लिया। केजरीवाल की गिरफ्तारी पर समाजसेवी अन्ना हजारे की ओर से प्रतिक्रिया आई है। उन्होंने कहा कि केजरीवाल की गिरफ्तारी पर उन्हें कोई दुख नहीं है। समाजसेवी हजारे ने कहा कि केजरीवाल के दिल्ली का मुख्यमंत्री बनने के बाद नई शराब पॉलिसी लेकर आए, इस लेकर मैंने उन्हें दो बार पत्र लिखा था। मुझे इस बात का दुख है कि मेरी बात नहीं मानी गई और अब वह गिरफ्तार हो गए हैं। अन्ना ने कहा कि जब केजरीवाल और मनीष सिसोदिया आंदोलन के समय हमारे साथ आए थे, तब भी मैंने उन दोनों से कहा था कि देश की भलाई के लिए काम करना है। लेकिन, दोनों ने मेरी बातों को नहीं मना। ना ही केजरीवाल ने मेरी बात मानी। अन्ना ने दो टूक कहा कि मैं उन्हें कोई सलाह नहीं दूंगा और साथ ही मुझे केजरीवाल के हालात पर कोई दुख नहीं है। अन्ना ने कहा कि कभी हम दोनों शराब जैसे भ्रष्टाचार के खिलाफ साथ खड़े थे और आज वे खुद शराब नीति बना रहा था उन्होंने कहा कि केजरीवाल ने कभी भी मेरी बात नहीं मानी, इसका मुझे दुख है।

'लालू ने पहले बेटी से किडनी ली, फिर...', सम्राट चौधरी के बयान पर बिहार में मचा सियासी बवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव पर तीखा हमला बोलते हुए गंभीर और विवादित बयान दिया है। उन्होंने कहा, ÷लालू प्रसाद (यादव) ऐसे नेता हैं जो टिकट बेचने में माहिर हैं। उन्होंने अपनी बेटी को भी नहीं बख्शा। पहले तो उससे किडनी ली और फिर उसे टिकट दे दिया। बिहार के डिप्टी सीएम की अरुचिकर टिप्पणी ने बड़े पैमाने पर विवाद खड़ा कर दिया और राजद ने कहा, 'सम्राट चौधरी अनर्गल बयान देकर कुशवाहा समुदाय का अपमान कर रहे हैं। हमारा समाज कभी भी इस तरह के घटिया बयानों के पक्ष में नहीं रहा है और न ही ऐसी भाषा का समर्थन करता है।'

दिल्ली के आप विधायक नरेश बाल्यान ने भी ऐसी 'घृणित' टिप्पणी करने और उपमुख्यमंत्री की कुर्सी का सम्मान नहीं करने के लिए चौधरी की आलोचना की। राजद ने कहा कि अगर कोई पुत्र-पुत्री बीमारी में अपने माँ-बाप की सेवा करता है तो क्या वो गलत है? सम्राट चौधरी ने अनर्गल बयानबाज़ी कर समस्त मातृ शक्ति को गाली दी है। बिहार की महिलाएँ दूषित सोच की बीमारी से ग्रस्त उपमुख्यमंत्री और महिला विरोधी पार्टी भाजपा का बहिष्कार करती है। राजद की रितु जयसवाल ने कहा कि बिहार बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने जिस प्रकार रोहिणी आचार्य जी और लालू प्रसाद यादव जी के पिता-पुत्री के रिश्ते के बारे में अनर्गल बयानबाजी की है, वह इनकी घृणित मानसिकता को दर्शाता है।

रोहिणी आचार्य ने अपने एक्स पोस्ट में कहा कि अपने पापा को अपनी एक किडनी देना तो उनके प्रति मेरा कर्तव्य और प्यार है। अपने परिवार और अपनी जन्मभूमि बिहार के लिए तो रोहिणी अपनी जान न्योछावर करने को तैयार है। रोहिणी आचार्य लालू प्रसाद यादव की सिंगापुर स्थित बेटी हैं, जिन्होंने हाल ही में दिसंबर 2022 में अपने पिता को अपनी किडनी दान करने के बाद सुर्खियां बटोरीं। ऑपरेशन सिंगापुर में हुआ जहां रोहिणी अपने पति और दो बच्चों के साथ रहती हैं। हालांकि रोहिणी कई सालों से पटना से दूर थीं लेकिन वह राजनीति के संपर्क में हैं और सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं।

हाल ही में उन्होंने अपनी मां राबड़ी देवी, पिता लालू प्रसाद यादव और अपने भाइयों तेज प्रताप और तेजस्वी के साथ मंच साझा किया था। पटना के गांधी मैदान में आयोजित विपक्ष की जन विश्वास रैली में इंडिया ब्लॉक के प्रमुख नेता भी वहां मौजूद थे। आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में रोहिणी आचार्य के संभावित चुनावी पदार्पण की अटकलें तेज हैं। रिपोर्टों में कहा गया है कि रोहिणी बिहार की सारण सीट से चुनाव लड़ सकती हैं।

केजरीवाल के परिजनों से मिलेंगे राहुल गांधी, कांग्रेस करेगी कानूनी मदद

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को ईडी ने गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तारी के तुरंत बाद कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला और तंज कसते हुए कहा था कि एक डरा हुआ तानाशाह मरा हुआ लोकतंत्र चाहता है। इस तंज के बाद खबर आ रही है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी केजरीवाल के परिजनों से मुलाकात करेंगे और कांग्रेस पार्टी उनकी कानूनी मदद करेगी।कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, डरा हुआ तानाशाह, एक मरा हुआ लोकतंत्र बनाना चाहता है। उन्होंने दावा किया, मीडिया समेत सभी संस्थाओं पर कब्ज़ा, पार्टियों को तोड़ना, कंपनियों से हफ्ता वसूली, मुख्य विपक्षी दल का अकाउंट 'फ्रीज' करना भी 'असुरी शक्ति' के लिए कम था, तो अब चुने हुए मुख्यमंत्रियों की गिरफ्तारी भी आम बात हो गई है। उन्होंने कहा कि इंडिया गठबंधन इसका मुंहतोड़ जवाब देगा। बताया जा रहा है कि ईडी द्वारा गिरफ्तारी के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अरविंद केजरीवाल के परिवार से संपर्क किया। जानकारी के मुताबिक राहुल गांधी ने केजरीवाल के परिवार को अपना पूरा समर्थन देने का आश्वासन दिया दिया है। पार्टी सूत्रों के अनुसार, राहुल गांधी आगे की कानूनी सहायता की पेशकश करने के लिए केजरीवाल या फिर उनके परिवार से मिलने की कोशिश करेंगे। कांग्रेस ने अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के बाद केंद्र सरकार पर तीखा प्रहार किया और दावा किया कि एक डरा हुआ तानाशाह मरा हुआ लोकतंत्र चाहता है।

ऋू सेफ्टी गाइडलाइंस का उल्लंघन, एयर इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुर्माना

नई दिल्ली (एजेंसी)। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने उड़ान शुल्क समय सीमा से संबंधित मानदंडों के उल्लंघन के लिए एयर इंडिया पर 80 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। एक संचार के अनुसार, विमानन नियामक ने पायलटों के लिए संशोधित उड़ान शुल्क मानदंडों को लागू करने के लिए 1 जून की समय सीमा को नहीं बढ़ाने का फैसला किया था और एयरलाइंस को 15 अप्रैल तक संशोधित योजनाएं प्रस्तुत करने के लिए कहा था। फेडरेशन ऑफ इंडियन एयरलाइंस (एफआईए), जिसमें एयर इंडिया, स्पाइसजेट और इंडिगो शामिल हैं, ने नियामक को कम से कम दो बार पत्र लिखकर संशोधित उड़ान शुल्क समय सीमा (एफडीटीएल) मानदंडों के कार्यान्वयन के लिए अधिक समय मांगा था, जो 8 जनवरी को जारी किए गए थे।

1 जून से लागू होने वाले नए मानदंड, पायलटों के लिए आराम का समय प्रदान करते हैं और पायलटों की थकान को कम करने का प्रयास करते हैं। एफआईए को एक संचार में, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने कहा कि एयरलाइंस को 1 जून, 2024 से संशोधित एफडीटीएल सीएआर को लागू करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने होंगे। इसके अलावा, वाहकों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि संशोधित मानदंडों के अनुरूप एफडीटीएल योजनाएं 15 अप्रैल तक अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की जाएं।

केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में 26 मार्च को पीएम आवास का घेराव करेगी 'आप', होली नहीं खेलेंगे कार्यकर्ता

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ विरोध दर्ज कराने के लिए आम आदमी पार्टी 26 मार्च को प्रधानमंत्री आवास का घेराव करेगी। इस बात की जानकारी पार्टी नेता गोपाल राय ने दी। उन्होंने कहा कि इस साल होली का कार्यक्रम नहीं होगा, बल्कि हम लोगों के पास जाएंगे और उन्हें बताएंगे कि देश में क्या हो रहा है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि दिल्ली के मंत्री, आप विधायक, पार्षद शनिवार को शहीदी पार्क में देश की रक्षा का संकल्प लेंगे। उन्होंने बताया कि आज इंडिया गठबंधन के नेताओं ने चुनाव आयोग से मुलाकात की है...और इस (अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी) पर कार्रवाई का अनुरोध किया है।

गोपाल राय ने कहा कि 25 मार्च को हम लोगों के पास जाएंगे और उन्हें बताएंगे कि देश में क्या हो रहा है... दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के विरोध में 26 मार्च को पूरी दिल्ली पीएम आवास का घेराव करेगी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता ने शुक्रवार को पति की गिरफ्तारी पर अपनी पहली प्रतिक्रिया में प्रधानमंत्री की आलोचना करते हुए कहा कि मोदीजी ने सत्ता के अहंकार में तीन बार निर्वाचित सीएम को गिरफ्तार करवाया।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सुनीता केजरीवाल ने लिखा कि पीएम मोदी ने सत्ता के अहंकार में तीन बार के निर्वाचित मुख्यमंत्री को गिरफ्तार करवा दिया. वह हर किसी को कुचलने की कोशिश कर रहा है. यह दिल्ली की जनता के साथ धोखा है।% आपके मुख्यमंत्री सदैव आपके साथ खड़े हैं। चाहे अंदर हो या बाहर, उनका जीवन देश के लिए समर्पित है। जनता सब जानती है कि वह जनार्दन हैं। जय हिन्द। शराब नीति मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा गुरुवार शाम को गिरफ्तार किए गए केजरीवाल को राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया गया क्योंकि उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के समक्ष दायर अपनी याचिका वापस ले ली थी।

जम्मू कश्मीर में थर्ड फ्रंट ले रहा आकार, क्या गुलाम नबी आजाद बिगाड़ेंगे INDIA ब्लॉक का गेम?

सुलतानपुर (एजेंसी)। आगामी लोकसभा चुनावों में जम्मू-कश्मीर में सत्तारूढ़ भाजपा के साथ-साथ विपक्षी दल इंडिया ब्लॉक से मुकाबला करने के लिए, तीन स्थानीय दल गुलाम नबी आज़ाद की डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आज़ाद पार्टी (डीपीएपी), अल्ताफ बुखारी की जम्मू-कश्मीर अपनी पार्टी और सज्जाद लोन के नेतृत्व वाली पार्टी जम्मू-कश्मीर पीपुल्स कॉन्फ्रेंस - गठबंधन बनाने और केंद्र शासित प्रदेश में तीसरा मोर्चा बनाने के लिए तैयार है। उच्च पदस्थ सूत्रों ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया कि तीनों दलों के शीर्ष नेता यूटी की सभी पांच लोकसभा सीटों पर सर्वसम्मति से उम्मीदवार उतारने की संभावना पर चर्चा कर रहे हैं, जिसमें कश्मीर घाटी की तीन और जम्मू की दो सीटें शामिल हैं। . क्षेत्र। हालाँकि उन्हें अभी भी किसी समझौते पर पहुँचना बाकी है।

अपनी पार्टी के महासचिव रफी मीर ने मंगलवार को कहा कि उन्होंने विभिन्न समान विचारधारा वाले दलों से बात करने का प्रस्ताव रखा है जो जम्मू-कश्मीर के लोगों की समृद्धि के लिए काम करना चाहते हैं। डीपीएपी के मुख्य प्रवक्ता सलमान निज़ामी ने कहा कि समान विचारधारा वाले दलों के साथ बातचीत प्रारंभिक चरण में थी। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में डीपीएपी अध्यक्ष गुलाम नबी आज़ाद द्वारा अंतिम निर्णय लिया जाएगा। पहला संकेत सोमवार को श्रीनगर में अपनी पार्टी की एक असाधारण बैठक के दौरान आया, जहां पार्टी ने अपने अध्यक्ष सैयद मोहम्मद अल्ताफ बुखारी को समान विचारधारा वाले दलों के साथ गठबंधन की संभावना तलाशने के लिए अधिकृत किया। सूत्रों ने कहा कि तीन-दलीय गठबंधन का नेतृत्व डीपीएपी प्रमुख गुलाम नबी आज़ाद, पूर्व कांग्रेस दिग्गज और पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा किए जाने की संभावना है, उन्होंने दावा किया कि फारूक अब्दुल्ला के नेतृत्व वाले नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) सहित अन्य दलों के कई पूर्व विधायक और मंत्री भी इसमें शामिल होंगे। और महबूबा मुफ्ती के नेतृत्व वाली पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) इसमें शामिल होगी।

एक बार बनने के बाद, गठबंधन के जम्मू-कश्मीर में भारतीय गुट के लिए एक बड़ी चुनौती पेश करने की संभावना है। एनसी, पीडीपी और कांग्रेस के कई नेता, जो जम्मू-कश्मीर में भारत के प्रमुख घटक हैं, अगस्त 2019 में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने और अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा दिए जाने के बाद भाजपा, अपनी पार्टी या डीपीएपी में शामिल हो गए। अपनी ओर से विपक्षी गुट अब तक जम्मू-कश्मीर में सीट-बंटवारा समझौता करने में विफल रहा है। एनसी ने घोषणा की है कि वह घाटी की सभी तीन सीटों - अनंतनाग, श्रीनगर और बारामूला - पर अपने उम्मीदवार उतारेगी, हालांकि पीडीपी चाहती है कि वह अनंतनाग को महबूबा के लिए छोड़ दे। 2019 के चुनावों में एनसी के मोहम्मद अकबर लोन ने जम्मू-कश्मीर पीपुल्स कॉन्फ्रेंस के उम्मीदवार को 30,233 वोटों से हराकर बारामूला सीट जीती थी। लोन को 1,33,426 वोट मिले, जबकि निर्दलीय इंजीनियर रशीद को 1,02,168 और पीडीपी के अब्दुल कयूम वानी को 53,530 वोट मिले। अनंतनाग में तब नेकां के हसनैन मसूदी को 40,180 वोट मिले थे और उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के जी ए मीर को 6,676 वोटों से हराया था। महबूबा और भाजपा उम्मीदवार सोफी यूसुफ क्रमशः 30,524 वोट और 10,225 वोट पाकर तीसरे और चौथे स्थान पर रहे थे।

जापान में भूकंप के झटके, बाल-बाल बचे राजामौली

- बेटे कार्तिकेय ने एक्स पर लिखा-बहुत भयानक और डावना मंजर देखा

टोकयो । गुरुवार को जापान में 5.3 की तीव्रता वाला भूकंप आया था इस दौरान जापान में फिल्म की शूटिंग को लेकर जापान गए साउथ फिल्मों के जाने-माने फिल्ममेकर एसएस राजामौली फंस गए। राजामौली के साथ उनका बेटा कार्तिकेय भी था। पिछले कुछ दिनों से राजामौली अपनी फिल्म आरआरआर की स्क्रीनिंग के चलते जापान में हैं जहां उन्होंने जापान में आए भूकंप को करीब से देखा राजामौली अपने बेटे कार्तिकेय के साथ जापान में एक बिल्डिंग की 28वीं मंजिल पर मौजूद थे। कार्तिकेय ने अपनी स्मार्टवॉच की एक तस्वीर साझा की, जिसमें भूकंप का अलर्ट देखने को मिला और अनुभव के बारे में बताया। कार्तिकेय ने बताया कि भूकंप के झटके काफी तेज थे उसे देख कर ही डर लग रहा था। उन्होंने कहा मैंने बहुत ही भयानक और डावना मंजर देखा। भूकंप का फोटो शेयर करते हुए कार्तिकेय ने कैप्शन में लिखा- 'जापान में अभी-अभी भयंकर भूकंप महसूस हुआ। 28वीं मंजिल पर था और धीरे-धीरे जमीन हिलने लगी और हमें यह समझने में थोड़ा समय लगा कि यह भूकंप था. मैं बस घबराने ही वाला था, लेकिन आस-पास के सभी जापानी लोग सामान्य नजर आ रहे थे। कार्तिकेय के इस पोस्ट ने उनके फैंस को चिंता में डाल दिया। कई यूजर्स ने उनके पोस्ट पर रिएक्शन देते हुए उनकी सलामती के बारे में पूछा तो कुछ ने उनके और उनके पापा राजामौली के जल्द भारत लौटने की प्रार्थना की। एक यूजर ने लिखा- मुझे खुशी है कि आप सभी सुरक्षित हैं। एक फैन ने कहा, बाद में फिर झटके आ सकते हैं, इसलिए कृपया आज सावधान रहें। एक और यूजर लिखता है- मैं आपको सुरक्षित देखकर खुश हूं। मुझे यह सुनकर राहत मिली कि आप सुरक्षित हैं, अपनी बची हुई यात्रा का आनंद लें। राजामौली और आरआरआर को जापान से बहुत प्यार मिला है. जब यह फिल्म देश में रिलीज हुई तो जबरदस्त हिट हुई थी और रिलीज के बाद से ही फैंस ने फिल्म निर्माता को लेकर अपना प्यार और समर्थन दिया था। राजामौली, कार्तिकेय और शोबू हाल ही में आरआरआर की विशेष स्क्रीनिंग के लिए जापान गए थे। इस दौरान राजामौली ने अपनी अपकमिंग फिल्म, एसएसएमबी 29 के बारे में भी अपडेट साझा किया, जिसमें महेश बाबू मुख्य किरदार निभा रहे हैं।

जड़ से समाप्त होगा एचआईवी, रिसर्च में डॉक्टर्स को मिल सफलता

नॉटिंघम। अब एचआईवी लाइलाज नहीं रह जाएगा। दरअसल रिसर्चर्स ने क्रिस्पर (सीआरआईएसपीआर) नाम की एक शक्तिशाली तकनीक इजाद कर एचआईवी के इलाज की दिशा में एक बड़ी सफलता अर्जित कर ली है। क्रिस्पर को आणविक कैंची के तौर पर जाना जाता है, और वैज्ञानिकों ने इसका उपयोग एचआईवी के डीएनए को संक्रमित कोशिकाओं से अलग करने व हटाने के लिए किया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, यह मेडिकल साइंस के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि मौजूदा उपचार से एचआईवी को महज कंट्रोल किया जा सकता हैं, लेकिन इसे पूरी तरह से खत्म नहीं किया जा सकता है। नया शोध हालांकि शुरुआती दौर में है, लेकिन वायरस को पूरी तरह से खत्म करने की उम्मीद जगाने वाला है। एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचआईवी के इस नए इलाज के लिए एक मेडिकल कॉन्फ्रेंस में अपने निष्कर्षों को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि यह अभी भी एक शुरुआती कॉन्सैप्ट है और इससे तुरंत कोई इलाज नहीं किया जा सकता । ऐसे में रिसर्चर्स को और ज्यादा शोधकार्य करने की आवश्यकता है ताकि पता चल सके कि यह तरीका कितना सुरक्षित और कारगर होता है। इस संबंध में नॉटिंघम विश्वविद्यालय में स्टेम सेल और जीन थेरेपी टेक्नोलॉजीज के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ. जेम्स डिक्सन ने बताया कि एचआईवी के इलाज के लिए क्रिस्पर का प्रयोग करने वाली रिसर्च का पूर्ण मूल्यांकन बहुत जरुरी है। उन्होंने बताया कि यह शोध जीन-एडिटिंग तकनीक का उपयोग करके एचआईवी को रोगी कोशिकाओं से पूरी तरह से हटाने की कोशिश करने जैसा है। यह एक दिलचस्प खोज है, लेकिन अभी भी बहुत अधिक इस पर काम होना बाकी है।

पाकिस्तान में पवित्र ग्रंथ के पन्ने जलाने के आरोप में महिला को आजीवन कारावास की सजा

लाहौर। पाकिस्तान की एक अदालत ने एक मुस्लिम महिला को इस्लाम के पवित्र ग्रंथ के पन्ने जलाने का दोषी पाकर आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। एक अभियोजक ने शुक्रवार को इसकी जानकारी दी। पाकिस्तान के ईशनिंदा कानूनों के तहत, धर्म या धार्मिक शख्सियतों का अपमान करने का दोषी होने पर व्यक्ति को मौत की सजा तक दी जा सकती है। हालांकि, अधिकारियों ने अभी तक ईशनिंदा के लिए मौत की सजा नहीं दी है। सरकारी अभियोजक मोहजिब अवैस ने कहा कि आसिया बीबी को 2021 में ईशनिंदा के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। उस दौरान महिला के खिलाफ निवासियों ने दावा किया था कि महिला ने कुरान के पन्ने जलाकर उसका अपमान किया है। उन्होंने कहा कि बीबी ने अपने मुकदमे के दौरान आरोप से इंकार किया था। ईसाई समुदाय की एक महिला का नाम भी आसिया बीबी था। उस ईशनिंदा कानून का उल्लंघन करने पर आठ साल पहले मौत की सजा सुनाई गई थी, लेकिन 2019 में आसिया को बरी कर दिया गया था। अपनी रिहाई के बाद इस्लामी चरमपंथियों से मिल रही मौत की धमकियों से बचने के लिए वह कनाडा चली गई थीं। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार समूहों का मानना है कि ईशनिंदा के आरोपों का इस्तेमाल हमेशा की धार्मिक अल्पसंख्यकों को डराने और व्यक्तिगत रंजिश के कारण होता है।

श्रीलंका में मछली पकड़ने के आरोप में 32 भारतीय मछुआरे हिरासत में

- भारत और श्रीलंका के आपसी रिश्ते में यह एक विवादास्पद मुद्दा

तलाईमन्नार। श्रीलंका के तलाईमन्नार तट और डेल्फ्ट उपद्वीप के समीप समुद्री सीमा पर अवैध रुप से मछली पकड़ने के आरोप में श्रीलंकाई नौसेना ने 32 भारतीय मछुआरों को हिरासत में ले लिया। एक सरकारी बयान में यह जानकारी दी गयी है। बयान के अनुसार नौसेना ने तलाईमन्नार में विगत बुधवार को सात भारतीय मछुआरों को दो नौकाओं के साथ तथा डेल्फ्ट उपद्वीप के पास 25 भारतीय मछुआरों को तीन नौकाओं के साथ पकड़ा। बयान के मुताबिक सात मछुआरों और उनकी दो नौकाओं को तलाईमन्नार गोदी में लाया गया जबकि 25 मछुआरों और उनकी तीन नौकाओं को कंकासंथुरई बंदरगाह ले जाया गया। श्रीलंकाई नौसेना ने 2024 में अबतक 23 भारतीय नौकाओं और 178 भारतीय मछुआरों को पकड़ा है और उन्हें कानूनी कार्रवाई के लिए प्रशासन को सौंपा है। मछुआरों का मुद्दा भारत और श्रीलंका के आपसी रिश्ते में एक विवादास्पद मुद्दा है। श्रीलंका की समुद्री सीमा में अवैध रूप से घुस जाने की कथित घटनाओं में पाक जलडमरूमध्य में श्रीलंका के नौसैनिक भारतीय मछुआरों पर गोलियां भी चला देते हैं और उनकी नौकाएं जब्त कर लेते हैं। पाक जलडमरूमध्य श्रीलंका को तमिलनाडु से अलग करने वाली संकरी जलपट्टी है जो दोनों देशों के मछुआरों के लिए मछलियां पकड़ने की जगह है। बता दें वर्ष 2023 में श्रीलंका की नौसेना ने समुद्री सीमा में कथित रूप से मछली पकड़ने को लेकर 240 भारतीय मछुआरों को 35 नौकाओं के साथ पकड़ा था।

ऑस्ट्रेलिया-ब्रिटेन के बीच परमाणु पनडुब्बियों के लिए समझौता

लंदन। ऑस्ट्रेलिया और ब्रिटेन ने दक्षिण चीन सागर और दक्षिण प्रशांत महासागर में चीन की बढ़ती गतिविधियां और चुनौतियों से निपटने के लिए एक रक्षा और सुरक्षा समझौता किया है जिसके एक दिन बाद यह घोषणा की गयी। ऑस्ट्रेलियाई सरकार परमाणु संचालित पनडुब्बियों के निर्माण और समय पर उसकी आपूर्ति के लिए ब्रिटिश उद्योग को तीन अरब डॉलर मुहैया कराएगी। ब्रिटेन के रक्षा मंत्री ने कहा कि पनडुब्बी कार्यक्रम महंगा है लेकिन यह समय की जरुरत है। उन्होंने ऑस्ट्रेलियन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन से कहा कि परमाणु संचालित पनडुब्बियां किफायती नहीं हैं लेकिन हम पहले से कहीं अधिक खतरनाक दुनिया में रह रहे हैं जहां हम चीन की बढ़ती दादागीरी, पश्चिम एशिया के साथ यूरोप में भी एक और खतरनाक दुनिया देख रहे हैं। मंत्रियों की बैठक में घोषित 10 वर्षीय इस समझौते के तहत ब्रिटेन के डर्बी में स्थित रॉल्स-रॉयस फैक्ट्री में परमाणु रिएक्टर बनाने की क्षमता बढ़ेगी जिससे ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड में बीएई सिस्टम्स द्वारा पनडुब्बियों के निर्माण को बढ़ावा मिलेगा।

नोम पेन्ह में जेम्स व ज्वेलरी फेयर में भाग लेती हुई मॉडल्स।

शिकागो से शुरु होगी रामरथ यात्रा : 48 राज्यों के 851 मंदिरों से होती हुई 8 हजार मील की दूरी तय करेगी

वाशिंगटन । अयोध्या में रामलला का मंदिर बनने के बाद पूरी दुनिया में श्रीराम के भक्तों में उत्साह बढ़ा है। सोमवार से अमेरिका में व्यापक स्तर पर राम मंदिर रथयात्रा निकाली जाएगी। यह यात्रा सोमवार को शिकागो से प्रारंभ होगी। 48 राज्यों में रथयात्रा निकलेगी जो 60 दिन में 851 मंदिरों तक जाएगी। इस दौरान रथयात्रा 8 हजार मील का सफर तय करेगी। यात्रा 23 अप्रैल को श्री हनुमान जयंती के दिन इलिनोइस के शुगर ग्रोव में समाप्त होगी। इस संबंध में रथयात्रा के आयोजक संगठन 'विश्व हिंदू परिषद ऑफ अमेरिका' (वीएचपीए) के महासचिव अमिताभ मित्तल ने बताया कि टोयोटा सिएना वैन के ऊपर बने रथ में भगवान राम, देवी सीता, लक्ष्मण और हनुमान की मूर्तियों के साथ-साथ अयोध्या के राम मंदिर से लाया गया विशेष प्रसाद और प्राण प्रतिष्ठा पूजित अक्षत कलश भी होगा। मित्तल ने कहा कि 'राम मंदिर के उद्घाटन ने दुनियाभर के 1.5 अरब से अधिक हिंदुओं के दिलों को प्रसन्नता से भर दिया है। साथ ही उनमें एक नई ऊर्जा और विश्वास का संचार किया है। राष्ट्रव्यापी रथ यात्रा 25 मार्च को अमेरिका के शिकागो से शुरू होगी और 8000 मील से अधिक की दूरी तय करेगी। यह यात्रा अमेरिका के 851 मंदिर और कनाडा के लगभग 150 मंदिरों में जाएगी। कनाडा में रथ यात्रा का आयोजन 'विश्व हिंदू परिषद ऑफ कनाडा' कर रही है। अमेरिका के सभी मंदिरों की शीर्ष संस्था 'हिंदू मंदिर सशक्तीकरण परिषद' (एचएमईसी) की तेजल शाह ने कहा, 'इस रथ यात्रा का उद्देश्य हिंदू धर्म के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना, उन्हें शिक्षित करना और सशक्त बनाना है।'उन्होंने कहा कि यह यात्रा सभी हिंदुओं को एकजुट होने और इसमें भाग लेने का अवसर प्रदान करेगी और इससे हिंदू लोकाचार और धर्म का पुनरुत्थान होगा।

भारत सरकार से सही दिशा में कदम उठाने का अनुरोध करे कांग्रेस : अमेरिकी सांसद

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका के एक प्रभावशाली सांसद ने बृहस्पतिवार को कहा कि अमेरिकी संसद को भारत सरकार से आतंकवाद रोधी कानूनों समेत उन नीतियों तथा कानूनों पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करना चाहिए जो प्रमुख मानवाधिकार संधियों की अभिपुष्टि के चलते प्राप्त उसके दायित्वों से 'भिन्न' हैं।

कांग्रेस सदस्य जेम्स मैकगवर्न ने भारत में मानवाधिकारों पर संसद में सुनवाई के दौरान कहा कि भारत में अगले पांच साल के लिए देश की राजनीतिक दिशा तय करने के वास्ते 19 अप्रैल को आम चुनाव शुरू हो जाएंगे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीसरा कार्यकाल हासिल की कोशिश में हैं।

उन्होंने कहा, 'मैं उन लोगों में से हूं जो सोचते हैं कि मित्रों को एक-दूसरे को कड़वी सच्चाई बतानी चाहिए। भारत एक मित्र है और अमेरिका के लिए यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि भारत समृद्ध हो। फिर भी एक वास्तविक खतरा है कि अगर मानवाधिकार हनन पर ध्यान नहीं दिया गया तो विविध समाजों में निहित तनाव खतरनाक संघर्ष में बदल सकता है और भारत के उज्ज्वल भविष्य को कमजोर कर सकता है।'

मैकगवर्न ने कहा, 'मणिपुर राज्य में जातीय हिंदू और ईसाई समुदायों के बीच हाल की साम्प्रदायिक हिंसा महज एक उदाहरण है। कांग्रेस को भारत सरकार से सही दिशा में कदम उठाने और आतंकवाद रोधी कानूनों समेत उन नीतियों तथा कानूनों पर पुनर्विचार करने का अनुरोध करना चाहिए जो प्रमुख मानवाधिकार संधियों की अभिपुष्टि के चलते प्राप्त उसके दायित्वों से 'भिन्न' हैं।

'अमेरिकन बार एसोसिएशन सेंटर फॉर ह्यूमन राइट्स' के कानूनी सलाहकार वारिस हुसैन ने बताया कि कांग्रेस को इन चिंताओं के बारे में अमेरिकी राष्ट्रपति को सीधे प्रधानमंत्री मोदी से बात करने के लिए उन पर और अधिक मजबूती से दबाव बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा, 'प्रधानमंत्री मोदी ही हैं जिनके पास अपनी सरकार, पार्टी को उनकी 'जहरीली बयानबाजी तथा उनके अपमानजनक कानूनों और नीतियों' के बारे में निर्देश देने की शक्ति है।'

अमेरिका ने निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल पर लगाया प्रतिबंध

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका ने निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल वेंडी कैरोलिना मोरालेस उर्बिना पर प्रतिबंध लगाया है। अमेरिकी ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) ने गुरुवार को एक बयान में यह जानकारी दी। बयान के अनुसार, ट्रेजरी विभाग के विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय (ओएफएसी) ने निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल वेंडी कैरोलिना मोरालेस उरबिना को ओर्टेगा-मुरीलो शासन के उत्पीड़न में शामिल होने के लिए प्रतिबंध लगाया है। अमेरिकी अधिकारियों ने कहा कि मोरालेस उर्बिना पूर्व में स्वतंत्र मीडिया आउटलेट, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और राजनीतिक कैदियों की वास्तविक संपत्तियां जब्त करने के लिए जिम्मेदार है। बयान के अनुसार, 'मोरालेस अर्बिना ने स्पष्ट रूप से संघ की स्वतंत्रता को दबाने के लिए कानून के अंतर्गत हजारों गैर-सरकारी संगठनों की संपत्ति जब्त कर ली। उन्होंने निकारागुआ से निर्वासित किए गए 222 राजनीतिक कैदियों को सभी संपत्तियों को बेदखल कर दिया।' अमेरिकी ट्रेजरी ने कहा कि निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल एक प्रमुख व्यक्ति थे जो निकारागुआ के विपक्षी सदस्यों को आतंकवादी के रूप में नामित करने की रणनीति तैयार कर रहे थे। बयान के अनुसार, उन्होंने वित्तीय संसाधनों को अवरुद्ध करने के लिए एक मौजूदा आतंकवाद विरोधी कानून का उपयोग किया। ट्रेजरी के अंडर सेक्रेटरी ब्रायन नेल्सन ने कहा, 'निकारागुआ के अटॉर्नी जनरल, ओर्टेगा-मुरिलो शासन [निकारागुआ के राष्ट्रपति डैनियल ओर्टेगा और उपराष्ट्रपति रोसारियो मुरिलो] के साथ मिलकर, बिना किसी कानूनी आधार के सरकार के राजनीतिक विरोधियों की संपत्ति जब्त करके असंतोष को दबाने के लिए एक समन्वित अभियान चलाकर अपने कार्यालय का दुरुपयोग किया।' बयान में कहा गया कि 2018 में निकारागुआ में सरकार विरोधी प्रदर्शन हुए थे लेकिन अधिकारियों ने प्रदर्शनों को दबा दिया और राजनीतिक कार्यकर्ताओं को जेल में बंद कर दिया।

किसी झरने की तरह पेड़ से 30 साल से गिर रहा पानी , आज तक कोई इसकी वजह नहीं जान पाया

वॉशिंगटन। सोशल मीडिया पर एक वीडियो जमकर वायरल हो रहा है जिसमें एक पेड़ से किसी झरने की तरह पानी फूट रहा है। पहाड़ी से झरना फूटना आम बात है लेकिन अगर किसी पेड़ से झरना फूट पड़े, तो आश्चर्यचकित होना बनता है। इस वक्त सोशल मीडिया पर ऐसा ही एक वीडियो वायरल हो रहा है, जो आपको चकित कर देगा। ये पेड़ यूरोपीय देश मोंटेनेग्रो में है। यहां करीब 30 सालों से एक पेड़ से रहस्यमय तरीके से पानी गिरता रहता है। इसकी सही वजह किसी को भी नहीं पता है ।वायरल हो रहे वीडियो में आप देख सकते हैं कि एक पेड़ से किसी झरने की तरह पानीकी धार फूट रही है और ये धारा इतनी मोटी और लगातार निकलती है कि लगता है ये कोई झरना या फव्वारा है। बताया जाता है कि पहली बार ये 1990 के दशक में दिखाई दिया और तब से साल में एक बार पेड़ से पानी निकलने की ये घटना दिखाई ही देती है। मोंटेनेग्रो की राजधानी पॉडगोर्सिया में मौजू दिनोसा गांव में ये पेड़ है। बताते हैं कि ये 100 से 150 साल पुराना है और पेड़ के करीब 5 फीट ऊंचाई पर मौजूद तने से पानी की धार निकलती है। वैसे तो पेड़ में बहार और पतझड़ के मौसम में पानी कहां से गिरने लगता है, ये किसी को नहीं पता लेकिन माना ये जाता है कि ये पेड़ के नीचे बहने वाली छोटी नदी का कमाल है। जब लगातार बारिश से नदी में पानी उफान पर आता है तो पेड़ के खोखले तने से होकर ऊपर बहने लगता है।

गाजा पर यूएनएससी के दूसरे प्रस्ताव पर शुक्रवार को हो सकता है मतदान

संयुक्त राष्ट्र (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र में फ्रांसीसी राजदूत निकोलस डी रिविएर ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा गाजा में युद्धविराम की मांग करने वाले एक मसौदा प्रस्ताव पर शुक्रवार को एक और मतदान हो सकता है अगर अमेरिकी मसौदा को नहीं अपनाया जाता है। फिलहाल, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में दो मसौदा प्रस्ताव हैं - एक अमेरिकी मसौदा और एक सुरक्षा परिषद के दस गैर-स्थायी सदस्यों का मसौदा। सुरक्षा परिषद के गैर-स्थायी सदस्यों के मसौदे में रमजान के महीने में तत्काल युद्धविराम की मांग की गई है, जिससे स्थायी युद्धविराम हो सकता है। इस बीच, अमेरिकी मसौदे में युद्धविराम की सीधी मांग नहीं की गई है। इसमें कहा गया है कि सुरक्षा परिषद 'तत्काल एवं स्थायी संघर्षविराम की तत्काल आवश्यकता महसूस करती है और शेष बंधकों की रिहाई के साथ युद्धविराम की प्राप्ति के लिए चल रहे अंतरराष्ट्रीय राजनयिक प्रयासों का स्पष्ट रूप से समर्थन करती है। डी रिविएर ने संवाददाताओं से कहा कि 'हम संभवतः अमेरिकी मसौदे पर शुक्रवार सुबह मतदान करेंगे। और फिर दो विकल्प हैं - या तो अमेरिकी मसौदे को अपनाया जाए और अगर उसे नहीं अपनाया जाता है, तो निर्वाचित सदस्यों के मसौदे पर मतदान किया जाएगा और मुझे उम्मीद है कि इसे अपनाया जाएगा।' फ्रांसीसी राजदूत की टिप्पणी के बाद, संयुक्त राष्ट्र में रूस के पहले उप स्थायी प्रतिनिधि दिमित्री पॉलींस्की ने पत्रकारों को स्पष्ट रूप से कहा कि रूस अमेरिकी मसौदे की वर्तमान शब्दावली से संतुष्ट नहीं है। उन्होंने कहा, ÷हम ऐसी किसी भी भाषा से संतुष्ट नहीं होंगे जो तत्काल युद्धविराम का आह्वान न करती हो। कोई भी उससे संतुष्ट नहीं है। 'तत्काल आवश्यकता की पहचान' शब्दावली का अर्थ तत्काल युद्धविराम का आह्वान नहीं है।'

पाकिस्तान पर हमला करने वाला मजीद ब्रिगेट का क्या है मकसद?

करांची, (एजेंसी)। बीते कुछ सालों में पाकिस्तान में आतंकवादी हमलों में तेजी से इजाफा हुआ है। इन हमलों में तालिबान, बलूच लिबरेशन आर्मी जैसे संगठनों का हाथ रहा है। बलूचिस्तान में एक बड़ी आबादी का मानना है कि उसके संसाधनों पर पाकिस्तान अवैध कब्जे जमा रहा है और उन्हें ही इसका फायदा नहीं मिल पाता। चीन के नेतृत्व में बन रहा चाइना पाकिस्तान इकनॉमिक कॉरिडोर भी यहीं से निकलता है। इसी कॉरिडोर पर ग्वादर पोर्ट भी पड़ता है। इस पर पहले भी हमले की कोशिशें हुई हैं। इसी साल जनवरी में इस संगठन ने बलूचिस्तान के माच कस्बे में रॉकेट और अन्य हथियारों से हमले किए थे। इस दौरान 4 सुरक्षाकर्मियों और 2 नागरिकों की मौत हो गई थी। हाल ही में पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में बन रहे ग्वादर बंदरगाह पर बुधवार को हमला हो गया था। इस हमले में पाकिस्तानी सेना के दो जवान मारे गए तो वहीं 8 हमलावर भी जवाबी कार्रवाई में ढेर हो गए। इस हमले की जिम्मेदारी बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी की मजीद ब्रिगेड ने ली है।

दरअसल मजीद ब्रिगेड को बलूच लिबरेशन आर्मी का आत्मघाती दस्ता माना जाता है। इसकी ओर से खासतौर पर पाकिस्तान में उन ठिकानों पर हमले किए जाते रहे हैं, जिनके निर्माण में चीन शामिल रहा है। इससे पहले अप्रैल 2022 में इसी संगठन ने कराची यूनिवर्सिटी के कन्फ्यूशियस इंस्टिट्यूट में अटैक किया था। यह भी एक आत्मघाती हमला ही था। इसी गुरिल्ला संगठन ने 2022 में पाकिस्तान के बलूचिस्तान में कई हमले किए थे। इन हमलों में बड़ी संख्या में लोगों को मार डाला था। 2022 में ही मजीद ब्रिगेड ने नौशकी और पंजगुर जिलों में हमले किए थे। इस दौरान पाक सुरक्षा बलों ने हथियार उठाए और 20 से ज्यादा दहशतगर्दों को मार डाला गया। इसके अलावा पाक सुरक्षा बलों के 9 जवान भी मारे गए थे। इस ब्रिगेड के गठन का भी रोचक इतिहास है। इसे 2011 में बलूच लिबरेशन आर्मी ने गठित किया था। इसका गठन पूर्व पीएम जुल्फिकार अली भुट्टो के एक गार्ड के नाम पर किया गया था, जो उन पर हमले की कोशिश में मारा गया था। पाकिस्तानी जानकारों के अनुसार इस संगठन की अफगानिस्तान में भी मौजूदगी है। यही नहीं पाकिस्तान का आरोप है कि इस संगठन ने तो पाकिस्तान और ईरान की सीमा पर भी अपने ठिकाने बना रखे हैं। इन लोगों को ईरान के सीमांत बलूच इलाकों में भी एंट्री मिलती रही है। इन इलाकों में भी बलूच संस्कृति का असर है और बड़ी संख्या में बलूच बसे हैं।

दुनिया का सबसे खतरनाक शहर में मुंह देखते रह गए हथियारबंद गैंग, भारत ने हैती में कर दिया दमदार ऑपरेशन

काठमांड (एजेंसी)। भारत ने हिंसा प्रभावित हैती में भारतीयों को निकालने के लिए ऑपरेशन की शुरुआत कर दी है। इस ऑपरेशन का नाम इंद्रावति है। इस ऑपरेशन के तहत 12 भारतीयों को हैती से अबतक सुरक्षित निकाल लिया गया है। इस ऑपरेशन की जानकारी विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर दी है। उन्होंने कहा है कि भारत सरकार विदेशों में अपने नागरिकों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह से प्रतिबंध है। उन्होंने भारत के ऑपरेशन इंद्रावति में मदद करने के लिए हैती के पड़ोसी डोमेनिकन रिपब्लिक को धन्यवाद भी दिया है। कैरिबियाई देश हैती महीनों से हिंसा की चपेट में है। कुछ दिन पहले ही हथियारबंद गैंग के समूहों ने देश की राजधानी में पुलिस स्टेशन, जेल और दूसरे स्थानों पर हमला करके शहर की व्यवस्था को खराब कर दिया था। हालात इतने खराब है कि अमेरिका ने अपने दूतावास के कर्मचारियों को एयरलिफ्ट करके निकाला। हैती के प्रधानमंत्री ने तो अपने पद से इस्तीफा भी दे दिया। हैती में भारत का कोई दूतावास नहीं है और देश की स्थिति पर डोमिनिकन गणराज्य की राजधानी सैंटो डोमिंगो में भारतीय मिशन द्वारा निगरानी रखी जा रही है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल ने 15 मार्च को अपनी साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग में कहा था कि हैती में 75 से 90 भारतीय हैं और उनमें से लगभग 60 ने ÷जरूरत पड़ने पर÷ भारत लौटने के लिए भारतीय अधिकारियों के साथ पंजीकरण कराया है। उन्होंने कहा था कि हम सभी को निकालने के लिए तैयार हैं।

हैती की राजधानी पोर्ट-ऑ-प्रिंस में सोमवार तड़के गिरोहों ने आसपास के इलाकों में हमले किए, जिसमें कम से कम एक दर्जन लोग मारे गए। हथियारबंद लोगों ने लाबूले और थोमसिन इलाकों में घरों में लूटपाट की, जिसके चलते लोगों को वहां से भागने को मजबूर होना पड़ा जबकि कुछ ने रेडियो स्टेशनों के माध्यम से पुलिस से मदद की गुहार लगाई। पोर्ट-ऑ-प्रिंस में 29 फरवरी को हिंसक गिरोहों के हमलों के बावजूद आसपास के इलाकों में स्थिति शांतिपूर्ण थी। एसोसिएटेड प्रेस के एक फोटो पत्रकार ने लाबूले और थोमासिन इलाकों के करीब पेटियनविल्ले में सड़कों पर कम से कम 12 पुरुषों के शव देखे हैं।

भारत के साथियान ने डब्ल्यूटीटी खिताब जीता

बैरूत । भारत के स्टार टेबल टेनिस खिलाड़ी साथियान ज्ञानशेखरन ने यहां हुए डब्ल्यूटीटी फीडर सीरिज टूर्नामेंट में खितबी जीत के साथ ही एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। साथियान इसी के साथ ही डब्ल्यूटीटी फीडर टेबल टेनिस एकल खिताब जीतने पहले भारतीय बन गये हैं। साथियान ने इस मुकाबले के अंतिम दिन पुरुष एकल में अपने ही हमवतन मानव ठक्कर को 3.1 (6.11, 11.7, 11.7, 11.4) से हराया। इससे पहले उन्होंने भारत के ही हरमीत देसाई को 15.13, 6.11, 11.8, 13.11 से मात दी थी। इसके बाद शीर्ष वरीयता प्राप्त चुआंग चिह युआन को 11.8, 11.13, 11.8, 11.9 से हराया था। पुरूष युगल में भारत के मानव ठक्कर और मानुष उत्पलभाई शाह फाइनल में एंडी परेरा और जॉर्ज कंपोस से 11.5, 7.11, 11.13, 12.14 से हार गए। इसके अलावा मिश्रित युगल में भी भारतीय जोड़ी को जीत मिली। भारत की दिया चितले और मानुष शाह ने अपने ही देश के मानव और अर्चना कामथ को 11.6, 10.12, 11.6, 11.6 से हराया। वहीं महिला एकल में शिया लियान ने खिताब जीता। लियान ने सुह यो वोन को 11.9, 11.5, 11.5 से पराजित किया।

वेलामल महिला ग्रांड मास्टर शतरंज : मैरी गोम्स नें लगाई जीत की हैट्रिक , कदम खिताब की ओर

चेन्नई

वेलामल एआईसीएफ़ महिला ग्रांड मास्टर राउंड रॉबिन टूर्नामेंट के सात राउंड के बाद भारत की तीन बार की राष्ट्रीय चैम्पियन महिला ग्रांड मास्टर मैरी एन गोम्स नें लगातार तीन जीत के साथ अपने कदम खिताब की ओर बढ़ा दिये है । मैरी नें छठे राउंड में टूर्नामेंट की टॉप सीड हमवतन वेलपुला सरायु को काले मोहरो से फ्रेंच ओपनिंग में 68 चालों तक चले मुक़ाबले में पराजित करते हुए टूर्नामेंट में अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की थी और फिर सातवें राउंड में उन्होने हमवतन महालक्ष्मी एम को सफ़ेद मोहरो से अपने प्यादो के शानदार एंडगेम के दम पर 51 चालों में पराजित करते हुए टूर्नामेंट में अपनी छठी जीत दर्ज की । इस जीत के साथ मैरी अब सात राउंड के बाद 6.5 अंक बनाते हुए अपनी नजदीकी प्रतिद्वंदी से 2 अंक आगे चल रही है और फिलहाल अपनी रेटिंग में 19 अंको का इजाफा करने में सफल रही है।सातवें राउंड में मंगोलिया की एंखतुल अलतान नें हमवतन उर्तशेख उरीइनतुया को पराजित करते हुए अपनी लगातार दूसरी जीत दर्ज की है, मैरी के बाद एंखतुल अपराजित रहने वाली दूसरी खिलाड़ी है और उन्होने अब तक पाँच ड्रॉ और दो जीत दर्ज की है और फिलहाल 4.5 अंक बनाकर टाईब्रेक में दूसरे स्थान पर चल रही है। सातवे राउंड के अन्य मुक़ाबलों में भारत की वेलपुला सरायु नें कोलंबिया की एंजेला फ़्रांकों को , भारत की मोनिशा जीके नें हमवतन रिंधिया वी को और फ्रांस की नीनों मैसूरद्जे नें भारत की साक्षी चित्लांगे को पराजित किया जबकि इटली की एलेना सेदिना और भारत की अक्षया मौनिका के बीच बाजी अनिर्णीत रही । 10 लाख रुपेय पुरुष्कार राशि के इस 11 राउंड के टूर्नामेंट में अब भी चार राउंड खेले जाने बाकी है ।

संक्षिप्त समाचार

आईपीएल से खेल में वापसी पर बेहद खुश हैं ऋषभ

नई दिल्ली । आक्रामक विकेट कीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत खेल में वापसी को लेकर बेहद खुश हैं। ऋषभ आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान हैं। वह कार हादसे के 14 महीने बाद मैदान पर लौटे हैं। उन्होंने वापसी पर कहा कि वह खुश हैं कि वह भयानक हादसे के बाद भी जीवित हैं और इस पल का आनंद ले रहे हैं। वह दिसंबर 2022 में एक सड़क दुर्घटना में गंभीर रुप से घायल हो गये थे। इसके बाद लंबे समय तक वह बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में रिहैब के दौर से गुजरे। कार दुर्घटना के बाद खेल में वापसी पर इस क्रिकेटर ने कहा कि वह बता नहीं सकते कि उस भावना को बता वर्णन नहीं कर सकते जब उन्होंने हादसे से उबरकर पहली बार बल्ला पकड़ा था। शुरुआत में मैं बैसाखी का उपयोग करके चल रहा था, फिर मुझे इसकी आवश्यकता नहीं थी। फिर मैंने चलना शुरू किया, फिर जॉगिंग शुरू की और फिर दौड़ना। फिर बल्लेबाजी और फिर विकेटकीपिंग। मुझे वे विशेष तारीखें याद नहीं हैं पर निश्चित रूप से उन पलों को याद करता हूं। दुर्घटना के बाद जब मैंने पहली बार बल्ला पकड़ा तो मैं उस अहसास का वर्णन नहीं कर सकता। यह आश्चर्यजनक था। आप किसी चीज के कारण मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वह अहसास कुछ ऐसा ही था। मुझे नहीं लगा कि मैं पहली बार खेल रहा हूं, लेकिन ऐसा भी नहीं लग रहा था कि मैं पहले खेल चुका हूं। एक अलग तरह की ऊर्जा और अहसास था। यह पूछे जाने पर कि क्या उन्हें दिल्ली कैपिटल्स में लौटने पर कोई दबाव महसूस होता है, तो उन्होंने कहा कि पहली भावना यह है कि मैं खुश हूं कि मैं जीवित हूं। यदि आप जीवित नहीं हैं, तो आप किसी और चीज के बारे में सोच भी कैसे सकते हैं। प्रवाह के साथ रहना और इन क्षणों का आनंद लेना जरूरी है। इस क्रिकेटर ने कहा कि जब सफर इतना लंबा हो तो निराशा तो होती ही है। हम मंजिल की तलाश में रहते हैं। आपको सफर का मजा लेना चाहिए।

साल 2022 में धोनी के अचानक कप्तानी छोड़ने पर हैरान हुए थे : फ्लेमिंग

चेन्नई । चेन्नई सुपर किंग्स के मुख्य कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने कहा है कि साल 2022 में जब अचानक ही महेन्द्र सिंह धोने ने कप्तानी छोड़ दी थी तब हम हैरान को गये थे क्योंकि तब हम इसके लिए तैयार नहीं थे। उस सत्र में रविन्द्र जडेजा को कप्तानी सोंपी गयी थी पर जब वह सफल नहीं हुए तो धोनी को वापस ये जिम्मेदारी संभालनी पड़ी। फ्लेमिंग ने कहा कि धोनी को क्रिकेट की खासी समझ है पर हम युवा खिलाड़ियों को इस भूमिका के लिए तैयार करना चाहते थे। इस बार हम तैयार हैं। उन्होंने कहा कि पिछली बार धोनी ने कप्तानी छोड़ी तो हम स्तब्ध रह गए थे क्योंकि हम इसके लिए तैयार नहीं थे। इस बार हमें पता था कि वह कप्तानी छोड़ने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम नए कप्तान तैयार करने पर मेहनत कर रहे थे। युवाओं पर भरोसा करने का फायदा मिला है। मैंने नये कप्तान रूतुराज से कप्तानी के बारे में बात की है। उसके लिए यह अपने को साबित करने का अच्छा अवसर है। उन्होंने कहा कि आईपीएल से पहले अभ्यास मैचों में धोनी फिट लग रहे हैं और इस बार फिटनेस की कोई समस्या नहीं होगी।

आईपीएल में आज होगा

केकेआर और सनराइजर्स का मुकाबला

स्टार्क , कमिंस ओर श्रेयस पर रहेंगी नजरें

कोलकाता ।

आईपीएल के 17 वें सत्र में शनिवार को कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच मुकाबला होगा। दोनो ही टीमें इस मैच को जीतकर अपने अभियान की अच्छी शुरुआत करना चाहेंगी। इस मैच में आईपीएल इतिहास के दो सबसे महंगे खिलाड़ियों के बीच होने वाली भिड़त देखने को मिलेगी। सबसे महंगे मिशेल स्टार्क जहां केकेआर की ओर से उतरेंगे। वहीं पैट कमिंस सनराइजर्स की कप्तानी करेंगे। ये दोनो ही ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी अपनी तेज गेंदबाजी के लिए जाने जाते हैं। ऐसे में दोनो ही टीमों के बल्लेबाजों की भी कड़ी परीक्षा होगी। इसके अलावा चोट से वापसी कर रहे केकेआर के कप्तान श्रेयस अय्यर पर भी सबकी नजरें रहेंगे। श्रेयस इस मैच में बेहतर प्रदर्शन कर लय हासिल करना चाहेंगे। कमर की चोट के कारण पिछले आईपीएल से बाहर रहे श्रेयस केकेआर की कप्तानी करेंगे। उन्होंने हाल ही में रणजी ट्रॉफी में मुंबई की ओर से अच्छी बल्लेबाजी की थी पर पर फिटनेस को लेकर वह परेशान रहे थे। अब देखना होगा कि वह किस प्रकार पूरे सत्र में खेलते हैं। केकेआर को इस सत्र में मेंटोर के तौर पर मिले गौतम गंभीर के अनुभवों से काफी लाभ होगा। गंभीर की कप्तानी में ही केकेआर ने दो बार खिताब जीता था। अब मेंटोर के रूप में गंभीर की ये दूसरी पारी है। घरेलू सर्किट में दिग्गज मुख्य कोच चंद्रकांत पंडित के साथ मिलकर उनका लक्ष्य टीम को जीत दिलाना रहेगा। टीम के पास इस बार स्टार्क जैसा तूफानी तेज गेंदबाज है। उसे केकेआर ने 24 करोड़ 75 लाख रुपए में खरीदा है। ऐसे में अब इस तेज गेंदबाज पर अच्छे प्रदर्शन का काफी दबाव होगा। पावरप्ले और डैथ ओवरों में उनके स्पैल निर्णायक साबित हो सकते हैं। इसके अलावा केकेआर के पास स्टार्क और आंद्रे रसेल जैसे दो अनुभवी तेज गेंदबाज है और उनकी जगह लेने के लिए उनके जैसा कोई विकल्प नहीं है लिहाजा कार्यभार प्रबंधन में सावधानी बरतनी होगी। केकेआर के पास बल्लेबाजी में अय्यर के अलावा रिंकू सिंह, रसेल, रहमानुल्लाह गुरबाज, फिल साल्ट और वेंकटेश अय्यर जैसे खिलाड़ी हैं। वहीं स्पिन गेंदबाजी की कमान सुनील नारायण, वरूण चक्रवर्ती और सुयश शर्मा पर रहेगी। वहीं दूसरी ओर सनराइजर्स की कप्तानी ऑस्ट्रेलियाई टीम के कप्तान कमिंस के हाथ में होगी जिन्हें 20 करोड़ 50 लाख रूपये में खरीदा गया है। वह आईपीएल के दूसरे सबसे महंगे खिलाड़ी हैं और पिछले तीन सत्र में आखिरी स्थान पर रही सनराइजर्स की किस्मत बदलने की जिम्मेदारी उन पर होगी। कमिंस के पास कप्तानी का अच्छा अनुभव है। उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई टीम को हाल में में विश्वकप सहित कई और मुकाबलों में भी जीत दिलायी थी। सनराइजर्स के पास ट्रेविस हेड

और हेनरिच क्लासेन जैसे बल्लेबाज हैं जबकि गेंदबाजी में कमिंस के अलावाके डैथ ओवरों के विशेषज्ञ भुवनेश्वर कुमार भी होंगे। स्पिन की जिम्मेदारी श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा और वॉशिंगटन सुंदर जिम्मा संभालेंगे।

आईपीएल 2024 में धोनी और रोहित का युग समाप्त हुआ

मुम्बई ।

आईपीएल 2024 सत्र के साथ ही दो महान कप्तानों का युग समाप्त हो गया। दोनो ही पांच-पांच बार आईपीएल ट्रॉफी अपनी टीम को जितायी है। जहां मुम्बई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा को हटाया गया है। वहीं चेन्नई सुपरकिंग्स (सीएसके) की कप्तानी महेन्द्र सिंह धोनी ने स्वयं ही छोड़ दी। मुम्बई ने जहां रोहित की जग हार्दिक पंड्या को नया कप्तान बनाया है। वहीं सीएसके ने युवा ऋतुराज गायकवाड़ को ये जिम्मेदारी सौंपी है।

रोहित की कप्तानी में मुम्बई ने 2013 से 2023 तक 5 बार खिताब दिलाया है। वहीं धोनी ने पहले सीजन से 2023 तक चेन्नई सुपर किंग्स को 5 बार चैम्पियन बनाया है। सीएसके टीम ने यह सभी खिताब 2010, 2011, 2018, 2021 और 2023 सीजन में जीते हैं।। मुंबई फ्रेंचाइजी ने ट्रेड के जरिए पंड्या को अपनी टीम में शामिल किया और कप्तानी सौंप दी। दूसरी ओर चेन्नई टीम ने 2019 में गायकवाड़ को खरीदा था। तब से ही वह सीएसके के

लिए ही खेल रहे हैं। गायकवाड़ चेन्नई टीम के चौथे कप्तान होंगे। इससे पहले धोनी, रविन्द्र जडेजा और रैना भी कप्तानी कर चुके हैं। रोहित ने 2013 से 2023 तक अपनी कप्तानी में मुंबई टीम को 5 बार (2013, 2015, 2017, 2019 और 2020) खिताब जिताया है। रोहित ने इस दौरान मुंबई इंडियंस के लिए आईपीएल में 158 मैचों में कप्तानी की। जिसमें मुंबई टीम को 87 मुकाबलों में जीत मिली जबकि 67 मैचों में उसे हार झेलनी पड़ी। इस दौरान 4 मैच टाई रहे। धोनी की कप्तानी में चेन्नई टीम ने आईपीएल इतिहास में अब तक 12 बार प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई किया है। इस दौरान सीएसके टीम ने 10 बार फाइनल खेला, जिसमें से टीम 5 बार खिताब जीतने में सफल रही।

श्रीकांत और राजावत स्विस ओपन बैडमिंटन के क्वार्टरफाइनल में पहुंचे

सिंधु प्री-क्वार्टर फाइनल में हारीं

बेसल ।

भारत के किदांबी श्रीकांत और प्रियांशु राजावत जीत के साथ ही बीडब्ल्यूएफ स्विस ओपन, सुपर 300 बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में पहुंच गए हैं। श्रीकांत ने मलेशियाई ली जी जिया को केवल 36 मिनट में ही सीधे सेट में 21-16, 21-15 से हराकर क्वार्टरफाइनल में जगह बनायी। वहीं राजावत ने चीन के लेई लांक्सी को सीधे गेम में 21-14, 21-13 से हराया। राजावत ने पहले दौर में हांगकांग के विश्व नंबर 14 ली चेउक यियू को हराया था। श्रीकांत का मुकाबला अब क्वार्टरफाइनल में चीनी ताइपे के चिया हाओ ली से होगा। वहीं राजावत का सामना चीनी ताइपे के चाउ टीएन चेन से होगा। भारत के ही एक अन्य पुरुष एकल खिलाड़ी किरण

जॉर्ज ने एलेक्स लैनियर को कड़े मुकाबले में 18-21, 22-20, 21-18 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। अब वह सेमीफाइनल में जगह बनाने के लिए डेनमार्क के राससमस गेम्के से मुकाबला करेंगे। वहीं महिला वर्ग में भारत की पीवी सिंधु को जापान की टोकोमा मियाजाकी के हाथों प्री-क्वार्टर फाइनल में ही हार का सामना करना पड़ा। सिंधु को एक घंटे और 19 मिनट तक चले मैच में टोकोमा ने 21-16, 19-21,16-21 से हराया।

सीएसके में ही सीखा सफलता का मंत्र : रुतुराज

धोनी ने पहले ही दे दिया था कप्तानी का संकेत

चेन्नई । इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 में चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के नये कप्तान बने रुतुराज गायकवाड़ ने कहा हैं कि उन्होंने इस टीम में रहते ही सीखा है कि किस प्रकार सफलता हासिल की जाती है। रुतुराज ने कहा कि पूर्व सीएसके कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी का मैदान पर होना ही एक अहम बात है। वह टीम के लिए एक रीढ़ की हड्डी की तरह हैं। इसके अलावा टीम में रविन्द्र जडेजा और आजिंक्य रहाणे जैसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। इसलिए वह टीम में किसी प्रकार का भी बदलाव नहीं चाहते हैं। उन्होंने कप्तानी मिलने पर कहा, पहले दिन से ही, मुझे यह पसंद आया कि यह फ्रेंचाइजी कैसे चलती है, मुझे पता चला कि सफलता का मंत्र क्या है और मैं इसमें थोड़ा भी बदलाव करना पसंद नहीं करता। मेरे लिए मैदान पर धोनी जैसे अनुभवी का होना बहुत बड़ी बात है। मेरी टीम में जड़ेजा और रहाणे जैसे खिलाड़ी हैं , इसलिए मैं ऐसा नहीं सोचता कि मुझे कुछ भी बदलने की जरूरत है, बस खिलाड़ियों को वह आजादी देनी है जो वे चाहते हैं। मुझे लगता है कि सब कुछ ठीक होगा। उन्होंने यह भी कहा कि आईपीएल के पिछले सत्र के दौरान ही धोनी ने उन्हें आईपीएल के 17वें सत्र में कप्तानी संभालने के बारे में संकेत दिया था। गायकवाड़ ने कहा, आप जानते हैं कि पिछले साल ही माही भाई ने कप्तानी के बारे में संकेत दिया था। बस संकेत दिया था कि तैयार रहें और यह आपके लिए हैरानी की बात नहीं होनी चाहिए।

भारतीय महिला हॉकी टीम को नई मजबूती देंगे, यह वादा है : कप्तान सविता पूनिया

नई दिल्ली ।

रांची में ओलंपिक क्वालीफायर में हार का दर्द जिंदगी भर उन्हें सालता रहेगा लेकिन भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सविता पूनिया का वादा है कि अगले चार साल में इतनी मजबूत टीम बनायेंगे कि यह दिन दोबारा नहीं देखना पड़े। सविता ने कहा, 'ओलंपिक क्वालीफायर हारना हमारे लिये ऐसा बुरा पल है जिसे हम खिलाड़ी पूरी जिंदगी शायद नहीं भुला सकेंगे। अभी तक मैं उससे उबर नहीं सकी हूं। रियो ओलंपिक 2016 के जरिये 36 साल बाद ओलंपिक में लौटी भारतीय महिला हॉकी टीम तोक्यो ओलंपिक में ऐतिहासिक चौथे स्थान पर रही थी। रांची में जनवरी में खेले गए क्वालीफायर में हालांकि जापान से हारकर उसने पेरिस ओलंपिक जाने का मौका गंवा दिया। इस अनुभवी गोलकीपर ने कहा, 'मैं उसके बारे में बात नहीं करना चाहती थी क्योकि इससे दुख ही होता है। हमने तोक्यो में चौथे स्थान पर रहने की खुशी देखी और अब ओलंपिक नहीं खेलने का दर्द भी। लेकिन हम खिलाड़ी हैं और हार जीत हमें बहुत कुछ सिखाती है। लेकिन कम से कम हमें यह मलाल नहीं है कि हमने अच्छा नहीं खेला। उन्होंने कहा, 'हम सभी ने अपना शत प्रतिशत दिया और हमारी तैयारी बहुत अच्छी थी। वादा करते हैं कि अगले टूर्नामेंटों में अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे। शायद इस हार के पीछे हमारी बदकिस्मती थी। लोगों से ज्यादा हम खुद दुखी हैं। हमने बहुत मेहनत की थी। सब कुछ झोंक दिया था। उन्होंने कहा, 'यह हमारे लिए सबक है। मुझे अपने सफर का पता नहीं लेकिन कोशिश रहेगी कि अगले चार साल में टीम को इतना मजबूत बनाए कि ओलंपिक और विश्व कप में खेलें और अच्छा खेलें। भारत के लिये 2008 में सीनियर स्तर पर पदार्पण करने वाली सविता ने कहा, 'लोग सिर्फ नतीजे देखते हैं लेकिन एक सीनियर खिलाड़ी या कप्तान के तौर पर मैं कह सकती हूं कि हमारा प्रदर्शन ग्राफ ऊपर ही गया है। छह साल बाद सीनियर राष्ट्रीय चैम्पियनशिप खेल रही इस खिलाड़ी ने कहा, 'खेल की अच्छी बात यही है कि आपको पिछला भुलाकर बहुत जल्दी आगे बढ़ना पड़ता है। इसलिए मैं पुणे में सीनियर राष्ट्रीय महिला चैम्पियनशिप खेलने आई क्योंकि हॉकी मेरा जुनून है और मैदान से जितना दूर रहूंगी, ये बात परेशान करती रहेगी। क्वालीफायर हारने के बाद टीम को मिले ब्रेक में खिलाड़ियों को सारा दुख दर्द भुलाकर नये सिरे से लौटने के लिये कहा गया था। सविता ने कहा, 'घर पर पांच से दस दिन कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। बहुत कोशिश की लेकिन शरीर साथ नहीं दे रहा था। फिर योग और प्राणायाम का सहारा लिया और फिटनेस पर ध्यान दिया। उन्होंने कहा, 'क्वालीफायर के बाद एक सप्ताह घर पर थे और सभी खिलाड़ियों को कहा कि जितना रोना है, उदास होना है यह ब्रेक उसी के लिए है। भीतर रखने से कुछ नहीं होगा और इसे बाहर निकालना जरूरी है।

इस ब्रेक में ओलंपिक क्वालीफायर के बारे में किसी ने बात नहीं की। ओलंपिक क्वालीफायर हारने के दस दिन बाद ही भुवनेश्वर में एफआईएच प्रो लीग खेलना काफी चुनौतीपूर्ण था लेकिन भारतीय टीम ने आस्ट्रेलिया जैसी मजबूत टीम को भी हराया। सविता ने कहा, 'प्रो लीग के लिए टीम भुवनेश्वर में एकत्र हुई तो पहली टीम बैठक में यही देखा कि सभी को कैसा महसूस हो रहा है। युवाओं का मनोबल ऊंचा रहना जरूरी था। टीम को भी श्रेय जाता है कि हमने एकजुट होकर प्रो लीग खेला।

ऋषभ पहले की तरह ही शॉट लगा रहे : पोंटिंग

लय हासिल करने अतिरिक्त प्रयास भी किये

नई दिल्ली । आईपीएल टीम दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच रिकी पोंटिंग ने इसपर खुशी जतायी है कि कप्तान ऋषभ पंत पहले की तरह ही सभी प्रकार के शॉट लगा रहे हैं। पोंटिंग के अनुसार ऋषभ ने कार हादसे से उबरने के बाद जिस प्रकार से आईपीएल से मैदान पर वापसी की है जिससे टीम भी उत्साहित है। साथ ही कहा कि वह पहले की तरह ही सभी प्रकार के शॉट खेल रहे रहे हैं जिन्हें वह पहले खेला करते थे। उन्होंने सर्जरी के बाद अपने शरीर को फिट करने के लिए अतिरिक्त प्रयास भी किये हैं। वह कार हादसे के कारण ही गत वर्ष आईपीएल से बाहर थे। पोंटिंग ने कहा, 'वह पूर्व में आईपीएल से पहले जितनी बल्लेबाजी करता था उसकी तुलना में उसने पिछले सप्ताह काफी अधिक बल्लेबाजी की जिससे वह लय हासिल कर सके। इसके जरिये वह फिर से अपने शरीर को खेल के अनुरुप ढ़ालना चाहता है। वह कभी हार नहीं मानने वाला खिलाड़ी है और सबसे अहम बात यह है कि उसके चेहरे पर मुस्कान है जिसे हम सभी देखना पसंद करते हैं।'दिल्ली कैपिटल्स फ्रेंचाइजी ने फिटटेस टेस्ट में पास होने पर ऋषभ को दोबारा कप्तान बनाने की घोषणा की थी। पिछले सत्र में उनके नहीं खेलने से दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी डेविड वॉर्नर ने की थी।

शुभमन को अपने फैसले लेने प्रेरित करुंगा : विलियमसन

नई दिल्ली । न्यूजीलैंड के अनुभवी बल्लेबाज केन विलियमसन ने आईपीएल 2024 सत्र के लिए गुजरात टाइटंस के कप्तान बने शुभमन गिल की जमकर तारीफ करते हुए कहा कि उनके पास एक बेहतर कप्तान बनने की सभी क्षमताएं हैं। विलियमसन के अनुसार अगर इस टूर्नामेंट में शुभमन को मेरी किसी सहायता की जरुरत पड़ेगी तो मैं उपलब्ध रहूंगा। विलियमसन ने कहा, 'शुभमन एक अच्छा खिलाड़ी है और उसके पास क्रिकेट को लेकर एक अच्छा दिमाग है। मैं निश्चित तौर पर उसे इस राह पर आगे बढ़ने और अपने फैसले लेने के लिए प्रेरित करूंगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह भी ऐसा ही करने का प्रयास करेगा। पांड्या के मुंबई इंडियंस में जाने के बाद ही शुभमन को गुजरात टाइटंस का कप्तान बनाया गया था। आईपीएल में कप्तानी करना उनके लिए नया अनुभव होगा पर विलियमसन ने कहा कि गिल को जब भी उनकी मदद की जरूरत पड़ेगी, वह हमेशा इसके लिए तैयार रहेंगे। विलियमसन ने कहा, 'मुझे शुभमन की किसी भी तरह से मदद करने में बहुत खुशी होगी और शुभमन भी इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं। टाइटंस ने 2022 में आईपीएल का खिताब जीता था जबकि इसके एक साल बाद वह उपविजेता रहा था। विलियमसन का मानना है कि गिल टीम को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त योग्यता रखते हैं।

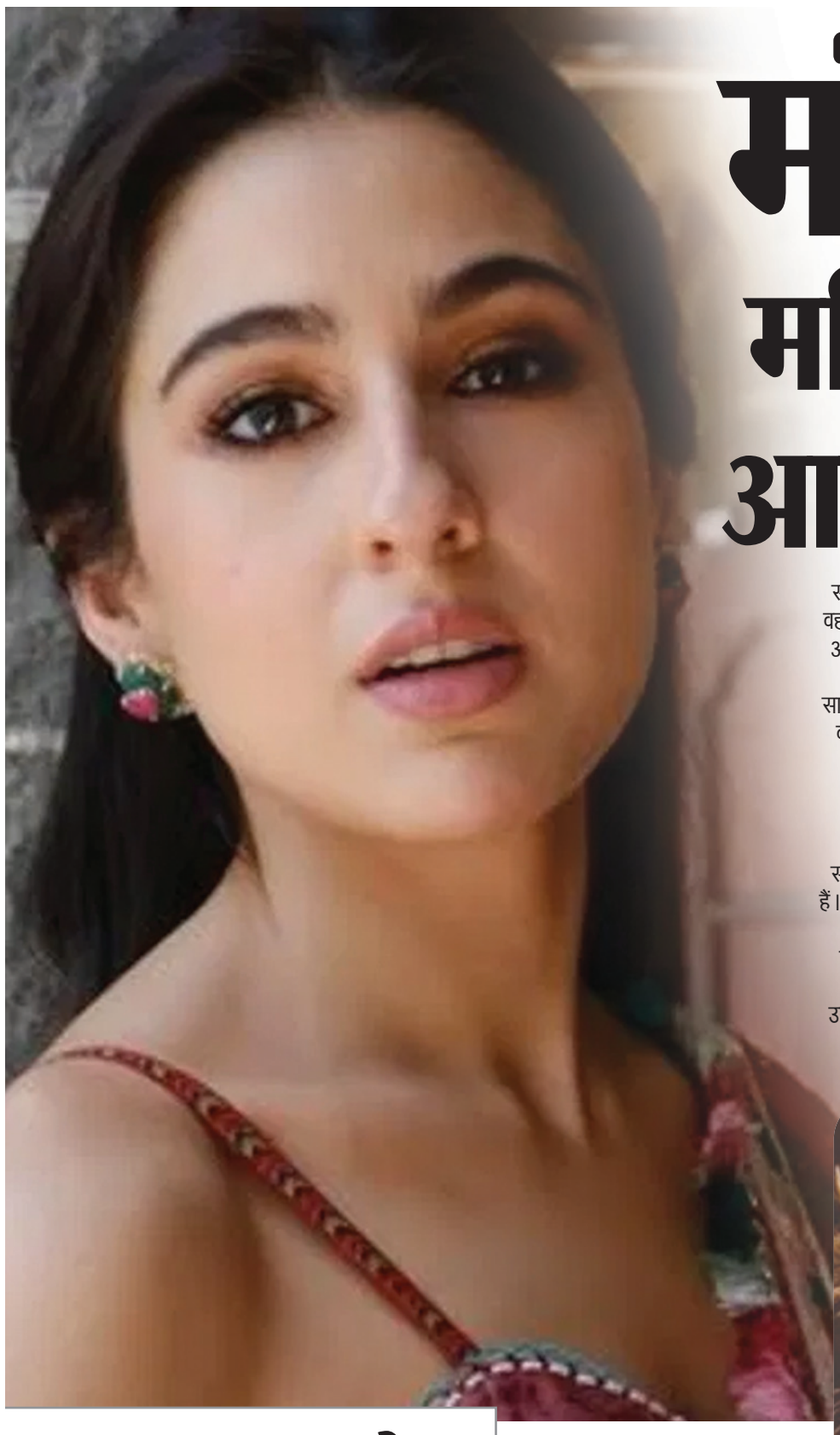

मंदिर हो या मस्जिद सब में मेरी आस्था : सारा अली

सारा अली खान बॉलीवुड स्टारकिड हैं, जो इन दिनों अपनी मूवी को सुर्खियों में छाई हुईं हैं। सारा अली खान वहां अभिनेत्री हैं, जो अपनी बातों से कहने से पीछे नहीं हटती। सोशल मीडिया पर सारा काफी सक्रिय हैं और अक्सर ट्रोल्स के निशाने पर अपने सरनेम, मंदिर और मस्जिद जाने को लेकर अक्सर ट्रोल्स के निशाने पर आ जाती हैं। हाल ही में उन्होंने उन सवालों पर चुप्पी तोड़कर जवाब दिया।

सारा एक धर्मनिरपेक्ष परिवार में बड़ी हुई हैं। उनके पिता सैफ अली खान मुस्लिम परिवार से ताल्लुक रखते हैं। वहीं, मां अमृता सिंह हिंदू हैं। हाल ही में उन्होंने खुलासा किया, कि पहले वह खुद को दुनिया के सामने प्रेजेंट करने को लेकर कुछ दिखावा करती थी, लेकिन अब ये सब बंद कर उन्होंने ये खत्म कर दिया है। सारा का मानना है कि जो सही है उसके लिए खड़े होने की भावना उनमें पैदा हुई है। उन्होंने कहा कि उनकी धार्मिक मान्यताओं के बारे में सवाल किए जाने से उन्हें कोई परेशानी नहीं है। सारा ने कहा, मेरा जन्म एक संप्रभु, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य में एक धर्मनिरपेक्ष परिवार में हुआ।

सारा ने बताया उन्हें फर्क पड़ता है अगर लोगों को उनका काम पंसद नहीं आता। लेकिन पर्सनल चीजें उनकी हैं। उनपर उनका हक है। उन्होंने कहा, मेरी धार्मिक मान्यताएं, मेरी फूड चॉइस, कैसे में एयरपोर्ट पर जाऊंगी, ये सब मेरा फैसला है इसके लिए मैं कभी भी माफी नहीं मांगूंगी!

सारा अभिनेत्री अमृता और सैफ की बेटी हैं। वह अक्सर मंदिरों की धार्मिक यात्राओं पर तस्वीरें खींचती हैं, जिसके बारे में उनका कहना है कि यह उनके व्यक्तित्व का एक हिस्सा है। लेकिन क्योंकि दर्शक उन्हें और उनके दोस्तों और परिवार को नहीं जानते हैं, यह उन लोगों के लिए अजीब लगता है जो उसके बारे में अन्यथा सोचते हैं। सारा ने लोगों को दो टूक समझाने की कोशिश की है कि मंदिर हो या मस्जिद, सारा की सबमें आस्था है।

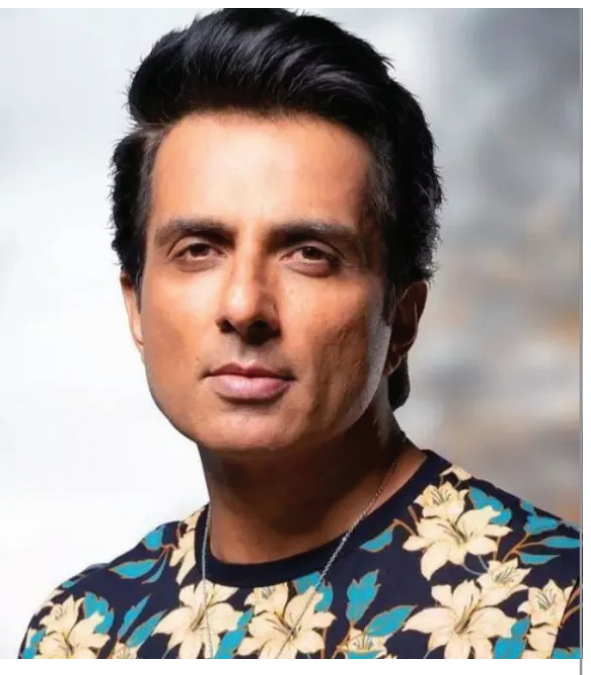

'फतेह' का टीजर जारी, खौफनाक दिखे सोनू सूद

अपकमिंग फिल्म 'फतेह' का टीजर जारी हो गया है। एक्टर सोनू सूद की यह मच अवेटेड फिल्म है। जारी टीजर से पता चलता है कि सोनू फिल्म में कितना खौफनाक रोल करने जा रहे हैं। फिल्म के निर्देशक भी सोनू हैं।

सोनू ने फिल्म से एक पोस्टर रिलीज कर टीजर की रिलीज डेट का खुलासा किया था। अब सोनू ने टीजर आउट कर दिया। सोनू की एक्शन ड्रामा फिल्म का टीजर 1.40 मिनट का है। इसकी शुरूआत इस वॉयस ओवर से होती है कि फतेह तुमने 40... इतने में फतेह के रोल में दिख रहे सोनू बोलते हैं...40 नहीं 50... इसके बाद सोनू एक-एक कर बदमाशों को शूट करते नजर आ रहे हैं। टीजर के साथ सोनू ने जानकारी दी कि फिल्म इसी साल रिलीज होगी, लेकिन इसकी रिलीज डेट का खुलासा नहीं किया। फिल्म में सोनू के अपोजिट एक्ट्रेस जैकलीन फर्नांडिज रहेंगी। 'फतेह' में शिवज्योति राजपूत, विजय राज के भी अहम रोल हैं। साइबर क्राइम की रियल लाइफ स्टोरीज पर बनी इस फिल्म की शूटिंग बहुत पहले पूरी हो गई। फिल्म की टैगलाइन 'नेवर अंडरएस्टिमेट ए नोबडी' सबसे अलग है, जो वास्तव में सोनू की यात्रा को भी दर्शाता है। सोनाली सूद/शक्ति सागर प्रोडक्शन्स और जी स्टूडियोज द्वारा निर्मित फिल्म सोनू की डायरेक्टोरीयल डेब्यू है। इसमें इंडियन और हॉलीवुड क्रू का सबसे जबरदस्त फ्यूजन है और यह पहले कभी न देखे गए एक्शन सीन्स को पेश करने का वादा करती है।

कामुकता को लेकर मैं हमेशा असहज रही हूं : सामंथा

फिल्म पुष्पा द राइज में आइटम सॉन्ग ऊ अंटावा की शूटिंग के दौरान एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु कांप रही थी। सामंथा ने कहा कि मुझे लगता है कि ऊ अंटावा करने का फैसला राजी (द फैमिली मैन 2 में उनका किरदार) करने के जैसा था।

मुझे लगता है कि बहुत सारे लोगों का आपके आस-पास न होने का अच्छा साइड यह है कि कोई आपको राय नहीं देता है कि आपको यह करने की जरूरत है। यह अच्छा साइड है। दूसरा साइड है कि मुझे गलती करने की जरूरत है, उनसे सीखने और खुद पर काबू पाने की जरूरत है। एक्ट्रेस ने आगे कहा- ऊ अंटावा में इसलिए करना चाहती थी, ताकि मैं कलाकार होने के उस पहलू का पता लगा सकूं। मैं हमेशा अपनी कामुकता को लेकर बहुत असहज रही हूं। मैं बहुत कंफर्टेबल या कॉन्फिडेंट नहीं हूं।

मैंने हमेशा ऐसी जगह से काम किया है जैसे मैं बहुत अच्छी नहीं हूं। मैं सुंदर महसूस नहीं करती, मैं दूसरी लड़कियों की तरह नहीं दिखती। इसके अलावा सामंथा ने कहा- मेरे लिए यह एक बहुत बड़ा चैलेंज था। ऊ अंटावा का पहला शॉट और मैं डर से कांप रही थी, क्योंकि सेक्सी मेरी चीज नहीं है। एक अभिनेता और व्यक्ति के रूप में इसलिए विकसित हुई हूं, क्योंकि मैं खुद को सबसे कठिन परिस्थितियों में डालती हूं और उनसे उबरने के लिए लड़ती हूं। यह ऐसा है, जैसे मैं इन राक्षसों को मार रही हूं।

एक्ट्रेस ने यह भी कहा कि वह दोबारा कभी भी आइटम नंबर नहीं करेंगी। बता दें कि फिल्म पुष्पा द राइज साल 2021 में रिलीज हुई थी। ये फिल्म काफी सुपरहिट रही थी। फिल्म में अल्लू अर्जुन के अभिनय, डायलॉग और सिग्नेचर स्टाइल को लोगों ने काफी पसंद किया था। इसके साथ ही सामंथा रुथ प्रभु के आइटम नंबर ने भी काफी सुर्खियां बटोरीं थी।

आमिर मालिक स्वतंत्र वीर सावरकर में निभाएंगे भगत सिंह का किरदार

रणदीप हुड्डा के निर्देशन में स्वतंत्र वीर सावरकर में ऐतिहासिक भूमिका में भगत सिंह का अगला पोर्ट्रेट करने की आमिर मलिक की आगामी भूमिका ने दर्शकों और प्रतिक्रियाओं के बीच उत्साह और जिज्ञासा को जागृत किया है. भगत सिंह का यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक चित्रण उनकी अभिनय कुशलता की प्रतिष्ठा और गहराई का प्रमाण होने की उम्मीद है. अपने पेशेवर उपलब्धियों के अलावा, आमिर अपने मूल के संवासी हैं और वह अपने जन्मस्थान इलाहाबाद से प्रेरणा लेते रहते हैं. इलाहाबाद की गलियों से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय थिएटरों के मंचों तक की उनकी यात्रा उनकी प्रदर्शन कला के प्रति उनकी अडिग प्रेम और प्रतिष्ठित उत्कृष्टता की एक प्रतिष्ठा है.

जैसे ही आमिर मालिक थिएटर की दुनिया में अपना मार्ग खोजते रहते हैं, उनकी यात्रा आगे बढ़ती रहती है. यहां तक कि उनकी यात्रा आगामी कलाकारों के लिए प्रेरणा के रूप में काम करती है, हमें याद दिलाते हुए कि प्रतिभा, समर्पण और सहनशीलता के साथ, सपने सच में हकीकत में बदले जा सकते हैं.

कंगुवा में भी बॉबी देओल एक खूंखार विलेन के रोल में नजर आएंगे

साउथ सिनेमा की कंगुवा इस साल की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है। इस फिल्म में सुपरस्टार सूर्या नजर आने वाले हैं। वहीं फिल्म में बॉबी देओल विलेन का रोल करने वाले हैं। पिछले साल उन्होंने फिल्म एनिमल में अबरार का रोल कर हर किसी को चौंका दिया था। कंगुवा में भी बॉबी देओल एक खूंखार विलेन के रोल में नजर आएंगे। अब लंबे इंतजार के बाद कंगुवा का टीजर रिलीज कर दिया गया है। जैसा कि उम्मीद की जा रही थी फिल्म का टीजर बेहद शानदार है। कलाकारों का एक्शन अंदाज किसी का भी दिल जीत लेगा। इतना ही नहीं कंगुवा की ओटीटी रिलीज की भी घोषणा हो चुकी है। सूर्या की यह फिल्म अमेजन प्राइम वीडियो पर रिलीज होगी। मंगलवार को अपने एक खास कार्यक्रम में ओटीटी प्लेटफॉर्म ने कंगुवा की रिलीज की घोषणा की है। कंगुवा में 500 साल पुरानी कहानी देखने को मिलेगी जो 2023 में खत्म होती है। बात करें फिल्म के टीजर की तो इसमें बॉबी देओल और सूर्या दोनों का खूंखार अंदाज देखते ही बन रहा है। कंगुवा फिल्म को जिस तरह पर बनाया जा रहा है। उसके बाद फिल्म के बजट को लेकर कई तरह के कयास लगाए जा रहे थे। लेकिन अब सूत्रों की मानें तो फिल्म का बजट लगभग 300 करोड़ रुपये बताया जा रहा है। शिव निर्देशित इस फिल्म में जबरदस्त टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया गया है। जिस तरह का माहौल बनाया गया है, वह भी कमाल का है। फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी है। फिल्म की शूटिंग को लगभग दो साल यानी 730 में अंजाम दिया गया है। कंगुवा में साउथ के सिंघम सूर्या इसमें लीड रोल में नजर आएंगे। वह फिल्म में खतरनाक अवतार में नजर आ रहे हैं। वहीं सूर्या से टक्कर लेने हुए बॉलीवुड एक्टर और एनिमल के अबरार यानी बॉबी देओल को देखा जाएगा। वह फिल्म में उधिरन का किरदार निभा रहे हैं। इस तरह यह टक्कर काफी दिलचस्प नजर आने वाली है। कंगुवा की हीरोइन कोई और नहीं बॉलीवुड एक्ट्रेस दिशा पाटनी है। दिशा पाटनी को फिल्म में अनदेखे अवतार में देखा जा सकेगा।

मुकेश खन्ना रणवीर को शक्तिमान के रूप में नहीं करेंगे कास्ट

दिग्गज अभिनेता मुकेश खन्ना ने एक यूट्यूब वीडियो और एक इंस्टाग्राम पोस्ट साझा किया है, जहां उन्होंने रणवीर सिंह को शक्तिमान के रूप में कास्ट किए जाने की खबरों का खंडन किया है। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपनी और रणवीर सिंह की एक कोलाज तस्वीर साझा की। अभिनेता ने अपने पोस्ट को कैप्शन दिया, 'पूरा सोशल मीडिया महीनों से अफवाह है कि भरा पड़ा था कि रणवीर करेगा शक्तिमान। और हर कोई नाराज़ था इसे लेकर। मैं चुप रहा। लेकिन जब चैनलों ने भी एलान करना शुरू कर दिया कि रणवीर साइन हो गया है तो मुझे मुंह खोलना पड़ा और मैंने बोल दिया कि ऐसी इमेज वाला व्यक्ति कितना भी बड़ा स्टार क्यों ना हो शक्तिमान नहीं बन सकता। मैंने अपना पैर नीचे रख दिया है। अब आगे आगे देखिये होता है क्या? सोशल मीडिया पर ऐसी अफवाहें हैं कि रणवीर सिंह शक्तिमान का किरदार निभाएंगे और हर कोई इस बात से नाराज था। मैं चुप रहा। लेकिन जब चैनलों ने घोषणा करना शुरू कर दिया कि रणवीर को साइन कर लिया गया है, तो मुझे बोलना पड़ा। और मैंने कहा है कि नहीं चाहे वह कितना भी बड़ा स्टार क्यों न हो, ऐसी छवि वाला व्यक्ति कभी शक्तिमान नहीं बन सकता। मैंने अपना कदम नीचे रख दिया है। अब देखते हैं आगे क्या होता है)। मुकेश ने अपने यूट्यूब चैनल पर एक वीडियो भी पोस्ट किया जिसमें उन्होंने पेपर मैगजीन के लिए रणवीर के न्यूड फोटोशूट की आलोचना की। अभिनेता की आलोचना करते हुए मुकेश ने कहा कि ऐसी हरकतें भारतीय संस्कृति के खिलाफ हैं। उन्होंने रणवीर पर निशाना साधते हुए कहा, अगर वह नग्नता में सहज महसूस करते हैं तो उन्हें ऐसे देशों में जाना चाहिए जहां वह हर तीसरे सीन में न्यूड सीन दे सकें। दिग्गज अभिनेता ने यह भी कहा, 'मैंने निर्माताओं से कहा है कि आपकी प्रतिस्पर्धा स्पाइडर-मैन, बैटमैन, कैप्टन प्लैनेट से नहीं है। शक्तिमान सिर्फ सुपरहीरो ही नहीं, सुपर टीचर भी बन गया है। अब किरदार निभाने वाले अभिनेता में यह गुण होना चाहिए कि जब वह बोलेगा तो लोग सुनेंगे। बड़े-बड़े कलाकार हैं, लेकिन उनकी छवि बीच में आ जाती है। बता दें कि मुकेश खन्ना को भारत के पहले सुपरहीरो शक्तिमान की ऑन-स्क्रीन भूमिका के लिए जाना जाता है। लोगों के सुपरहीरो पर एक बड़े-से-बड़े मोशन पिक्चर की घोषणा के बाद, प्रशंसक इस बात को लेकर उत्साहित थे कि नायक की भूमिका कौन निभाएगा।

रोमन-थीम वाली होली पार्टी में दमक रही ईशा, श्लोका और राधिका

अंबानी खानदान की होने वाली बहू राधिका मर्चेंट, बेटी ईशा अंबानी, बहू श्लोका अंबानी ने एंटीलिया में ईशा अंबानी द्वारा आयोजित सितारों से सजी रोमन-थीम वाली होली पार्टी की शोभा बढ़ाई। लक्ज़री ब्रांड बुलगारी के सहयोग से आयोजित इस असाधारण कार्यक्रम में प्रियंका चोपड़ा सहित ग्लैमर जगत के कई प्रमुख नाम शामिल हुए। सुंदरता बिखेरते हुए, राधिका ने खुद को प्रतिष्ठित फैशन ब्रांड शिआपरेल्ली के शानदार क्रीम रंग के साटन ऑफ-शोल्डर गाउन से सजाया। जल्द ही बनने वाली अंबानी बहू अपने शानदार फैशन सेंस के लिए जानी जाती हैं और उन्होंने इस कार्यक्रम के लिए शिआपरेल्ली लॉन्ग स्टूप बस्टियर ड्रेस पहनी थी। उन्होंने अपने पहनावे को डबल-लेयर्ड पन्ना हार, मैचिंग इयररिंग्स और हीरे की अंगूठियों से सजाया। इस बीच, ईशा अंबानी को एक स्ट्रैपलेस बनारसी गाउन में देख कर आंखें चकाचौंध हो गईं, जिसे बॉडी-हगिंग बस्टियर और जीवंत पैनल वर्क के साथ उत्कृष्ट रूप से तैयार किया गया था। पारंपरिक बनारसी कपड़े से बने गाउन का निचला हिस्सा खूबसूरती से लहरा रहा था, जिससे उनके पहनावे में राजसी वैभव का स्पर्श जुड़ गया।